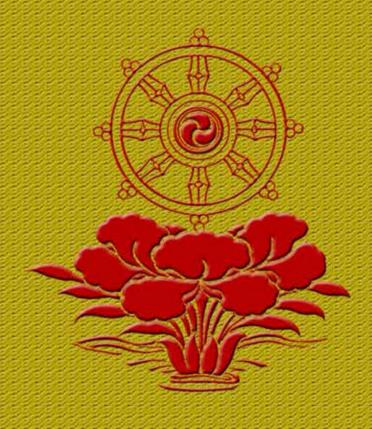


ञ्चॅ्राळ १



# *न*तुयानाभैनाळेनानमेना



য়ৼ৾৾ঀ৾৽৽৽য়৾ঀয়ৢড়৽৽৽ঀয়ৢঀ



#### न्गार :ळवा

अर्केन्'सर'वर्हेन्'छेर'वस्राधर'न्य'वरुववा	1
सळ्व'र्नेव'र्रर'र्न्वेश'र्न्नेव'र्न	2
মাধ্যমান্যনান্ত্র না নির্দেশ নান্ত্র কা	
র্ষ্থির বার্যার ইবার্যার সূত্রী ব্যার প্রবাধার সূত্র বা	
गहिरायात्दरदेवरदेर्यायात्वहेरा	
र्श्व भी कें न	16
८.क्षेत्र.बी.क्ष्र्.चा	24
ম'র্ম্ম'র্ম্ম'র্ম্ম্র্র্ম্ম্র্র্ম্ম	
क्ष्यायास्याम्यो कुषाची सूयायास्य नाम्य चित्रायया	
यिष्ठेश्रासाव्याच्यायात्रीया	
ন্ন'ম'র্মম'শ্রি'বৃত্তী'ন	
মু'য়য়'বয়ৢয়'য়য়',	
गशुस्रामागुरामायासक्वाव्याङ्क्ष्रियामित्रेस्यामान्।	
क्षेत्राश्चि सामक्षेत्र हैं ग्राया ग्री क्षेत्र मार्चेत मार ग्री न मारे विवास मारे	
বাপ্তম'ন'ম হ্বা'নী'র্ক্ত'বা'ন'বাইপা	

#### न्ग्रम:ळ्या

रुशःमें निर्दे	55
বাব্যার্থা:ব্রা:বাহ্নি:বা	
র্ছবাদারী দ্বর্মাদান ব্রুদান বি প্রবর্মান স্কৃত্বা	63
বাব্যান্ত্র্যান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্	63
মূ'র্বাশ'নপ্র'মা	
ই্শানতশাস্ত্রান্ন্	80
यवायाः मुन्दायम् स्वर् । श्रीः अस्वर् १हेर्।	
র্ষুমানার্সনার্স্রান্ত্রনামান্তনামান্তনামান্ত্রনামান্ত্রনামান্ত্রনামান্তনামান্ত্রনাম	
	130
रयः हुः चुदः यदेः यवि । वुः यदेः भ्रयमः दमः दचुदः य।	159
नक्ष्रन'म'वनुष'र्क्रम'न्र'सूर'न'से'सूदे'श्चे 'र्नेबा	169
चस्रायदे है।	200
ম'স্ত্রির'শ্বর'গ্রী'শ্বম'শ।	214
র্থুবা,বারু ই.বের,বারা	
ह्रव र् क्षु निवेष्य या	

#### न्गार :ळवा

ञ्चना सदे से ।	272
दर्चेत्र'मदे'ख्रूग्'स्रा	273
नेग्'रावे'क्ष्र्ग्'या	280
द्विया के या क्षु प्रति क्षुया आ	288
নয়ৢ৾য়'য়য়ৢয়'য়য়ৢয়ৢয়ৢয়ৢয়ৢয়ৢয়ৢয়ৢ	291
गहेव हो र पंदे खूगा या	293
निर्म् निर्म	300
निरकेत् भी भूगा था	308
गिवि'सेट्'ग्रे'स्या'सा	310
ননা.হ্ম.গ্রী.ঈ্না.পা	315
	316
	326
20.2	327
	328
~~ ~ ~ ~ ~	329

य म्हाराज्य श्रुत्र विद्रास्त्र विद्रास्त्र विद्रास्त्र विद्रा क्षेत्र विद्रास्त्र विद्र विद्रास्त्र विद्रास्त विद्रास्त्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त विद्रास्त विद्र विद्रास्त वि

शेर-शूर-द्यर-वह्य-द्युद्य-वर्शेद-द्ययःग्रीश

รุ่มเลี้มเลิงเหลี่มหมังและรุ่มโพละรุ่ม สู่รุ่มหนังเลี้ม รุ่มเลี้มาสุมมาสังเล่าสามารถ รามเลาสังเลิงเล่าสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสารถ รามารถ รามา ७७। विवासम्मास्य म्यास्य प्रति स्थान्य स्थान्

## सर्केन् प्रमानहेन् केन नहस्य प्रमान्य प्रमान

२० विन्नास्य प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य प्रमास्य स्थान स्था

स्वानहित्याश्चेत्रः त्वान्तः त्वान्तः स्वानहित्याः स्वानहित्याः स्वानहित्याः स्वानहित्याः स्वान्तः स्

विर्यस्त्रवाश्यक्षाक्षेत्राक्षेत्रस्त्रिं स्वर्यस्य स्वर्

इत्रिक्ष्याय्याय्य विद्याय्य विद्याय विद्या

#### सळ्त दें त दूर द्वीं स द्वे य द्वा

मल्रम्भः इस्याः है 'क्ष्रम्म निव्याः मिल्रम्म निव्याः मिल्रम्भः है 'क्ष्रम्म निव्याः मिल्रम्म निव्याः मिल्रम निव्याः मिल्याः मिल्रम निव्याः मिल्याः मिल्रम निव्याः मिल्रम निव्याः मिल्रम निव्याः मिल्रम निव्याः मिल्यम निव्याः मिल्यम निव्याः मिल्यम निव्याः मिल्यम निव्याः मिल

न्दर्भित्ते। नश्चन्तर्धेश्वरत्वेश्वरत

न्दर्सित्ते। श्रॅम्पन्द्र्वाविम्पन्य श्री । हिन्द्रिमित्ते विभाविम्पन्ते । हिन्द्रिमित्ते । हिन्द्रिमित्ते

त्रभुराधीः स्वाप्याप्य वरा सुराप्य प्रमानिका प्रमानिका वर्षे वर्ष

नश्चनर्देश्वान्यसम्बद्धान्यस्थ्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्तरम्भेन्यस्थान्तर्भान्तरम्भेन्तरम्

#### गशुस्रामान्द्रामी देवाया महिला

नक्षेत्रभर्ते त्यान्त्र्वा न्या प्रत्या न्या व्या प्रत्या क्षेत्र त्या क्या क्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क

र्दे निर्मेश श्रीम्थ के श्रीम्य निर्मेश निर्म

न्दःर्रे है। भूगाया छुंत्य विस्र राग्ने नसून या है नहें न् गुन्दा वदे त्या नहेव वर्ष रहेव विस्र ने हें ग्राय पर ने या पर पर हेव वर्ष ख्रा बेर्गी सुरावर्षार्वेनाम हेरार्गे अपरा हैरार्गे अपर्वे अपरायास्वा यथा नर्गे अन्य नर्भेष न्वें अःश्वायः के अः नविः से किया यानः यो अः हे खूनः नश्रुवः वे वा हे अः सनः वर्त्वरायाने यायया हेराद्रों यादरा द्वाया विस्रयाने यायया वहेंदा गुर्देश शुःनसूरुत्यः नर्वे राधः न्दः वर्त्रेयः नः वे स्वारायः नसूरु है। सुः न्द्रः ययः वन्यायावर्षेनायवे वन्या दुवा विस्या हैन्या सम्। जुःनवे छे मान् समें वि नश्रुव सदे श्रिम् में विंत्व निष्या विवासित है। व्युम् वी प्रियोग निष्या विवासित विवास वा ने जुर वी पर्वेष न युन है। नह्न नर्देश पर्दे पान हेन न राष्ट्रवा प दुवाविस्रयाग्री नक्ष्मनामाहिनासामावज्ञूमा ने हिनासाहस्रास्य स्थान् स्थान यायमासुन्दरायमायद्भमायायभ्यायदेशस्य । पायाने दे से प्रम्

धःरवःष्ययःप्रत्यःप्रत्यः या श्रुकः या श् द्याः या या प्रत्याः प्रत्याः या श्रुकः या श्र

वनशन्दरवनशायशा तुरानदेशसळ दाहे दाग्री पद्मेषा नाधी दाहे। कु न्दर वर्ष्यभार्यदेश्यस्वरंदेर् हे अर्ग्यायदेश्यः स्वीतार्ये विश्वरम् सुर्यः सी विवयः हे नः देवा नरार्गः क्षरावास्तराहर हैं या प्रति से निवास से निवास या से निवास स वर्त्यान्त्रेत्रात् वसूत्रावर्षेशाह्यान्वासेत्रायरावर्त्यारारे वित्वा स्टान्य वर्जुर-वर्श्वेत्र-ग्रदः क्वेंत्र-विदेशेंत्र-क्षेत्र-क्षेत्र-विदेश-धॅर्यं स्टेर ही सर्हे न्या रासे न्या रासे प्रति रास प्रति हो। स्त्री रास रास नदे-न्वें अन्यन्त्। अर्ने र-नश्रुअन्यन्वाद-नदे-नश्रुअन्यन्तदे-न्वीयायाधिन्यदेधिम् ह्यायान्यस्य इत्वोयानुः साहित्यायाः हैंग्यायदे द्वेंयायद्या वडया हेयावडया सुः सहिंग्यायदे न्वीयायान्ता उत्यव्वान्यास्वायाम्यायान्त्रायान्ता क्षेत्रा गवर ग्री अर्देर गवर नश्रद रास हैग्र अर्दे ग्र अर्दे प्रवेश परि यवे श्रेम

र्ट्स् ग्रीय है। श्रिट्र ग्रीविट्ट स्रित्र के ग्रीय प्राप्त विट्ट स्रित्र स्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र

गहेशासाधारा गुना है। खुरार् ह्रुनायते हेशा शुः ह्रुनाया रार्टा गुन् चदः हे अः शुः नाव ८ नः ५ नावा रावे हे अः शुः ५ वावा रा न स्व रा से वाका क्रिंश्राचात्रुष्ट्रा क्षुत्रायाद्राचात्रद्राहेश्राश्राद्रवावायाद्राद्रा द्रवावा वा वर्ने र वार वार्डे के नवे क्षेत्र वर्ष न सूत्र प्रकान ने स्वा ए हैं वार पवे हिरा न्धेरावाखुरानु न्दार्थेराञ्चवारया हु व्युद्धायरायाव्या ने व्याहेशान्ध्येयात्रा वयायः विया ग्रुटः यथा भ्रेथः त्रवः र्यः त्रुटः यः यगायाः याहेशः भ्रेः यार्डेः के'नशरदेर'नर्गेष'न'न्रम्'र्द्युर्रान'नेबिनर्हे। ।रुर'सन्नुन'रु'स' हैंग्रथःसहेंग्रथःसदेःद्र्येश्वःसध्येदःद्री खुदःदुःकेश्वःवःवाविःग्रवेग्वादेवः ८८ श्रु र तथा गुरुषा गुरा वर्षे र श्रु र पश्रव पथा ग्रि ग्रावव ५८ श्रु र नःलरःह्रेयाश्वास्त्रयम् निर्मा निर्मान्त्रयः निर्मान्त्रयः स्वास्त्रयः नक्ष्मनायाक्ष्मभायम् सानुभायम् स्री क्षम्भायम् स्री न्यायि हिना यदे किं नक्षेत्रत्वेश नक्ष्रनायास्यास्यानासी क्रम्भायमार्श्वे न्यान्मासुरायमा वर्दराश्चेरावस्वायम्। याचिवायरायेवायार्शेवायादरार्श्चेरावायरार्हेवाया यःक्षःचुर्वे ।

क्ष्मानावन में भार्त्न नावन नश्चन माश्चित्र मिन्यामितः नर्गे स्वाप्त निष्ठ स्वाप्त मिन्यामितः न्या स्वाप्त न्याप्त स्वाप्त मिन्यामितः स्वाप्त स्वा

विवाहें वा निर्मान स्वाहित निर्मा स्वाहित निर्मा से वा निर्म से वा निर्म

र्यः क्षेत्रा श्वरः द्वरः स्वरः क्षेत्रः स्वरः स्व स्वरः स्

न्वीं श्रायत्रीयारमायार्थे न्याये स्वीं श्रायत्रीयाय्ये ।

न्वीं श्रायत्रीयारमायार्थे न्याये स्वीं श्रायत्रीयाय्ये ।

ने विं श्रायत्रीयारमायार्थे न्याये स्वीं श्रायत्रीयाय्ये स्वीं स्वीं स्वीं श्रायत्रीयाय्ये स्वीं स्वीं स्वीं स्वीं श्रायत्रीयाय्ये स्वीं स्

क्षे तर्रीर्याक्ष्मार्म् वर्षे च्यान्त्र श्री स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान

वे 'र्चेन'मर'ग्रु'न'विं व'न बुद'श्रे। देश'मर'वेश'ग्रु'नवे 'श्रिद'मर'ग्री'क्षेन' दर'वर्जेल'नवे 'श्रीर'र्से।

देशन्यस्य प्राप्ति स्थान्य स्

त्रित्राणिवाते। श्रीत्राच्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यत्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

विस्तर्व स्थान्य विस्तर्य विद्य स्थान्य स्थान

र्श्वर-न-न-नुवन्ते। क्षे-ळंट-शःश्चेन्द्र-सःश्चेत्र-त्यःश्चेन्द्र-स्वन्तःश्चेन्द्र-स्वन्तःश्चेन्द्र-सःश्चेन्द्य-सःश्चेन्द्य-सःश्चेन्द्य-सःश्चेन्द्र-सःश्चेन्द्र-सःश्चेन्द्य-सः

न्वेन्द्रनोर्स्ट्रिंद्रम्या न्वेर्स्स्या न्वेर्स्यया न्वेर्न्स्य मा नश्रेव नव्या में स्थान स्थेन मुन्यो नश्रेव नव्या स्थान स् यिष्टेश शुः अरि: नार्वे : न्या शुरः नया श्री । वि हिया व रे सार्वे र व्यवदः नये हेवः ग्रम्भ व्याप्त निष्य स्थान है सार्थ सार्थ है दें विसार्थ में प्राप्त से स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स नकुर पेर ग्रम हरा शुनि विषेत्र है। द्यो ह्रिम स्य स्टि ह्या महरा यहिया न्नोॱर्ह्स्यः सन्दर्भा कुष्यः सः सदेः र्ह्स्यः सः ह्राः याचित्र न्नो । न्रे सहेतः सदिः र्बेसम्बन्धमार्डमायदेधिरहे। सळ्त्यूर्यस्य बेंसम्बन्धियास्य श्रेरावर्षे नवे भ्रेम दें न्यू स्थान मुख्य देश उत्तु न्यू न स्थान है मा गर्डिन र्सेन्य र्से म्यान्य व्या सिन्य मान्य प्रत्येय प्राचित्र व्या र्श्रेया परिन् र्श्वेद प्राय्या श्राया मार्थ प्राया मार्थ मार्थ प्राया मार्थ मार्थ प्राया मार्थ मार्थ प्राया मार्थ मार्थ प्राया मार्थ मार्थ प्राया मार्थ मार्य मार्थ मा इशम्बेनाधेन न्त्रमे हिंदाने नक्ष्म स्थान स्थान स्थान से स्थान स्थान शे.रुट्यरव्युरर्से । कुट्याडेयायर्सेयायार्डेट्रार्स्ट्रेयायर्स्याय ८८.स.चाश्रुस.कुर्या.कर.लूर.सर.तयाय.जू.खे.या श्राय्याय.हे। श्री.स.सरसा

र्ने श्वेट निवेश्येयय पर पर्ने द्राया सुर न्या वाट निवासी सुर पर श्वेपा गर्डेट-र्श्नेट-नदे-शेसयायादेशासम्बाद्याम्याम्याम्याम्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्यास्यान्य दे। शेस्रशास्त्रस्यशादी द्वाराम् नियापित कुट्टे में नाधीव पित हिम र्रे। इश्यावेषाधेष्यान्यविषाखेषाय्यास्यावेषाःविषाञ्चाक्षात्रीयाः गर्भरात्रसार्येगातातुसारार्धेगासीपिसारापित्रते। । प्रवरात् ग्रुसा वेशपदिः भूरारेत्। अवावेशपरेत्रात्यायात्र्वाक्षे नग्राकेशपदिः यशाधुन देर र् पर्के न र्र अधुन पर नहें र पर गुरें । वेश पा क्षु गु आ वानगाः भी यानाः वाचे हिन्दा सुन्तान् हेन्द्रयान हें या वाचे या वियाना सुन नु:अ:ब:दे:दर्भ:वेर्भ:यदे:क्वेना:बद:य:न्हेंद:प:क्ष:नु:दर। दे:अ:बना:हु: र्शें अ'हे ' वस्र अ' उद्दे स्यायर ' य उद्दे र अ' वे अ' अ' व दे ' स' वया ' स' त्या दे दि ' स' ५८। अदि:हेशःशुःनभूदःभदेः५न८:५:गुर्दे:वेशःषः वर्नन८:५:गुःनःयः नर्हेन्यक्षुनुः खेन्यक्षायने ने ननरन्नु न्याने निया सरावर्द्धरायदे द्धंयाविस्रकारी विकासदे विदासराती क्षेत्राद्दा विवास स्रो वर्त्रामस्या उर्वत्रामात्रातेया से सार्त्यम् स्राम्या वनायानरादी रुपानरार्रे विषामवे नरामी सर्वे न्यस्य रुपानरा वर्त्वुद्रः नवे रहुषः विस्रशः ग्रीः द्रवदः त्र् ग्रुशः हे रवन्द्रः वर्षः विश्वः द्रसः नरुश्यादि । ने सूरावासिके के नामा प्रमानिक निष्या । ने सूरावासिक स्थानिक स्थान

स्वास्त्रवेत्वः क्ष्याविष्ठभाक्षेत्वा विष्ठभाक्षेत्रवेत्वः स्वाहेत्वः क्ष्याविष्ठभाक्षेत्वः विष्ठः विष्ठः

 विस्तर्भा ।

विस्तर्भा ।

विस्तर्भा ।

विस्तर्भा ।

विस्तर्भा विस

नश्रुव नर्डे शः ईं शः प्रवे विष्य महस्य प्रस्ति । विश्व प्राप्त प्रके शे हो न्य प्राप्त प्रके प्राप्त प्रके शे हो न्य प्राप्त प्राप्त प्रके प्राप्त प्रके शे हो न्य प्राप्त प्राप्त प्रके प्रके प्राप्त प्रके प्राप्त प्रके प्राप्त प्रके प्रके

# 

श्र्रें न्या से हिन्दी नित्र में त्या निष्ठ मार्थ निष्ठ में निष्ठ

## र्थेव श्री कें या

द्रियान्ययान्तर्भुत्रः हें न्यायाभ्यत्या द्रास्तर्भ्याम्य द्रियास्य स्वाप्त स्वापत स्वापत

प्रतःश्वास्त्र । प्रत्यास्त्र । प्रत्यास्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र हिन्द स्त्र स्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र स्त्र हिन्द्र स्त्र स्त्र

न्दः में ही शुव्यानद्वार हो नाह्न स्वी नाह्न स्वी के नाव्या नहीं के नाव्या नहीं नाह्न स्वी के नाव्या नहीं नाह्य स्वी के नाह्य स्वा के नाह्य स्वा के नाह्य स्वा के नाह्य स्वा के नाह्य स्व के नाह्

ब्रिंस'म'र्देन'म'रेदि'क'स्यां शामिन'मम'रे। न'सूम'र्मी'र्के'गा'य' क्रिंश में अप्याश्रुय यापद में अप्रीद मी अप्या स्वयं या में स्वरं प्राप्त में अप्या है। रयः हुः हुरः वदेः कः खुना अः दर्भे रविष् र् हें ना अः धरः हुआ रक्षेरः हीः कें गाया सुगाळं दासरासें द्वीं या ग्रारायदे रादे समासे से प्राप्त स्वाराय वर्वामी म्वरमेशाया पवा यमा खूशायव माशुश्रामश्रुशा स्वमा वळवा है। र्श्वेर्प्यम्भवाभेर्भ्यम्भवाभेर्प्यार्थेषार्थेम् वर्ष्यम् वर्ष्यायम् वयः संस्थान्यः स्टासं दर्गे या से प्रमेश सिन् प्रमेश सिन प्रमेश सिन् प्रमेश सिन् प्रमेश सिन् प्रमेश सिन् प्रमेश सिन् प्रमेश सिन् प्रमेश सिन प्र ब्रुवासदेख्याधेवास्या धुवाद्यो वर्त्वायानद्यास्य हुत्युदायाद्र नश्चेत्रायराष्ट्रेग्रयायरासह्तात्राम्यावेत्यावेत्यान्याय स्वाप्तात्राम्या यश हो दारा यह सुराव राषा रें या राष्ट्री वर्षा था से वर्षे वा या राष्ट्रिद ग्रीभागार्थेयानायनेनसामवे ।

र्श्व स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य

क्षेत्राचा विक्रित्रस्यात् । विश्वेत्रस्य विश्वास्य विश्वेत् स्वास्य विश्वेत् स्वास्य विश्वेत् स्वास्य विश्वेत स्वास्य स्वास्य विश्वेत स्वास्य स्वास्

देशक्रक्तिं ना नाव्य प्येय प्रमान सूय प्राची न विद्या सना पर दे हु तु वे र्श्व श्री के पा प्येव श्री प्रस्त वे श्रम के स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म नु विश्वासा सर्वे ता स्वे ती स्वेत स्वर्थ के वा नावत स्वर स्वर स्वर स्वर विश्वाचेरार्से । पायाने र्श्वेव र्र्केपान्दान स्थरामी र्र्केषान्दामाने श्वास्त्रामा र्देव से द स्वरा दे विषेश याद र दिवा यसूव स्था के वा संदे से र है। र्बेव केंग ने श ग्रम्य गुम्य में व केंग श न क्षुत क्षाय प्रमा केंग श महिराग्यायम्बर्ग्य स्वर्षायाद्याद्या चुत्या चुत्या देश्या वर्ष्या महिरा प्रदेश चुरा है। र्देव ग्री मार वमा कुर र्वा स्थान सूत राज्य रेस ग्री अर न सूत से र वे अर निरायात्वः श्रेति से दारायादा स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः द्या नर्शे द वस्र अन्य स्थान स्यान स्थान स क्षेत्रे ने क्षेत्र्ये कुन्न ना रासेन प्रमान क्षेत्र की कि ना नासुन्य प्रमासी कि वर्त्रःश्चित्रः व्याप्तात्रः वर्ष्ट्रः वर्षेत्रः वर्षेत्

गहिरामास्रवदानउदारादी विचित्रादारी क्रिंदामी केंगान इप्पेंदा या देवे वदावया सदा गुरा ह्रीं नादार्य का को दाया न हो नाया की व यरयामुयायार्मेद्रापदेर्त्यासुः मुद्राविदा स्ट्रंस् विवायदयामुयादयासुः द्यायशादन्यायदे वर्षः तुराय। दे त्याहे या द्यायायावाय विवा हुरा वयाग्रेयानविदे कें गायदे ग्रूटारें। । गावव इसया सरस मुरावया देरा र्रे अर्थे व प्राव हुर है। दे द्वा ग्राम्य हुर के वा अहूर वी वर द्वार नशर्भेत् ग्री कें ना वेश ग्रु वेटा दाक्षर कें ना वे सरस मुराद्य स्वार्थ द्वा ग्रामान्युः प्रिक्षान्य तुरा बेरार्से । दे वि से प्यन्ते । युराप्ति न्दरासर्दे वर्योवाः इस्रयाग्रीयान्येवानविदेः कें नावदे हिन् क्रें ना क्रिन्यास्य नि धिरप्रा अर्थेम् नश्चेत्रपराहेषाश्रापरादेशायात्त्रश्रापान्यकृति । दे प्रावितः ग्नेग्रथं प्राप्तः स्टा स्टार्ट्य स्टार्थ्य अर्थः क्रुर्यः वे र्श्वेतः द्वेतः येतः यद्येतः यर ह्रेंग्र याप्टा थ्रें स्रम्य या भेर्या हर र् कुर यथ पर हें के व्यत्राव्दिन् श्रुद्रः केत्राचे स्ट्रेत्यम् । प्रमान्या स्ट्राय्या स्ट्रायः । के प्रदायम् । वकरःभ्रवःदेशःवशःश्रदः नश्रवः धरादाः। द्योः श्रूदः र्ख्यः विवाः देशः

गश्रम्यामयान्या भुनयासुःवर्त्ती नवे क्वीं गश्रम ग्रीया ग्रीया मुर्या स्वयः वर्षेत्रत्रावर्षात्रावहेत्रामान्द्राकेत्रत्वे वर्त्त्रावराम् ध्रवाद्र्यस्यः न दुःदर्भःसदसः ने : तथः स्वाःसः तथः न् । त्रुः सदेः क्रिंशः । तथः त्रुन्यः । स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः । न्ना संक्रियान्ना न्नोप्त्त्वाक्षेपाहेरायशानक्षेत्रायमः**हे**नारायदे वेरा न्दा सहिन्द्रमेयान्। हो ज्ञान मुद्धान वर्षान समस्य सम्मान नदुशनभ्रेत्रपरार्हेग्यार्श्वेत्रप्राचेर्न्यन्यस्थित्र्येत्र्यायार्थः भ्रुःश्चेत्राते। रटा हुट वी अदि अद्या कु या दूट रहा यह या कु या विश्व स्थि। । देया यह वह्रमाम्यस्ते हेत्रः ध्रः ते स्ययः स्ति । प्रमे ह्यू मः स्ति मः हे या द्वा प्रस्ति । च्यायायायायार्यवायायात्र्ययार्थे। द्वितायराप्यात्रात्रात्र्यात्र्यात्रे दिन् सुर्या केव पर्दे । दे प्रयासहैय प्रयास दे योग्या श्रुव दे । व्यासदे के याप्य व्यास्य मश्रे भ्रे प्राचे प्राचे प्राचे के स्था के स्थ वह्रवायान्विष्यायात्र्यादेशक्षेत्राच्याविष्यात्री । व द्वेते स्विष्या ग्रीयादी र नुत्रा ग्री स्थया र्थे । श्रुन्या शुः वर्चे र न यदा ग्रीया न स्था र य वे.के.चबट.वैप.बेद.क्र्याय.ग्रीय.चक्षेय.तर.क्र्याय.तर्याय.वीय.त.स्यय.प्री दे द्यायी से से बर नदे से सम्बद्ध यादे यादे द से बन्द सम्बद्ध पर देया हो द या रवाख्यायायाधेवर्वे वेयाव्युरयाया देप्वापुरये स्रेवपर हैवयाया नड्र-र्स्निन्द्र-द्राक्ष्र-साम्चे नदे मे स्वित स्व र्कें गां भेत्र सर द्याय हे र्के अ श्रुत्र अ द हुर र्कें ग्राय र व हुर द्वी रहें या अ र्शेवार्थान्यस्थान्त्रे स्थान्त्र स्थान्य प्रति स्थान्य स्थान् षे ने अ विंद्र दु कु दु पाय देवा हो दु ग्या हो दु वे अ प्रदे हो या के वा प्ये द ययर से प्यत्र प्रति भुत्र प्रति । सुन्य पर्मे प्यया सामुर प्रत्य प्रति । सुन्य पर्मे प्रयास साम् र्बेर्याश्रुद्याःविद्या देयाःवृत्रायाः द्वायाः व्याद्वाद्याः देवाः वेदायाः विद्यायाः ८.क्षेत्र.क्र्.योषुःचर.री.चैर.योशेरश्रातालर.क्षेट्र.य.लुप.श्रंशाल्या । हराया यःव्यायःवेयःप्रसर्वेदःययःभ्रेयःपःभ्रे इसःप्रतेदःप्रमेयःप्रम् सर्वेदः नदेख्या क्रे अप्रथान्ने क्रिंट हेट यान में दाया ने अनु न दे अर्थेट नदेख्या भ्रेरामरान्ते भ्रेर्यो क्रियाम हिर्जेन मित्र क्रियाम भ्रे क्रियाम मित्र मिरान्ते र्श्वेट्राची व्ययादिन्द्रिन्द्राच उर्याया र्षेत्राची र्श्वेट्राची रिट्रें या रिट्रें वा या धरावश्रेवामानेतायावर्गेताने वेशान्यायाया क्षेत्राची वेशान्या कुषास्र श्री देश.तर.वर्षेत्र.तश्चीश.चि.य.वे.वस्त्रीश.यह.तश्चात्र.वर्षे. वेशःश्री।

 है। र्वेश्वर्यक्षित्वर्यः होन्यदे हे शर्श्वर्यक्षित्वर्यः हें न्याः वित्राचित्वर्यः होन्यदे हे शर्श्वर्यः होन्यदे हे शर्श्वर्यः होन्यदे होन्य

र्षेत्रकेंग्'नु'सर्थेन्ने। यहस्यक्त्र्यंग्रेस्यन्तियः न्यः वित्रः वित्य

## नःक्ष्रमःश्चीःकेंग

महिरामानाक्ष्मानाक्ष्मानाक्ष्मा सार्विनामानाक्ष्मा सार्विनामानाक्ष्मा सार्विनामानाक्ष्मा सार्विनामानाक्ष्मा स्व स्वरूप्ति से क्षित्रस्यामानाक्ष्मा स्वरूप्ति स्वरूप्त

## अर्चेन'यर्चेन'यर'तेन्'यदे'वनश्

## क्षेत्राराष्ट्रायान्वो कुषाची श्रृयायार्वे नायम चिन्यये वनया

त्रः सं त्या विश्व श्रिष्ठ श्रिष्ठ श्रिष्ठ श्रिष्ठ विष्ठ श्रिष्ठ श्रि

न्द्रिन्द्रें न्वायि द्वा विश्व विष

 यासिवरम्भिन्द्रियान्यान् अस्तर्भे नहेन्यायान् सूर्के नामाहे सामेन्स्न क्रियाया ग्री क्रियाया क्री दे रिया मान्य या प्राया की क्री दिया वितर में त्याया महेन सम् र्श्वासामान्त्रत्या भी भी ना भी ने ने निर्मा स्वापित से हिन से न रायाधरारें विश्वान्यस्य स्था । र्या हुरास्य सें या नहेत् सर नश्रव नश्यान्त्री रहेल प्यान्य स्थानिक से त्यानिक से न्यानिक से न्यो रहेल रही रहें स राधरास्वानुरायानहेवार्यये भ्रिम् इत्यस्त्वे स्वान्स्यान्या र्श्वेश्वराद्धे र्या श्रुद्धायात्र में विष्य्य विष्य विषय श्चित्रदर्भत्यमान्द्रमासुःवर्षेत्रायदेः धुरार्दे । विवादः विवात्यः विभासेदः न्द्रभाशुः अःश्रें भारान्ते स्वान्तु दानी अविदारी वित्यानश्रेद हिन्या शरीः यावर में हो दायी या पर रहा या दाया से या पर से वा से या स यान्तरमें विश्वास्था केंगा सदी देवा दे। परे प्यारा यान्तर स्वेते देश देश प्येत मी। अपिर रेवि रेश्वार स्वार के प्रतासिक स्वार के प्रतासिक स्वार के प्रतासिक स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के ग्री अपिव में ग्रीन निर्मेश सम्मान है।

 ग्रुअः मंत्रे। नरः कर्र्रार्ट्स क्षेत्रः स्वार्मे देश हे स्वर्रे अः मं क्षेत्रः वेना श्रम् नुःश्रिन् त्रक्षे नम् नुःश्रिम् नाया स्वीता निष्ठे निष न्नो न सुर वन्याय है नया द न्नो न स्ने द है न न न सुर ग्रु न सुर ग्रु न सुर है । वर्केंदेरवर्र्भुरवासर्वेश्वरावेर्वा सुवाने। द्वी सुवानी सुर्वा मि हे राद्यावरा हो दायाय दह्या प्रशासीया पाद्दा वश्रास्य वाद्वा स्वरे तुःनशःदयःनःत्रेदःसशःदःदगेः&्यःहेदःददः। खुशःदगःगेःश्वदःतुःनत्दः र्रे वस्य अरु नि श्रेन पर्के वे नम्नु श्रेन ना सर्वे अरु वे नि श्रेन् श्रेन वो न र्श्वेदःनश्चादान्वोःश्वेदःहेदःद्वाचीःश्चायाश्चायानश्चेदायर्थः स्वायायाश्चेत्रः र्वेन पर दी सादी साथी निष्ट्रे। नष्ट्रम् पायारे सावी सामान सुन्या परि हे सा धरादशुरावदे धेरा श्रामामेराधरामानुवावमा भ्रीपादी साधिवा है। कैंग्रास्यस्यसेन्ययंदेरहेराग्रुस्रस्यन्यन्ते विराद्या वर्षेया यर'द्रवो'चर्श्वेद'ग्री'र्श्वेद'यर'यर'यर' द्रवो'र्ख्य'ग्री'र्श्वेर्याय'यर'द्रवा' यर येत्र त्र रु र न हे र प्येत या रे न वेत्र रु र मो रु या ग्री हे या या ये र यर देवे ने या हो दार हिया पार्या द्वारा या है वा या हो वा या हो वा या स्थान नश्चित्रत्। नश्चेत्रः सर्हेन्य अल्वे अन्तश्चेत्रः नश्चेत्रः सर्वे या अल्वे अः

नद्यी हे नर विराधित नर्से वासर है वास है या सामित है से वास निराधित है र र्रा । निर्वा निर्मे व श्री र्से सामा से नामा से नामा से सामा से निर्मा से सामा से सामा से सामा से सामा से साम ग्राम्पे केन्द्री वित्तान्यो नश्चेतानम्यो द्धाराया नश्चेतायम् हेवाया स्वी शुःहे सूर पहुना हे ता शुःर्रेना पदे प्रवर र्, हुराता वस्नेत पर हेना रा यदे श्चर्ने श्चर्य सार्वे दाया वहुना ग्रम् श्वर्णे स्वरं द्वर द्वर द्वर द्वर द ह्रियायायास्य स्थान्त्र विश्वेत्रायाः हे निवे दित्राधेतायया वयसाया वस्य उद्दर्शास्त्रकाद्दरहे नाधिवासका नश्चेवासराहे वाकासा वेका हुदि। दिः व हिसाय वे हैं भू वे वाय विवाद वो निश्चे व ही दे सामवा ह द वो छ वाद रा न्नो दुष्य ग्री ने अप्रमा हुप्रश्लेष हैं म्या सुर न् नुर र र स्था शे नुर ले स्वा नुर क्षेन्ध्रवः क्षेत्रायाया थें ग्रुन् गुनाक्ष्यास्य म्यातु गुन्य या विदानक्षेत्र सरार्ह्मे प्राथारा राष्ट्रिति वा पाशुरका सका की । युरा से दा ग्रीका द्वी । सुंवा सदे। ने साम्या हु नक्षेत्र हे या या ग्रम्य साम्या स्थान या स्थान या स्थान स्य र्बेसामान्नरसाम्सामुनान्त्री सामिन्ने निर्मेदार्मे । निर्मेदार्मे निर्मेदार्मे । निर्मेदार्मे । निर्मेदार्मे । ८८.२मी.क्.य.क्रूच.२.पर्ची.२में अ.व। ने.महे अ.हे.क्ष्रम.चे व.बे.व। नर्गेवः सक्यायश्वरायाञ्चन्याश्वर्षायम्। त्रम् न्यात्रात्त्रायाः स्वर्षायाः स्वर्षायाः स्वर्षायाः स्वर्षायाः स्वर्षायाः नन्दा न्वो नश्चेत्रिन्द्रावशः ह्वदः नन्दा न्वो द्धयः हेन्द्रावशः ह्वदः नवे केंगा होते। दिव के। नहुव भार्मी रूष शुमार्थिय। नर्गा भेर वर्रे लेख नश्ची न न् राष्ट्री न राज बुद क्षे है शेट पर्के वे न र न् मह गहिरा हरा राशी मक्र्या-भरमाम्भायाः भ्रीयमास्यामकर्ता विर्देतः कवामान्दरः च्यानान् सममा यः स्वान्यः स्वान्यः

न्त्र्वास्त्र्वाम्यश्चर्याः निस्त्रं व्याप्तः विस्त्रं विद्याः विद्यः

भ्रेदे ग्रावर्शभावरा प्रदास्त्र स्वर्धित द्यो प्रत्व वे द्यो प्रत्व द्यो प्रत्व द्यो <u> चे</u>ट्रपदे के अफ़्द्र में अ'ग्रे क्रेंच के क्रेंच पहि अ'ग' पेद ग्रे पाट बग' केद त्य' कें अरि: ग्रुट वर्ष पर्वेषा निर्देष प्येष मी: खुट मी कें अरी भ्रुव अर भेष प्य हैंग्रथं प्रवेश्टेंश देश्यर्थं क्रुयं ५८५५में १५५५ के वर्षे १५८५ वर्षे ज्यायाश्वायाम्भवाद्या । या ब्यायाभ्यायाम्याम्यास्याम्याया रदःशेस्रशःग्रीशःविषाः सूरः नदेः सस्यस्य स्थेतः स्थेतः स्थेतः प्रस्तः विष्ट्रारः है। सरसः कुर्या ग्री पा बुवार्या भुदि । यद्या कुर्या से द्या थे प्लेया या सुर्या ग्राह्म । यह द्वा प शेर्यश्चित्राचेर्त्रीत्रा श्रुव्याचेर्त्रा यह्याम्याम् वर्षान्त्राच्या मश्चित्राम्यास्यास्यास्यायाः वार्तेत्रमानुस्यास्यास्यास्यास्या बेर-र्रा । अरुश-कुश-ग्री-ग्राबुगश-भ्र-दे-श्र-भ्रेदे-ग्रादश-भ्रवश-५८-छिर-धर से द र से त्या द या है। सर्दे हैं वा र में द र स र में द र मिंद र स र द र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प यः वितास्या हेत्रामारः वमा ग्राटः में दात्र या में दात्र । वितास्य द्वारा स्वर वशुरःवदेःश्चेरःर्रे।।

अर्रे हो श्रुर्य त्रे से हो द्वा स्ट्रिस के स्ट्रिस हो स्ट्रिस हो

श्चे नयः श्चुनयः वर्षेयः श्वदः वद्यः ग्रे नययः यः नह्रवः ये नश्चनः यवे श्चेरः है। मट.यादेश.स्यय.ग्री.प्रकृता.यट्य.भ्रियाय.श्रीयय.श्री.प्रकृत्। वियाग्रीयः विदेशके व्ययन्ते वर्षे वरमे वर्षे वर वर्द्र नः कवाश्वर नः चव्यर च इस्रश्रामी सर्क्ष वा र्क्ष श्वरा शुम्र श्वर स्वर्धि । विश यर मेर् विकास्य राष्ट्री सर्वे प्रत्व त्या सुन्य सुन्य सिका चु-च-वर्देशक्षे-ह्य-वश्वरावद्शायवे-क्ष्र्राह्ये-द्वे-वर्वे-वर्वे-क्ष्र्यं वश्वराव षरःद्याः धरः हेतः धरः होदः धरे । ह्यः द्वः धरा वद्याः धरेः वस्रयः ध नह्रवःर्रे से दः परः दे शुः पदः सुन्यः शुः वर्ते नः सुनः परः से हिदः देयः यश्रिय। द्रित्रपश्चेत्रह्यायाग्रीक्ष्मुत्रयाद्यीं शे. र्वेत्रयस्यास्त्रात्र्याग्री नश्रमानानानी शादवाना हे त्रा नित्रान स्रेत्र स्ट्रिन शासना सर्दि । गर्भेषावेशाम्यावगुनाक्षेप्रेपेर्देशम्बायायात्रे गर्वेदायार्वेदाया उर्ग्येशन्त्रन्तासुन्त्रायसायर्त्रसायाहे नर्स्त्रन्त्रन्त्रस्यावेसानुना लेव.संतु.हीर.र्स्। क्रिंश.स.वु.यावव.ग्री.ई अ.ध्रुंश.घेश.संश.प्ट्रंय.स.लुव. ग्रे कें र ग्रेव र पेव र वी सेसराय रवा यस पवे द्वेर ५८। दे ख़ सेद द र्से न सरा र्से स पर्वे न यन्तर्विष्यायार्थे वर्षे स्वास्त्रे न्या स्वास्त्र स्वास्त्रे स्वा <u>५८.२मे.श्रॅर.मे.र्केश.स.२म.वे.र.५२.५२.३८.सव.स्</u>राह्म.स्राह्म त्रै न्यस्य स्थित् स्यात् स्थित् स्यात् स्थित् स्य

विश्वान्त्रस् अर्द्धस्य क्ष्रियः विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य विश्वान्त्रस्य क्ष्रियः विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य विश्वान्त्रस्य क्ष्रियः विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य विश्वान्त्रस्य क्ष्रस्य क्ष्यस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्रस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्रस्य क्ष्रस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्यस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षय

श्चेश्वादार्या मुद्राची कास्याया राज्य द्वाया स्थाया स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स मर्चिन मर्पेन मन्त्र स्थान विष्ट स्थित कर्म स्थान स्था য়ৄয়৾য়য়ৠ৾য়৾ৢয়ৼৢ৾ৼয়ৼয়ৢ৸ৼয়য়ৢৼয়য়ড়ৼ৻য়ৠৄয়য়য়ৠৢয়য়ৼ वया यय केर य शुर पर्या भी नमस्य पानह्त में सेर परे भी परेंद स देरःसरःसरसःक्रुसःग्रेःनसूदःसःसेर्ध्यर्यस्युरःरेःवेसःवेरःरे ।देःद्याः यादेशावजुरावी वससायापेंदादे। दे द्वा श्रेदायाश्रसायापे द्वारे श्रेरा न्दा ग्रेवेम वळम्ग्रास्मिकेन्द्रम्थ्याग्रम्म्याः स्वास्त्रम् केंग्रायायम् ग्रायाते न्यायामें न्यायामें न्यायाया स्वाया स्वर्णन्य स्वर्णाया स्वर्णन्य स्वर्णाया स्वर्णन्य स्वयः स्वर्णन्य स्वयः स्वयः स्वर्णन्य स्वयः स्वर्णन्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वर यन्दर्भवासरावश्चरायाधीवावादेग्याहे सूर्यार्थे सामा स्रे नरावश्चर र्थेस यःक्रे न न सूत्र य द्र द्रो निर्देशो समाया स्वा सुमाया है द्री ही साले मा हैं रायर हो रारी विशारें ग्राया प्रायश्चित्र विशासिर त्या रागर र्बेदशमाञ्चरणेदाहे नर्डे साध्वरायन्या ग्री विनया तुरान्दाहे नरायन्ता मा सेस्रासर्देत्रन्युर्याधेत्राप्रशान्त्रो नदे सेस्राप्तर्देसारा क्रेरा नेसा गुनायदी यायम्यायाया विदासाया धीता हैं विश्वामा शुर्या सदी ही या देरा यह ঀ৾৽ৼঀ৽য়ৢৼ৽ড়ড়৽ড়৾৽ঀ৽ড়৽য়ৢৼ৽ড়ঀৄয়৽য়ৢ৽ঀয়য়৽য়য়৽য়য়ৼয়য়৽ঢ়য়ৢৼ৽ঀ৾৽ र्बेसमाञ्चे नासेन्यमायर्देन्ययर्धायवर्ते। सुरायर्थाग्री स्थान नह्रवःर्रे क्रुवःळग्याश्रुःयेदःग्रुटःर्श्वेयायायेवःयवे ळे यानवः र्रेवःग्रीयः

यशरेशवर्द्धरावी प्रथमा भी प्रदेशीय निर्मा स्वापन स्विता ग्रीया येग्रयास्य वह सूर्यायया स्थार सें या प्राप्त के सामा विवादी । विविधित से र्राची कुर्याप्रवाश्वर्था देरास्य वी र्या शुरास्य केराय देश वशुरा मी क्रिंय यं से दिन्ते अ क्रुर्य से वित्र येग्राश्चित्रगिष्ठेशःश्रेष्ट्रम् श्चेष्ट्रम् प्राधित्र व्याधित्र श्चेष्ट्राध्य श्चेष्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्ट्राध्य श्चेष्य श्चेष्ट्र श्चेष्ट्र श्चेष्ट्र श्चेष्ट्र श्चेष्ट्य श्चेष्ट्र श्च नश्रयाम्भेरामान्देशायगुरानी र्ख्याविश्रयाशुप्रगुरास्याभे प्रगुराने वा ने निष्ठिश से वर मी क्षेत्राया साधित है। सिंद्र प्रमेण प्रशा ही रें पाया यार्शे वराती क्रिंयाया से दायि क्रुवा ते दारि दे दे दे दे दे दि स्थाया वहेता यदे हिरा गहरात्र्भेगायायश्रार्थे स्वराधरात्रेत्रायायायीतार्वे वियानगैताया ८८ कु अळव अळु ८ अ प्रते भ्रेम वि के वा व रे अ वर में भ्रें अ प्राची अ प्राची भ्रें अ प्राची अ प्राची भ्रें अ प्राची अ प्राची भ्रें अ प्राची अ वहेग्रअः श्रुवाद्याया श्रुवावेयाया श्रुवावेयाया श्रुवेता गुवाश्रुवाया विषया वि भुन्यासु वर्गे दर्गेयाया भुन्या वर्गे दे पुरा के या दे सुर वर्ष या दे । हेत्र र् विश्व से त्येत्र त्र सुन्य सुर्ध वर्षे वर्षे वर्षे स्य स्थित से सुर्व रे हेत्र र पिर्यायेव'व'ने'हेन' श्रुट'वन्याग्री'नययय'य'णेव'यवे'श्रीर'र्से । निर्याव'ने' गिरेशमेश्वर्यात्रुम्मी द्धयाविस्रास्य त्यूमाना श्रीसास्य स्वर्मा ग्रीम्यस्य स्वर् यदे दिना हु है । इने देने दिन देने । इने देने । इने निक्षेत्र ही श्रूप हु ।

नियायाति स्थित्ति हिंदानियाति । प्रत्ये के नियायि । के सामि । प्रत्ये के नियायि । के सामि । प्रत्ये के नियायि । के सामि । के सामि । प्रत्ये के सामि । प्रत्ये के सामि । प्रत्ये के सामि । प्रत्ये । के सामि । प्रत्ये । के सामि । प्रत्ये ।

त्राचे क्षिण्यात्र कष्णात्र क्षिण्यात्र कष्ण्यात्र कष्णात्र कष्णात्य कष्णात्र कष्णात्र कष्णात्र कष्णात्य कष्णात्य

पि.श्रमा.य.म्। यावश्राप्तरःश्राश्रायः व्यव्तिरः त्राका वि.य.कालरः रची श्रिरः

नविराधेर्यायान्वीयाने। त्रेमारा नवो पर्वर्त्यान् स्वराद्याने श्वेरावेया ८८। ५८४।मु: व्रवसासु:५कुर-वरःगसुटसःधदे:ध्रेर:बेरा गविद:५गःदः रे। ग्राम्यायद्राल् क्षेरे रे रे द्रश्लु श्राम्य व्यवस्य उद्याल्या प्र वर्गुर-नवे भ्रेर-प्रा हेगा छ्र-र्। ग्रा-वर्गाय ल् नर-मश्र्र या रिक्र न्मो पन्तर् न मुस्य विश्वास्य स्याप्तर् स्था प्रमाय मे। या मुखाय स्टिम्स यदे सेट मी अप्यन्ना अपने से स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स् श्रे भित्र के लिश नहें न भारतिता भर तर ने में में तर के पर कर के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स न्नो क्रेंद्राइस्र सार्या रूटा रूटा भी यात्र सामदा के के कि ता विदाय विदाय विदाय है द वदेन्द्रिः धेव पदे हिम् वदेवे सूर्व खुवा देवे दुर त्रें वा सुर वर्वा है यव गर्यस्य महें द द्वीं र स्वा विकास दे द्वी पद्व समय ग्री र र गु वि द्वा इसामवेर्द्रम् हुनङ्ग्रम् न्युर्म् साम्य मेर्ट्स् राय्युर्म नर्द्र्स् रायायास्य स् रॅर्ग्यार्थयः नाम्नाम्य स्त्रास्त्री स्वान्येव म्वान्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य स्त्राम्य श्रेट्यदे विश्वाचि नः श्रूच द्वेद्य या सम्बर्धेर म्यूर्य या श्री निर्देद नन्गामी अपन्न में अहं न नु मार्थिय। क्षेत्र नु में न स्वापन में अपन्य कु नु स नर्न्न श्रीरे विश्वायम् मुस्य द्वा वास्य स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स न्यूर्य्यर्विर्वेश्वेश्वार्ट्र्य्यर्युर्वे । यावत्रेवे देवे देवे यावत्रेवे र अन्दिन्। भुन्ने विकास है। नाया वहुना याने या क्रेन ही नाय है। नमा वहें न

मन्दरा हे नर हुँ द्यादर हे नर खुर वर्षे म्यायस्य सम्बर्ध वेया गुर्दे। यिष्ठेश्याची नेते देवा प्राप्त हो हो सामक से स्टान्स ने साम हो सा नश्चाद्धवाःस्त्रः यार्तेवाश्वाराः श्चाद्दाः विःश्चाद्धवाः यः वेवाः यरः वः क्षे देवर्द्र चुर्वं सद्दा सहस्याये दिस्त क्षेत्र स्वार्थं स्व वर्दिन्यःश्वरःवन्दरःक्रेशःवदेःववेःवश्वयःयःवश्चेन्रःवेःश्चेन्रःहे । वाद्ववाः स्र-विगानवगाक्षेप्रनाहुत्वस्य स्थायारे अप्येश्वराम्यः मुर्-र्स् । पार्डमास्त्रामारामी के प्रमेगा हे त्या पार्डमास्त्राप्रमेगासर भूवसा वेशदेशयावेगारु क्षेराव गार्डगार्ड्य देन देने वेगायर होते । अन्तराय क्ष र्रमात्तुःमें मान्दायवदार्गे मानु मार्थे ना से मार्थे मार्थे मार्थि होता हो । क्ष्यान्द्रस्य बुद्रायि क्षेत्र स्वी शावान श्रुत्र स्व श्रुद्र स्व हिंद्र स्व युरःश्चेत्रायापाठेवानेरास्रान्यो द्धयायी के वानेरावान्य द्धाळवासायारा श्चेत्रामाने साम्या स्री यामान्या यामान्या स्वीता स यानभ्रेत्राह्मायाग्री के भ्रेत्रापि उत्ताय व्याय सुत्रा भूत्र देश स्त्रीया यशनेदेखें खुरावने राश्चे दायायाय वर्णा श्चे दार् रायाविदार्वे । दे वर्षानञ्चन ग्रम्भावत सेदि महासामित्रेषायाम तुन्याया सेदा सुना ग्रमा है। में अरे रेग बर नर होरी | रेवे केंग हु अपिक में अर्ब ब्रुव हु रे वर्गे अरे न्वा नर्भेन पर जुर्ने । न क्षेत्र वी य न्य यह वी य स्वाय तय नर्भेन परे यगायेववित्रान्यासे। अन्योक्तिंशकेंश्राम्यासेन्द्रित्राचीत्रासेन्द्रित्रा

新I

यहिश्यः प्रदेश विश्वः यहिश्यः विश्वः यहिश्यः यहिश्य

हें लेश प्रचुर प्रथा हें ज्ञाप स्माण के प्रचेश के श्रे के श्राप्त के प्रचेश के श्रे के प्राप्त के प्रचेश के प्रचेश

विश्वास्त्र ह्वाश्रश्चित्र व्यास्त्र स्वास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र

महिरायाची वर्षायावहित्यामाचेनायावरास्याम्यास्याचित्रां श्च-दर्भात्रश्चेनायार्थेनायायात्र्यायार्थ्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या वुरार्वित्याचेरायाविवाद्या अप्तरायाञ्चाचेषायादराद्याञ्चेषाञ्चेवाया श्रात्वरारी खरामवीयया भुर्मेग्राम् निरार्क्ष्याम् मानभूतात्वरार्द्रमा हार्या हार्य विद्यायर वाश्वर्याय प्राप्त विद्याय विद्य र्देगा हु गार्ड्या सुन् नव्या य न्द्र अळव् नह्या य न्वे अ य अन्य से से से है। ने न्या ने न्या हु प्य वृद्द न्य देश स्वर्म प्रदेश के न प्ये न स्वर्म स्वर्भ स्वर्य स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्भ स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स् यःर्यःरविःस्वान्तेत्। यादायादेयाने निस्ने वार्षेत्रास्या होत्रित्रम्थायर वया देर्पा ग्राट्स ब्रेष्ट्रम्य स्ट्रित्य या वित्र देव स्था धेत्र यदे भ्रिम् ह्यायाष्ट्रमायया सुम्या याया हे समा सुम्य क्रिया से या नर्भेन्यर्रिन्यर्रेग्न्यरे। विस्यायायः केंस्याने स्वान्भेन्य केंस्याने क्रियासक्त यासागुरायदेष्ट्रेरायरावगुरायदेष्ट्रिरावेष्ठ्रा क्रुॅंब्सेरादे। क्रुॅरायहर न्भेग्ररान्ययाधेत्राचित्रेम् नेन्ध्रयाधेत्रात्रम्बेत्रहेंग्रयाधेत्रात्रम् नुशर्षेश्वरामरम् र्यास्यायविदेश्यस्य नुरस्य रहारामराम्य विस्वराम्य नुरस्य धेत्रमश्रिंशमिते हेशम्य स्वर्म्य स्वर्म्य विश्वस्वर्ध्य भी वित्रम डेग्। दे । विं त्र र ग्रु । या ग्रामा त्र अ । अषित । वें र ग्रामे वें र ग्री । ग्रिअ ग्राम पुर ग्रु र प्रेर वें अ । वे र रें ।

गिरेश्यान्दिशमिविःयामिश्या दिस्याद्वा वराजुरादे। । प्रार्थाः वे रन्त वुर नक्षुन्य द्यायाव र्ये या के वुर वे नक्षुन वुर ने प्रवे व्या हिन्-नु-हे-नर-नुस्न-नुस-मित्रे-न्नो-सूर-य-वि-य-न्नो-द्धय-ग्री-सूर्य-स बॅर्न न्नो र्ख्याने नार्वेन न्या हो न्या भन्य के नमाया या है मारी मारी का श्चिर्यानिव श्चित्र श्चित्र श्चित्र वादिश्वाना वात्र निवान वात्र प्राप्त वाद्य विश्वान वयार्थे सूर्यायदे धेन नश्चेन नदे श्चेन में लेखा वेन में वित्र में वित्र नि र्श्वेटर्ने अर्डे न् नुः बेर्न्न डेरद्रेदेरन्य कर्न् ग्रीर्के अर्म्य अर्पेट्यर्श्वर्पायाया वेशदेशत्राद्याद्याद्याद्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्रात्रात्यात्रात्रात्यात्रात्यात्रात्रात्यात्रात्यात्रात्या न्नो र्छ्य वेद सम्बन् सुर्गे स सबद र्गे स निर्देश निवेद निवेद ग्रीशः र्हेन सर ग्रेन सरी के त्वर ने स्टान में स्टान में स्टान स्ट हरादेर् ग्री म्ब्राप्त देश हे अप्याद मी प्रमेख पा इस्र अस्र से प्रमुद्र नवे भ्रेम्भे । व्यायम विष्यु न द्वाय मान्यो क्षेम्भे अर्थे यत्त्र न र्केशमें शरीक्र ग्रीयान स्वाप्य प्राप्य प्राप् <u> ५८.२मे.क्ष्य.सद.सर्व.र्क्सम्बर्भ.मूब्य.मूब्य.स्य.मूब्य. १८मे.</u> द्धयाययात्रे निगे र्सेन निर्मा द्धयायदे यत्तर् रेसे या वी या ही ता ही या

नक्षनः सरः होर्दे। । द्योः श्चेंद्रः स्र अः देः द्योः श्चेंद्रः सः द्राः । द्योः श्चेंद्रः सः द्राः न्नो र्खु व्य अदे अन्तु न् नु र्के अ में अ में त्र मी अ म स्वास्त्र म् म म स्वीस्त्र । प्रामे र्से न केंशनेंशन्त्रेत्रनीशनक्ष्यायम्निं। । द्वोत्स्यायशने द्वोन्स्रिंट्यप्ट न्नो क्रेंन सन्ता न्नो र्छया सम्सम्भा ग्री सन्तुन नुके भार्ने साम्री न ग्री साम्री साम्री साम्री साम्री साम्री नक्षन'मर्नु क्षे अर्द्युर्नि राज्य निवासी विवाद निवासी विवाद निवासी विवासी विवा नन्द्रभाते सुद्रस्य द्वाप्य क्षेप्ते देशक्षेत्रस्य द्याद्वी सुव्य द्वाप्त स्व यः कें अवीं अन्दरत्वयानवे हे अस्य वर्त्वरानम् निर्मान द्वी येग्रायानेश्याहेत्राची प्रयोगायशामहत्याययापित (व्यापळे प्रायशा नद्वं तर्भ द्वो र्श्वेद मी अपाद वी अत्व द्वं र् के अपी अ विव की अपन्न न सर नश्ची हे नर वर्षिर द्वी क्षेंद्र वी शहे द्वी क्षेंद्र सदे सद्दर है के श्वी श विवाग्रीयानक्ष्यायम् विदेशि । नद्धवायान्यो क्षेप्राययान्यो यत्वात् केया मैं शरी वर्षी शरव क्षवा प्रस्विष्ठी हे वर वर्षे र द्वी क्षेट स्था वे द्वी क्षेट यदे यत्व त् र्के य वी य हो व रही या यह व राय र हारी । । तह र या र र र र र नरम् न्यानायार ने निविद्य न्यानिया निव्यानिया निव्यानिया निव्यानिया निव्यानिया निव्यानिया निव्यानिया निव्यानिय

## गहेशपाब्र जुरायाशुस्र

मुःभः इस्रभः ग्रीः न्रीः न्रा मुःसरः वर्गुरः नवेः नुभ। ग्रुरः पःषः सळ्दः दशः

र्श्वेरामिने स्थामिन

# রু'ম'র্মম্যাশ্রী'ব্রী'বা

त्रः सं त्री न्नो छ्या हेन् दु हे न्य न्य श्रुवा यये न्नो श्रूवा ने ह्यं या ने ह्यं या हेन् हु त्र हे न्य स्थ्य हु न्य स्य हु न्य स्थ्य हु न्य स्थ्

भूतिन्द्रित्ध्रान्देश्वर्ध्यात्रेश्वर्धः स्वाद्धः स्वादः स्वद

# त्रुःसरःदशुरःनवे:रुश

गहेशराया सर्रिरवस्ता कुरावन्तरगहेश दरसें या गहेश र्स्नेन'न्सेन'न्'वर्युर'नवे'न्स'न्म। समिन'सेर'वर्युर'नवे'न्स'से। । न्मः र्रे दी गर में छे रे र्या क्षेर र्यं र्यं र्यं र्यं रे विष्यं क्षेर्य स्थित स्थित स्थित स्थान वीशः श्रॅवः न्सॅवः न्: वश्रूमः ववेः न्वें शः यवेः नेवः श्रुवः वः नेवेः श्रेवः नर्सेवः न्ः शुरान हेर हो। देवे के देवे क्रेंन दर्भन दुर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वरं सुगा सवे धेम निरंत्रन्ते रहेषा की र्थे सामा श्रेत्राय रहेना से निश्चना हाया र्थे सा यः भ्रेअःयः वः नेवेः श्रेवः नयेवः न् ज्यूनः यः नविवः वै। । ग्यूनः भ्रेः श्रेवः यः वेः श्लेजः हुनरळन्द्रियादयादरानुर्देरायाल्यायादार्श्वियान्धेवान्द्रीयान्द्रीयान्द्रीयान् वाशर के केंत्र संदे दर्वे शरा धेंत्र श्रा केंवाश त वाशर के केंत्र संदे केंत्र न्सॅन्छेन्न्युर्याधेन्द्री विशन्ता विशन्ता विशन्ता विशन्ता यदेः श्रूवः द्र्यं वर्षु दर्श्वे राष्ट्र विश्वाय भदादे।

विः क्षेत्राचाने विश्वास्त्रे स्वाद्या स्वाद्य स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या

यहिरायाक्यायविरायाक्या ह्रायराच्चेरायदे स्वायराव्यारा यदःरुषा अिःदेशयःसर्यस्य स्टिस्य स्टिस्य स्टिस्य स्टिस्य स्टिस्य धर हो द रावे सु अर विशु र विवे द् अ श्री | दिर से वा वा वे श र्से व द से व द् वशुरावदे रुषा अविव सेरावशुरावदे रुषा श्री । प्रामे वि देव शुव व शुर्रासंकेर में बिर्याय वर्ष वार वी के में बच्चाय है वा प्रवी ख्यार र प्रवी । श्चिरिः हे वर्षा वश्चवायाया वहिताया वश्चया वित्रायाया वर्गुनःयः त्रःयः वदरः कः गशुसः विदः सदेः कः गशुसः सः वः देतः गुनः ससः देवेः कें श्रून न्यें न नु स्व मान केंद्र में विस्त मान मान के कि मान श्रून मान स्व नर्हेन नन्यानर्हेन यावन नर्हेन याश्यायया नन्यानर्हेन नयो छ्यान् विश्वासदिः सह्यायाव्य निर्देन सः श्चित्र निश्वास्त्र स्त्रीत्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र न्मो र्ख्य हेन री स्थार से अध्याप में वाज्य प्राप्त विवर्ते। । ने प्यम मान्य न्नो र्छ्य न् अन्य स् ने न्या ने हिन्य दे के से अन्य पित की निश्चन निश्चन न्हें द्राया थे खें या श्री

महिश्रास्ति। शामदार्धेराम्यान्यादे र्त्ते स्थान्ते स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान स्थान स्थान्त स्थान स्थान

यहिश्यसंत्री श्रिंतान्स्वान्ययाहिश्यश्चान्यत्रे दिन्द्रश्ची छैं।
त्यात्र हे त्व याद्रश्ची त्रांत्र हे त्र प्रांत्र हे त्र प्र

नशुस्रायाचे। र्स्निनायवेः र्स्किना न्यं के स्वास्त्र स्

यर होत्रया त्रीया परित्रया भेषा भाषा हो प्रज्ञता होत्रया प्रमा होत्रया भित्रया होत्रया भेष्या प्रज्ञा वित्र स्

# गशुस्राया शुर्माया यळवा वर्षा श्रीया परि सेसामा दी।

यावरश्चितः तुः शुरायाया यळं वावया है । क्षेरावहें दायरा शुः ले । वा यावरःश्चेतःने पादेशायाश्चेतान्धेतान्द्रात्राप्तराधीतेशायायशापाव्यान् नदुवःयःवेशःश्रेष्यशहेःनरःष्यरःश्रेःनहेंद्रःवःनेरःनवशःष्ट्रःहेःश्लेश देशः वःश्चेतःन्येवःययरःश्चेतःन्येवःवेशःन्रा अविवःयेःयःयप्यः अविवःयःवेशः न बुद विशाय बुद न शहे न विश्वेषा भी न हैं द खुया है। क्राया या यह व यदसःग्राम् सः नह्न दसः के न्दरः ध्रमः विसः नहें दः सरः ग्रः क्षे वदेः सः ग्रम्भागम्बर्द्रान्द्रावेशःश्रेष्य्रायान्द्रा स्वरक्षेष्य्रायाया देवःग्रद्राके न्दरः स्वर यानेशर्मेर्प्यवस्पाद्धत्यानेशर्मेर्प्यानेशर्ग्वर्षुर्प्यर्ग्वरेश न्या स्वाळे म्यायमे यार्वेव स्थानमे स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्व कें न्द्रभूव पदि कें वा वी वा हें न्यर हो न्यर हो वा रा हो न्यर हो वा न्य गी भिरादी अर र के र र श्वर सदे के गा गी या न हें र सर मुदे लेया गश्रद्यायाधीतार्वे । वियाद्या श्रुयायक्कायम्। क्ष्यायद्वतायदेशे प्रदेश क्षिमानीश्वास्त्री । मार्विद्वाययमाक्षेत्रम्ययम्भित्राम्येश्वास्त्रीश्वास्त्रीश्वास्त्रीया

ग्रवस्य महत्र विराधि हे के ग्रामिट्टी । दे सूर पदिर हे सेट हैं सारे साम लेवा विशन्ता देन ख्वन्ता स्व के नाय यथा देव ग्रामके निम् वेशर्मेर्प्यवस्पर्द्वापावेशर्मेर्प्यामहेश्ग्यात्रःहुसूर्पर्युर्देवेशः ८८। स्व.क्रंमशादग्रेयायम्। गर्वेवायशादगे ह्येटानेवाहान्त्रायायाया कें न्द्राष्ट्रवार्यिकें वार्यो वार्ट्रिन्यम् हो न्वरहे वारा बेदायम् बूदा हो। वादा गी भीर परी अर र्रे के र्र श्वर परे के गागी या नहें र पर गुरे वे या गश्रद्यायाधीतार्ते । वियाद्या श्रुयानकु नम्। क्ष्यामञ्जू रायदे त्राये हे नये। क्षेत्राचीर्यान्त्र्रित्। विविद्यायद्याक्षेत्र द्वार्याया हि निविद्य यावरा यहता वेरा प्रदेश केया यहें या परे सूर परे र वे से र हैं र रेस र लेवा विश्वन्ता देन्ख्यन्ता वराची सुश्वे स्वरायायाय होते । दे नविवर्त्रम्बर्यायायार्यर्त्र्राविवर्यायायार्यर्त्र्राम्बर्यानहवावेयात्रः नदे हे नदे के ना मे अन्में दायर हुदे हे अनहिंद राख माद्या नह स्वार कें न्द्राध्वामा ने अपने हें द्राणी न इंद्रामा ने अपने मित्र में निर्मा न इंद्रामा ने अपने भूता र्देर्'न्डे वेश'रा'सुमार्देश'धेव'य'मविव'रा'सुमार्देश'स'धेव'रादे सेर्'रे। हेदे धेर नद्वार प्रत्राम्य रामह्य प्रत्ये प्रत्य के प्रत देशाधित प्रभात पर्देव पाने भाग्ने भी पाने पर्देव पाने भाग्ने । नर्ने अर्केन् भने किंगा भ्रे विन पुर्ने नर्न नर्ने नर्ने न्या भ्रेन्य में गशुरुषा वरेदे पात्र अपायाव्य त्यार्या अपाय अपाय अपाय अपाय स्वारी द्वरा वर्तेन वर्ते वा सम्मान्य विषय स्था से स

ॿॖॱॸ॔ॸॱॸढ़ॺॱय़ढ़॓ॱढ़ॾॆज़ॱढ़ॆढ़ॱढ़ॱॺळॕॸॱय़ॱॺॱऄॕज़ॺॱय़ॺॱज़ॏॕॱॸॕॸॱॹॗॸॱ यदे भ्री मान्यानहर दे। वियार्थे। विष्ठिम्यम् उत्रम्य थ्रा । व्यव पास्त्री से दान वर्षी स्त्री कें वर्षे दान मुन्य स्त्री कें वर्षे दान स्त्री वेशन्ता स्रवः केषाश्यवरोषानम् सर्वेदासमः वर्ने नः परे के न्दरः स्रवः परे रुटार्टी विवसानह्रवायायान्द्रायेवर्नेसायायान्द्रायेवर्णान्यः सुमार्भ प्रदासे ख़्र स्वाप्त स याहेत्यः श्रीयाश्वास्ति हे क्षिया ग्राटः सुटार्टे । । सायतः श्लीयः स्थायावात्रः या सिवरश्चेत्रः हेशः न्हेर्नः नुस्तरा देश सिवरश्चेतः स्थान्य स्थान्य । र्स्चित्रकेशन्न्द्रित्यम्भे नुःभे न्द्रित्याव्यव्यत्माव्यःस्वरःस्व श्चिन न्द्रित के मो से बिया पा सूर सामत में ज्या प्राप्त में विश्वापन विमा गैर्यायाद्वीत्रा देवाची स्वर्त्त्रात्वा स्वर्त्ते स्वर्ते स्वरते स्वरते स्वरते स्वरते स्वरते स्वरते स्वरते स्वरते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वरते स्वर नरुरान्यस्याङ्करान्यस्यावद्रस्तिः भेराभे न बुरारे । । नरुरान्यस्वेरानः वे देव भी सूर र सक्व वया र्रे या है वया पर पर प्राप्त में विया परि पर र् किया यावव श्री अ अ केंद्र यम निर्देश में अ अवे में व वेंद्र श्री व विव श्री व वेंद्र श्री व वेंद् ग्री:क्षून:तु:अळव्यव्यःक्ष्र्र्यःहे:यन्याःवी:अविवःर्यःवियःयहेन्द्रःतुःरुन्दे। पि.कुर्याःश्वितःस्.वटशःश्रश्चाव्याःस्टःस्र्रःस्ट्राचःनेःश्वेटःश्वःयःस्ट्रःग्वेटः 

#### कैंग्राश द्वी या नम्ने द हिंग्राश ही अप हो हिंदा या निवास हो न प्रति विवस्ता

यहिरायाक्षेत्राराष्ट्रीयायस्त्रेत्यम् हित्रारायदे के या वा ग्रुया र्श्वेर्ट्रश्रासह्याची कें यादी । १८ र से त्याया सुसा विया पेर् प्रश्लेर प्रदे मुराग्वरायात्रंविराग्रेयात्। केंगायरीयये नग्राया नश्चेत्रप्रे भ्रीत्राम्या श्चेत्रप्रा श्चित्र श्चेत्रप्र प्रत्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स दे विद्यान भेता स्त्रीत स्त्र हिंग रास्य मार्थे या नर्थे । दूर से दी देवी प्रमेश निष्ठ हिंद प्रमा न्नो र्ख्य हेन न्ना न्नो र्सेन हेन न्ना नी स्याप स्रेन पर सार्हेन या पर यु सारी गुरें वे यान नित्र दाने रहें या गु दें ना हु है सूर न स्रे दारा हैं न्या यर ग्रु ले त्र नश्रेत हैं ग्राय ग्री श्रें या पाने नश्र राया ल्वायाय पिर्यास्य र्हेग्रायायार्थ्यायात्रययाउट् ग्री यर्केग् प्येत्र प्रयाद्यो प्रत्तार्थे त्यया नश्रेव पर हैं वाश्वास सुर वर सुर्वि । रव सुर ५८ र वो रहं वा व्हर वार सवा यश्रितः धेदार्दे । वनश्रानारागेशा ग्रुले व नश्रेदार्हे ग्रश्री सामदार्दे क्षेत्रपुर्वेष्य्यास्य स्यूत्रप्रयायस्य स्यायायायायायात्र्यायम् । द्यो प्यूत्रप्रप्र यश हो दारा द्वारा में भें देवारा या प्यदायदी द्वारा यहें दा हे अ या श्रीया न'मद्रन'सर'तुःक्षे। म्बि'द्रामाद'न्या यथाग्री'मद्र्यास्रु'दर्'नर'द्र्यूर' नदे-द्रमो त्र्त्राय प्यान्य स्थान्य मान्य स्थान्य विश्व द्रा दे द्रमा मीशः ग्रद्भारत्रु, नर विश्वर नदे छे ज्ञुन से दुन विद्या पदि है या पान सूया पर शु नन्ता नन्नार्यस्त्रानन्तिरास्यार्यस्यस्यस्य । इत्रम्नन्ते स्ति स्ति स्ति स्त्राचित स्त्र स्त्र स्त्र स्ति स्त्र स्त्र

महिश्यम् स्थान्य स्था

ग्रायायमेट हे या मुराया मेन या निवास मार्था स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्व यानवःसँ या दीवा क्वाया थी 'दर्गे या बेरःसँ । विवासी यानक्वाया पदिः देवा हुः नर्भेन्यर ग्रुष्टे क खुग्या थ ग्रेप्ट्रेन्ट्र कें य में य ग्रीन् ग्रीय कें य या थेन यदे भ्रिम् यदे प्यर दर्देश भ्री भ्रीत स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ भ्री द्वर द्वर्भ भ्री स्वर ध्यादगर्भेर्भेत्रु कुवे वेद क्रिय्य क्ष्या व्याप्त के से प्रमेंद के विषय क्ष्य न्दान्डर्भामदे के न्वो प्रत्न ही प्यास्या होत्। हिन ही शहें नामदे हें नाम लर सिया तक्तारी विया में विश्वासी श्रामा अत्या वर सिराय वर सिराय वर्ष गठिगामी अः श्रुटः न ने दः दे । यगा सः मार्थि दः सरः न विमा मायश्रास्य स्था न मानः श्रेः म्बर्भस्यानविवर्नमे र्स्ट्रिंटर्ने सेवे सत्वर्त्वाटर् से वर्त्रस्य प्राप्त प्रस् ममा भेटावरी वेसामग्री मते खूटाम ने दिन कर्ण मुस्याय सामित हिटारमा श्रे केदस्यापर्देग् से सुद्रादेश देश द्रो पद्र्व प्रायस्व द्राय स्व र्वे । यम्मे व्यवस्था उद् श्रीयादे स्थान् साधिन हे सुरान कर स्वता से वाया यर्षायश्चर्यायभेत्रत्र्याय्वेत्रत्वर्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र् वें अर्वो पर्तु या वसूत्र भेर्वो अप्यासूर व ने र र्वो पर्तु र पा वसूत्र न्वीं अप्तरि वे कु अळं द पें नि के के अवीं अप्य कु दे ही द क्षा रा वकवाराया सूर्वते वेतः कुते हित्र क्षत्र स्था स्था स्था हिता हिता है स  न्तःश्चित्रश्च्रित् विश्वाश्चर्या ।

विश्वाश्चर्या विश्वश्चर्या ।

विश्वश्चर्य ।

विश्वश्चर्या ।

विश्वश्चर्य ।

विश्वश्यय ।

विश

मशुस्रायंत्री श्रुट्यंत्रेत् क्रि. महित्रं क्रि. महित्रं

दें त्राम्यराक्षे क्षेत्रायानक्षे निर्वाययान्ते निर्वा निर्वाय के निर्वाय नरः करः वर्दे । नवे : श्रेरः वार्शेषः नः वनवः विवा । पवे । वार्वे । वार्वे । भूनर्भान्द्रान्त्रीर्भासान्द्रा यथाग्रीन्तिन्द्रानायार्थेद्रासायेद्रासार्थेद्रासार्थेद्रासार्थेद्रासार्थेद्रास यायदे क्रिंश्रु के दुराया देया अर्केश सुर्दर वित्रु सक्त के ले त्र वि वे न्यरक्तरभेत्रमर्देशस्य नुश्या भित्रस्य है स्याप्य से स्याप ग्रवरानायायह्रपानि भेरान्या देंगायाने ग्रयायह से सेवाययान स्वरा बेर्'यर'देश'यर'वुश'वेद्र'य'य'द्ग्रेश'द्रश'यश'र्वेश'य'ग्वर'वदे'वेर'र्रे' वेशामिक्याचेरार्से । देवशमङ्ग्रीशमित्रिंदिमे क्षेत्राचित्रम् धेव हे : रूट या ध्वा पा शुर्या पर्के या तु । व के : रूट : खेव : या हिंद : हेव : डेग व्दे दे हिंद् शे नदेव पदे दुर्भ वेश शुनार्शे ग्राम श्रीम नसून शुने वा ब्रैंगार्,नरक्र ग्रीकेंश्वस्थराहेश्र्यात्रस्य प्रम्त्रात्र्यं । नर्क्ष ৾৾<del>ঀ</del>য়য়য়য়ৢয়য়ৢয়য়ড়য়ড়য়য়য়য়য়য়য়ৢঢ়য়ৼৢঢ়য়ড়ৼঢ়য়ৼৠৄঢ়ড়ঢ়ঢ়য়য় श्रुरात्रराम् वार्षे स्वर प्रवेट के प्रत्र प्राप्त प्रवा प्रवा विष यावरार्सिसेटायदी वियानशी नया सेटायदी वियानशी नायानर कराशी। क्रिंशाम्यराष्ट्रे हे या शुप्तश्रृतात्र विया गुप्ति क्रिंमा मीया द्वी पद्तुताया

ঀয়ৣয়য়ৢঢ়৾ঀয়য়ড়ঢ়য়ৣ৽য়য়য়য়ৢয়৽ড়ঢ়য়৻য়ৢ৽ঢ়য়৽ঢ়৽য়৽ अक्टें विया या अपने अपने वर र र दिर य र यो पर्त या व र य र यो प व्यासादाद्यो पर्वा वस्य राज्य श्री याया हे । विद्या शुः द्या दर्दे । वेया नहें न सर होते। । नवा व वावर सर वा व से वावर वि दें व के। । नवी वर्व श्रीभागवरावभावरान् दिरभाभावान्यो । प्रत्यायभा <u> चे</u>न्यश्रेने क्रेंब्यान्यन्यने प्रत्वाया सुनाप्तक्यान् । च दुनाव्यानिकायक्रेवायनः <u> हॅ</u>न्यश्चरात्रुःविःश्चिरःद्वोःवर्त्रावःव्यत्वःवाशुस्रःत्वार्शेवःवःवदेवसःशुः यश्चेत्रमायास्यापळ्यात्रशस्त्रम्,यत्याक्षेत्रेदेशह्राह्र्या वनद्विमानी यस गुराद्या यस गुराय ध्वापळ्य र् महुना हे यस ग्रीशानराळन्द्री निष्ठा विष्ठा है हैं वार्यानराळन्द्री शान्यानरा ळ८.८८.श्र.के.के.४४.४८.४५.३४.१४.४८.४५.४५.४५.४४.४४४.४४४४.४५.४४.४४८.४ ब्रू स्थाद्य साम्री अर्द्य साम्य होत्। या अर्द् मुर् अर्था प्यत् श्री द्रापा हैं र केरा न्नो प्रम् मुन्या अरके अरम वे श्वे र प्यने र प्यम प्यने न प्ये व रहे।

गहिश्यम्दिश्याविदेःक्रें मान्ने त्यश्चेत्रम्य न्यस्ति । स्वर्ध्यम् स्वर्धम् स्वर्धम्यस्य स्वर्धम् स्वर्धम्यस्यस्यस्य

## गशुस्रास्य ह्यायी कें या या विश्व

#### त्रार्वे निर्म

त्रः विश्वा विश्व व्याप्त विश्व व्यापत विश्व विश्व व्यापत विश्

हामहिशाग्राम्यान्य म्यान्य विद्या । विवाय विवाय में पाय प्रमान्य विद्या हो हो के सक्ष्य श्री का स्ट्रें से प्रमान स्वाय स्वाय

हे जुः इपहिराने स्टें प्रान्य ग्राय्य है है प्रान्य सक्त स्टि हुन <u> ५८.स्.२८। ब्रम्परम्ब्रुप्तम् ब्रम्पर्या</u> श्रम्प्राच्या बुव व स स द । बुव व स हे हो द द । क्रु मेर र स स न स न द । क्रु मेर र स न्यान्या है अअअन्यान्या है अन्यान्या है अन्ति है अन्ति है नन्दा है अनिवे क निर्मान्दा ग्राम्केंग्रास खेंयान न्दा है अनि ळाखुर्यायान्दा हे यानकुदाळाखुर्यायान्दा हे यायान्तायान्दा हे या व्यापान्ता कुःभ्रम्भ्यस्यस्य स्वर्गान्ता कुःभ्रम्भ्यस्यस्य वरान्ती हिः यानक्कित्रकान्यान्ता है।यानवि।कान्यन्तिः देवानाने वे व है।यदे। <u>न्श्रेयःवर्षेत्रःश्चेःनकुन्ःळःन्नरःनन्दःनन्नेःळःन्नरःनःयःश्चेनःयःवर्नःहेनः</u> येग्रथाने सृर्दे सेंग्रथान्य से हैं सामये हैं माने मान स्थापन से प्रमान है। है सा श्वेत्यार्शेन्यायायायश्चेत्रयायदे छे त्या श्चे । श्चित्यम् श्चे न्यायदे र्श्केतः र्षेर्परिष्ट्रीम् देशक्षेत्राक्ष्मान्यस्य व्याप्ति । विश्वापित् देवा हु है । अप्त कु द : क : व द : a द : a ५८। है सन्वे कासुराय ५८। वक्क ५ कासुराय स्वर्के वारायशा है र्देवे पति क प्रमासी देवे पत्र प्रमास के स्वाप्त के प्रमासी के सार के प्रमासी के सार के प्रमास क नेरस्य बद्द्र अर्क्केंद्र ग्रह्मे ग्राप्य हुकें। । त्यार्केंद्र दुर्धेद हे द्वा र्श्टिन्नेन्नानिः स्ट्रि । स्यानः नेन्न सन्यन्त्र्त्वान्त्रेन्यन्त्र स्ट्रिन् न्धेन्'ग्रे'न्रअन्ता कर'यववाय'न्चर'ग्रे'न्रअन्ता न्याबुर'न्र ग्रम्भारम्भारमे नाप्राप्त्राप्रमाप्त्रम् स्वरास्त्राप्त्रम् स्वराप्त्रम् स्वराप्त्रम् स्वराप्त्रम् त्यन्तर्भेष्यर्धेवरम्यन्त्रम्नेर्देषेत्याद्वयार्थे। ।देर्पायर्व हेर्ज्यार्थेट्र हेर्ता धरारेंदेर के याचे वार्य स्नर्य सुरस्क्रया वर्हे स्थायः श्चेत्रज्ञ ग्रवसर्श्वरायात् तुः र्षेत्र सदे त्त्वः तः ते र्श्वेतः त्त्वः वः कुराधेतः सर सर्-में से मान द्वा है साम द्या न न न न में द्वा है ता है ता है साम द्वा न से ता है ता है साम द्वा न में से स वया त्यान्या न्त्वात्राची विवासन्या समेवि हान वहेव साधिव सम न्दर्भे न्याव न्धेन यहिष्य वे त्राय यही यहिष्य । ने प्यत् सर्वे न्दर्भ कुष्य न्दा अकुन्दा नर्वेदे हुन्न नवेदे ने न्त्र्व ही न्या न न न न न न न गान्दा क्रेंबन्दा क्रकेंद्रायी हानानि वित्रीत्यी न्यारे अयी। देवासन्तर्भेत्राक्षेत्राक्षेत्राचित्राची ।देवे देवासन्तर बुर-द्वे-द्र्य-वे-द्व्य-ह्य-ह्य-कुर-वो-क्वेय-वर्ड-द्व्य-ह्य्य-क्र्य-ह्य-वरे- चःभ्रम्भः प्राची भ्रम्भः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष्णः विष्णः

तुष्णश्वराधे नावे। न्वराष्ट्ररावि नुष्णि नेवरावि केना ने स्थान ब्राह्म स्थान वि केना स्थान क्ष्रिया स्थान स

र्यानविराधराधेराने। न्य्वानधिरान्ध्र मेंब्राने ने ने ने रो वाराना वर्तेर में बक्द मी ब्लान मुख्य रे पेंद्र या दे वे वहे वा हे व संदे व सूद रद सबुव पर नक्ष्व पर्दे । र्या द्वा रु प्यर प्ये र रे र त्व्व र र र त्व्व क्षर ५८। रश्चिर्द्रा र्श्वाप्ता रश्चर्द्रा र्श्वरहेरोरे रे रे रे ख हारा पहिरारे व्यट्टायाने के मार्थे क्षेट्टाय द्वाय विषये द्वारे में मार्थाय स्त्राय के क्षेट्र में । इ नरः श्रः रेस्रावस्यान १९ ग्यारा में निरा हो दायि के निहें दारा से सान हें दान दे विरः ६दः यः र्ये अः नरे : व्याः ५ : हें ग्रयः यरः ग्रः नवेः श्रेरः ५ : रग्रयः रे अः दयः नर्हेन्यर गुःश्ले वें प्देवे न्या केंग्या शृवे त्रुपार प्देवे के या न्या पदे यःहेवःबॅं धेवःवः चीनःकॅं ५ क्रे अःतुः ५८ महः यदिः उत्रायः हिं ५ नक्षेवः यरः हें ग्रायार्थी वियायया यह दार्थी प्रायाय सहता स्थाप स्थित । यम्हेवारार्श्वेशवहेन्यम् नुदेव विषयि ।  

### ग्रम्भःदगःदगःन्द्रिंदःधा

निष्ठ्यायान्त्र्वान्त्रः भ्रीत्रः विष्यान्त्रः भ्रीत्रः विष्यान्त्रः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्य

दे 'व्रश्नाक्षुद्र' चर्र' यशुर्य प्रविश्व के अधि । व्यथ्य प्राचित्रे व्यथ्य प्रयास्थ । व्यथ्य प्रविद्ये व्यथ्य प्रयास्थ । व्यथ्य प्रयास्थ प्रविद्ये व्यथ्य । व्यथ्य प्रयास्थ प्रविद्ये व्यथ्य । व्यथ्य प्रयास्थ प्रयास्थ प्रविद्ये विद्ये विद्य

पि छेपा व से। यह या नि ये कि या में व कि या में कि या में व कि या में कि या मे कि या में कि या

नहेग अर्ट्या नुष्रागुरासूरासर्ट्या प्रतुपात्स्यरागुरानहें प्राय नुर्दे । श्वरः त्वरः ने 'नवा' व्यः श्वें न श्वे न श्वें स्थ्रयः य नवावा य वे श्वे र न् । विं न श्वें न नन्गायेग्रयम्याशुर्यासदे केंश्यन्यानयास्य कुतुरानन्। नश्चेत्रायमः हैवायायान्यो श्चिमाने मिन्ने या स्वार्धियान्य स्वार्धियान्य स्वार्धियान्य स्वार्धियान्य स्वार्धियान्य स्वार्धिया स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिया स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्या स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स्वार्धिय स सर्केग्। मुप्तरें न्। स्नान्। ने। न्। हिन्। स्विनः सेनः देशः सान्ना क्षेत्रः नेसेन्। नुः देशमाम्बेशम्या नमे वर्त्तसम्बन्धान्य मर्थेयानम्य नविदेशस्य श्रे नार्षे न नावना सर्शे देश स्थापर न्ना स हे न् श्रेश हैं नाश सर्हेन स क्षेत्राधित्राम्यानेवे भ्रित्रानभूवान्वे यार्थे वियानहें त्रयार्थे वान्वे याग्राता नन्गाम्यम् नुः धेव स्था भे अ श्रे सूखा ने मे मा न से वा सार हिंग्या सा ८८। नश्चेत्रः धराङ्ग्याश्चात्रशास्यात्र । विष्यात्रात्र । विषया । विषया । कुषाविस्रयाग्रीसासहसामान्ता वरुसामार्सेतावस्त्रवास्रयासहसामान्त्र केंशाग्री वेंदिश क्रें दार्श शेंदा बरावदे सर्दे वर्दे दाराश सहसामर ग्रुटा वा हेन्धेव प्रमा ने न्वा हे सूर वर्ष्य न्या हैं वर्ष नेवा हेरा देश प्रमासुर नरः हुर्दे। । दे १ क्षरः नक्ष्मनः दुर्वे अ स्त्रे द्वान्यः व न व स्त्रान्यः स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र गर्षेग हेर्प्य सेर्दे सूस्र पदे देंग्य प्य नस्य नदे हेर्प्य हेर्पे स्व यन्तर्त्रदेश्कुषान्तर्वेषानदेगा बुग्यानक्ष्रनेराधेषाळन्।हिन्गीया समित्रःसं या सदे पर्ने अपन्य मुणावया यर हुर्वे। । समित् सं अण्य हुर्ने यानुदेखन्यन् नेयास्य हुःयावयाः यस्य । विन्य ग्रीयाः यापन्य सेयाः से श्रीनः वर्क्केंद्रेन्नर्नुन्नस्रेवन्नग्नर्नुक्ष्णियाव्यक्ष्मिन्नर्वेद्याम्बर्केवन्त्रीः नर-तु-वित्राण्या गुर्ते विश्वास्त्र न्यर गुर्दे।

यावर में या गुरा पर र गुर्ने या से द गावर या गुर से दिने या सार श्रुयात्रानेराधेत्रकराधिराधेशाळ्ट्याया सक्द्र्यायराश्चेत्राया स्थया प्रा ग्रम्भागह्रम् इस्रभाग्द्रा ग्रम्स्यभाद्रा ग्रम्स्यभायागुर्भागः न्दः नडमः मः न्दः। वे सः न्दः नडमः मः न्दः। वहेग्रमः मः नदः नडमः मदेः न्नर-त्रव्यूर-नर-वात्रशःसर-हरिः वेश-त्यःनर-वात्रशःसंहेन्यः श्रुरः नर हुद्दे । दे उस हु अ सम के वा वाय सूत्रा दा र त तु हु द न दे द्वे मारा खरार्वेदासाद्या पार्हेदाद्या ख्रियाचेदाधाद्या छेदासाद्या अवसासरा तुःनदेः द्रिंशः देः वास्रावसः प्रदा नसूनः प्रावसुस्रासः विनः प्रदाः व्यामा के किया सम्यान से प्राची स्थान से या सामा स्थान से सामा भूतशायदीरारे पे त्रशाददेशा शुः शाय हिंदा या पहिता ये खूटशाया शे शेरा भूतशायदीरारे पे त्रशाददेशा शुः शायहिताया हेता ये खूटशाया शे शेरा वर्यित सर्दे तर्दे व पार्शे वा वा या नहे व व वा धें द्वा शुः ले वा पदे न श्रुनः न्वीं अः सरः वशुरः नः न्वो वन्त्र क्ष्या सः यः सैवा अः सः हेन् ग्राटः नहेन् सरः <u> न्यायःचवः अरुषः क्रुषः ग्रेःचश्रुषः पः न्रः अह्यः वृषः चश्रुषः परः हें वाषः पः</u> वेशन्त्रशायायायारिशासराश्चरानरानुदे ।कें प्राध्यायान्त्रेत धरः हैं ग्रां वेदः श्रेषः वर्गाः भेदः धरः श्रुवशः विगः वेषः रवः श्रुदः वर्षेदः र्सेन्य भाष्ट्रीय स्थान स्थान

प्रस्ति हुं स्वर्णक्ष स्वरत्य स्वर्णक्ष स्वर्णक्य स्वर्णक्ष स्वर्

## र्चेन'मा से 'हममा प्रमानम्य नियान से निया से नियान से नियान से नियान से नियान से निया से

पहिशासके हिससार पश्चित्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र

### ग्रव्याञ्च अदे इस्य प्रविग प्रवि रा

त्रासं हो। ते स्वरार्थ्य स्वरार्थ्य स्वराय्य स्वराय्य स्वराय स्व

ग्रुम्यः हैं प्रम्मः लुः ले वा विष्ठेया वर्षे ग्रुमः लुः मञ्जानसः मरः रदानी क्षेद्रावस क्षेत्र क्षेत्र की प्रति गुव हु क्षु द्रायर सुदान द्राय की द सर्वित्रक्षावेशविश्व दें दें स्वायश गुन्ति हु रासर द्राया यग्रीद्री विश्वात्यम्यन्तराये भ्रीमाने वा क्षेत्रवराने। देनाय्यना निन्दारादे ज्ञान (ब्रानिक निक्ता विष्ट्रान्य द्या (ब्रानिक निक्रम्य प्राप्ति विष्ट्रान व्या द्धयानभूतामायाधीतामवे धिराद्या इसायग्रेदातासाभूसाभूरावळेसा धर्वित्रेत्रेत्रे श्रेन्याया सके प्रात्ता नश्रेन् श्रेत्रस्य स्यासके प्रमात्वे स ५८। वृद्धः यात्रश्राक्षवाः कवाः ५८। श्रवाः ५८: व्यूवाः भः ५८। विः ५४: ५८: ५वोः नदे द्विन्य गी गुन ह र्रे दाय इससा न में दार देश स्टार्ट में सेट द्या र्रेस हे लु नर मुश्रुरश परे छेर ५८ । रह रह मी श्रेर दश स श्रू श द छ न दशःश्चेंशःहेःवःदर्गेशःश्वा

यिष्ठेश्याची यावश्यायश्यावश्यायश्चेत्राचग्रामःहे सूमा ग्रुवे व वात्र अपने 'ख्रुप्त व वेत् 'व खेवा 'य 'र्से वा अप्ता । के अपने अपने वा प्राप्त । नश्चर्या अंग्रिया राष्ट्रीर्या वाल्य ग्रेन्-त्रमानुमार्गि नियाम्हेन्याम् न्याकेन्यास्य सुन्य स्थान्य । मान्याने केन्यान्न मार्थिया नर्गे साम्यसाने सामान्य द्यी नं न मार्थिया होन्य सास्य अदें वद मधें मारदे नदमामी श हारें विद्या हो द र मात्मा में विश्व न हैं द यः वश्यकेव में यान स्वार्थ । याव या ने किन की वर्की न या से या निर्मेश यदसन्भागविष्ठामी विम्नान्य विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषय नःवर्दे न्वन्यायी शा हुर्दे लेवसायाल्य हुन् न्याल्यायी लेसाय हें वासायसा क्रेवर्स्यान्युवर्गर्म् । याव्यादेरि । याव्यादेरि ग्रीस्यापाउवर्गीः स्वारास्य नवसाने सामान्त्रा भी भी मारा उत् भी भूग ना भूग ना भी सार्वे भी मारा श्रूर्य प्रदे न्यू या यो या हुर्ते विषय यावव हो न न या विषय में विषय हैं व या नियाकेत्र में यान सुनायम् नुमें। यात्या ग्री सुराय से से में नियम प्रेम स् नेविष्वर्शेन्यान्ययाभ्यानिष्यार्भावेषा भ्रित्योन्ते। इत्यावस्यान्य सर्देवरमासी भी सामासी दायते सी सामास में निर्मा त्या के निर्मा स्थान से मार्थित सामास सी प्राप्त सी सामास सी प क्षःश्वरःश्चे नर्गे शःग्रदः ने शःगाववः श्चे ः वर्शे नः श्वे यः नः नदः श्वे गः व्यः श्वे रः नः विशः श्वे रः वर्षे विश्वे रः वर्षे ।

माशुस्रामानी दे प्यवदाविमा ज्ञायसाविष्या मानसाया वन हुम हो द धरायर्देराधये द्वो यत्त्राया छो स्रादे द्वो यत्त्र श्री सामन्या यो यात्र सायदे । याववात्रम्भी यथायी क्षातु भे मुद्रि वेथा ग्रम्म में वाया विश्व के देश नश्चनःसरः गुर्दे। विवः हरः श्चेरः नः यावयाः ग्यरः हेशःसः यशः न ह्वेयाः सदेः वनश्येत्राध्याने से जुन्नराम् स्थान से निष्या स्थान से निष्या से से निष्या से से से निष्या से से से से से से स *ॺ*ढ़ॱढ़ॖॸॱॺॱॻॖॺॱॻॖॸॱढ़॓ॺॱय़ॱॺॺॱढ़ॗॕॻॱय़ॸॱढ़ॹॗॸॱॸ॔ढ़॓ॱख़॓ॱॺढ़ॱढ़ॖॸॱॻॖ॓ॸॱय़ॱ न्याया रावसा यर म्र म्र मी नसस राम्याम निवे में साम्याम निवेश निवेश गर्भेषानाधेनामवे भ्रेम न्नाहराक्षे ग्राम्यन एत्र मुराग्ना न्या है। क्ष्र-ग्रावेत् व्याप्र-ग्रम् ग्रम् म्याप्र क्षे स्राप्ते प्रावेत् स्याप्ते स्यापते स्याप्ते स्यापते स यर हुरें वेश न हें त्र य न्या के तर्रे श न सून यर हुरें। वि तर से सूर वहें वारार्शियायायव तुराहरा से हा चराच निराधा दिए विष्या क्षेत्र बेर्नो देनेश्वेश्वेरवह्नायस्यायस्य वर्त्त्र ह्या ह्या वर्त्त्र हो नवे नवावा गुः भें नः यान्वे निर्मासाधित सवे श्री साम्या प्राप्त वाया है। ववःहरःग्रुयःवःवेयःनह्याःयःस्रवःन तुरःधेवःयवेःश्वेरःर्रे। विवयःश्वेर्यः ८८। गविष्यशर्भेरवर्दा सग्राचराग्चरा गविषयशसग्राचराग्चरा वर्देन्'स'व्य'न्नो'वर्त्रम्भ्रीशः श्रीं नाव्यः श्रीम्थासः भ्रीत्रः न्यात्माप्यसः भ्राविदः यग्।नःश्रुन्त्रयन्तुन्नरःवर्देन्यायावदेन्तुन्नरःवृदेःवेयावर्देव्याः न्याकेत्र्रेशान्युवायम् जुर्वे व्रिंगाया सेवायाय वे विवायस्य प्रक्राप्त विवायस्य

महिश्यसही दें त्याद्वश्यीशयाद्वश्यस्य हे द्वर्त्ता महिश्यसही दें त्याद्वर्य श्री श्री स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

चित्रस्य विकादित्र विकादि

सर्हेन्। स्वान्त्रस्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वानि स्वान

## स्यायायन्त्रा

यहिश्रामाश्राम्यान्त्रान्ति । प्राचित्रां विश्वास्त्रान्ति । प्राचित्रां विश्वास्त्रान्ति । प्राचित्रां विश्वास्त्रां विश्वास्त्रान्ति । प्राचित्रां विश्वास्त्रां विश्वास्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्राच्याः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्रयः विश्वस्त्

यहिश्वस्यस्य विश्व हैं न्त्र हैं ने न्त्र हैं न्त्य हैं ने न्त्र हैं न्त्र हैं न्त्र हैं न्त्र हैं न्त्र हैं न्त्र

व्यामयार्थे। वि.च.वर्षयावर्षाःक्षराचर्राःचडयामराशुरार्यायाशुरा सूसामदे दर्गे दान स्वापान स्टामी सामेदान सामा विवासे दान द्वा स्वापान मन्दरादिकादन्यानायाम्बर्धान्यस्व हो सूरानाधेव सेवादरासे यदःनेश्वास्यादर्गेद्दाराशेयानरःत्रापदेः भ्रेतः । श्वेनाः पठतः ग्रेः । नदे इसाम द्वा इ इन्नि श्वर न र में या हो र र या निव हो र र पहिना व्यामान्द्रायदेयाक्ष्यायद्वामान्याच्याम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम् न्वायः वः र्ने रः व्यादः वादः वाद्यः शुः वहें वाः धरः रूटः वीयः हो नः न्यः गवर हो ५ ५ १ ५ इया त्रा स्पर्म दे ५ मा मी क्षेट ५ खें न इ खें सम से ख़ स <u> ५८.सुच्</u>र । ग्रेट.२.५६वा.चेश.सुच.सुच.स्ट.मुश.सुच.सुट.२.वावव. होत्-त्-वह्ना-त्र्यायाधेवादी-यद्भायाधे-त्यायराम्बदायावर्षयाया र्या श्री रा से दे प्राप्ति ने प्राप्ति स्वाप्ति प्राप्ति प्राप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स् यानर्रेयानार्यसम्भियायम्। मयान्यस्य मिन् स्टामी यान्यान्यः यानर्रियानरारि गुलेन गुर्यागुलर्यानायार्द्धराराधेदाने। याया वर्षानार्वे त्यायमान्मा गुमाग्री प्रमम्भारत्र ग्रीमा प्रमम्भारत्र प्रमाया प्रमा यदे हिम न्येरवान्य हाति हेना सरस क्षा राष्ट्रिया वि हेना हन र्वेशःग्रेशःवर्षायात्रीशःसःचिव्रःदेशि

गहेशमायाविश यदायमा मुद्रासें मुद्रासें मार्थे प्राप्त प्रमाया मुद्रासें मुद

पि.श्रेगाय.म्। ने.श्रायबर.म्। यक्षात्रप्राप्ताय.षा.श्रायापर.क्षेत्रश्री. ब्रुवा'स'सु'तुर्स'र्वे स'गुर'दळव'रादे'रुंव'विसस'सु'से'ते व्युर्र'वा रूर' नविवाग्री।पावायार्थे नात्ताय्ये पार्थेन्यये सुराग्रेन्यः सुराग्रेन्यः स्थान वळवारावे खुवा विस्र शास्त्र प्रमान देश स्था हिस्र साम स्था स्था हिस्र साम स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स यदे ळ द द्वो क्षें द यस समासमा सार्वे मा ने द र द विव की वि सार्वे वाया वहें सामा है। दें निष्ठा यथा द्वा विस्थान माने प्राची स्थान है। क्ष्राचानवे में इस्रायायाया पाराया सुराया सुराय वेरःर्रे । द्धयः विस्र १८८ थ्या प्रमेतः वर्षेत्रः वर्षेत्रः सरः रे. व्रह्म श्रुराने ख्राया वार्या करा वरा वर्षे राया प्राया विदानी व्याया विदानी विदानी विदानी विदानी विदानी विदानी विदान ८८। रम्भून स्मार्था स्थान स्था नदे'नसून'नर्रे अ'ग्वन सद'र्'र्वे अ'र'सुर'र्रे ।

यहिरायायायहिरा केंवार्देवायहेराया नेरायदे पेंदाहवा देव नेशमंदे थें व न्व कें। । न्य में त्य महिया म्य वह व में वे थें व न्व मानव वहें तर्नु वह्ना मदे पेंतर नित्रें । निर्में दी दुष्य स्व सर में साने पाहे स गरायाञ्चरानेवा नक्ष्रनायागुर्याग्री हे र्ट्टन्ग्री हूर र्या ग्रम्य रायर् न्दायन्यानान्दासदेवायवेगाव्दासदेवायमानेयायकेन्यासून् यदेया वहें त'सिम्स देया यासया नि हैं त'ते। हे हैं द या शुस ही हैं या देत नहर नः भ्रे नहेन् प्रमावहेन् प्राप्ता द्वापाय्य स्त्राय्य स्त्राय स्त्राय स्त्राय स्त्राय स्त्राय स्त्राय स्त्राय सिवश्रास्त्र के के के सिन्य प्रकासिक के प्रति स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के सिन्य स्वास्त्र के सिन्य सिन् र्शेर-वर्तेर-व्यापार्ट-रक्ष्याध्वायर-व्याध्यास्य म्यापार वै। यर्देन हे अन्दरसुर या नहेन न अर्थे क्षेत्र गारु या है या पर न्या पार द द्ध्याध्रवासरार्वे सास्रु रावसाधारायां वेता वासयायां वे। रहावी सासे स्रेटी गशुस्रान इस्राया ने मान्तराया याया या नर क्षेत्र त्या या नरा व्हाया थ्राया व्हाया व्हाया थ्राया थ्या थ्राया थ्राया थ्राया थ्राया थ्राया थ्राया थ्राया थ्राया थ्राया यर विश्व मुन्य निश्व विश्व विष्य विश्व विष रटामी अपन बुटान अपन विनादहें न द्वाद्या न्या में न प्राप्त कें त्राध्न स् यर विश् श्रु र नश्य थ राजिन वि

यहिश्रामार्ट्रेन् विश्वामार्थे प्रति प्रत

प्रश्चान्त्रेन् अं म्या अं स्वर्णः भ्रा अं स्वर्णः म्या अं स्वर्णः म्या स्वर्णः स्वर्

द्याश्चर्यक्ष्यायि छ्या विस्रमाने ख्या प्रदेश होस्या छी। वस्याय क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्याय क्ष्याय

महिंगार्गे। नश्चनारामश्चरायार्ग्यात्र्यायार्ग्यात्र्याः स्वार्थे । नश्चनारामश्चरायार्ग्याय्याय्यात्र्याः स्वार्थे । नश्चनारामश्चरायार्थे । नश्चनारामश्चरायार्थे । नश्चनारामश्चरायां ।

यश्चित्रस्ति स्वत्राची स्वाप्ता स्वाप्ति स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्

गशुस्रामासुत्राशुस्रार्के ग्रामाने साग्री भेजान त्रामाने साम्यान र

क्रिंग्यान्त्रविद्वा ।

क्रिंग्यान्त्व ।

क्रिंग्यान्त्व ।

क्रिंग्यान्त्व ।

स्वायाने अप्तान्ता के अपतान्ता के अपतान के अप

विश्वादारी सुद्रश्यार्क्षवाश्वादाविश्वादि श्वादि श्वादि श्वादे श

यही स्वाहिश प्रवाहित स्वाहित स्वाहित

८८.क्ष्माक्ष्मभामञ्चूरामवे ५ में भाषा व्याप्त स्वी सार्वे ।

याहेश्वानाश्वा र्क्षण्यायात्राचित्राचित्राच्यात्राहेशः वित्राचित्राच्यात्राहेशः वित्राचित्राच्यात्राहेशः वित्राचि

गहिश्यानि। सुश्यान्त्राति से स्थानित से स्थानित स्थान

मशुस्राम् है। हिन्द्रिन्द्राय्याद्रस्रसेस्रस्यस्य प्रस्पान्य । हैन्द्रा मेंद्रमे प्रदेश हिन्द्रायस्य हिमामें।

मशुअन्यन्ते। श्वीत्रः खं व्याची व्यान्य विश्व श्वितः स्वरे व्यवस्य स्वरं विश्व स्वरं स्वरं विश्व स्वरं स्वरं विश्व स्वरं विश्व स्वरं स्वरं विश्व स्वरं स्वर

गहेशपादी हें तर्स्रामाश्चरपादे श्वेरप्रस्थावन्य भाग्यावन हें न

यदे भ्रेर्न् र्स्निय से र्नो सामसाम से से मिनाय है र रे र मानरें साम प्रेम प्र र्ट्ट्रिन्युन्त्रभागविन्ट्रिन्चेट्रप्रट्रिभाग्ट्र्य क्रम्थान्यस्था उर्ग्रीश्रासकेर्प्सर्देश्याप्तरा हेर्स्स्मरायेत्रम्या वर्षेस्याप्तरा नर्ड्र माले या नुर्देश । नुर्वा नर्ड्र सम्बे कुन् ग्री खुला विस्र या नुराने । वहें बर्दरा नेशर्यर्दरा वर्श्यच्या इस में वर्दरा इस में वर्षे कर मः बदः से ः क्रे : ने सः मद्दः सर्वेदः यादे । यादे सः याद्यः स्वा विदः प्रवे : से यादे । स्व यह्। विर्दर्भन्ती क्रम्भ में विष्ट्रम्य में विष्ट्र ग्री'प्यद'यया'प्येद'सेदे'सेर-५८। सुट'सेर-५०५'य'यर् बासा ग्रुबासुट' र्रेरक्षेर्रात्रेरविरप्र्यायक्षेश्रायक्षेत्रक्षेर्रायक्ष्यम् विष्यार्थे वर्देदेः भ्रवशःशुःवर्षानः वेशःयानः वीशः वश्वन्ता द्ववः विश्वशर्दः स्व यालेशाम्यानसूत्रायाधीयवदादे। यदेरानसूत्राची ख्याविस्रयाते विग्रयासेटा ग्री:र्सुयाविस्रराधीताया विषासेत् ग्री:र्सुयाविस्रराद्दायुत्रादर्यायानेसा मश्राध्याप्त्रिया वें महार्थे माने महित्या वें महार्थे माने महिता महिता वें महिता कें महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता के महिता कें महिता के महि वर्यायाक्षे वर्दे द्यावययायायाधेव ययायायक्ष्यायायायायायाया स्वार्थित वर्द्या नःश्चेनःय। र्ह्वें श्रेगान्दरः युक्रः प्रशः विद्वेरे वदः न् भेशः प्रमः प्रदः व्यापिः मुना निवास पर्वास में भें भें दिन के सम्मेर पित प्रमान स्था दिन के स यदे खें त न्त्रा विक्र व्याया स्वाया यदे खें त न्त्रा के वा दें त वाहे या ने या यदे थें व नव कें।

न्दःस्री नश्चनःमदेःगविःइसस्यान्यसः हुदःनदेः होदःगविःन्दः

कुः सळं व 'दर हो द कुः वे हुर व धेव 'सस दे सर्व सर वे स स हे द दर ने यः नक्ष्रनः प्रवे पावि दे पाशुस्रः भ्रे। नक्ष्रनः प्रमः ग्रुः नः प्रमः प्रेवः पावि प्यमः धिवासार्श्वेषायार्वेदाश्वरावास्त्रातुः त्राप्ता दे वर्षेत्र त्रुवा होता स्वीता भेरद्युर्न्पर्युः निर्वे सुर्न् निर्मुन्यये ग्वि सूर्न्य स्थायस्य स्ट्रिन्दे धे अयाहिकामार दुर है। भ्रिरमाने दी अध्या ग्रेरमाने दे ध्याप्तर ग्राटः त्रम् प्रदेश स्थान्य प्रत्या के स्थान के वेशन्त्रत्या न्येर्त्रस्थयः श्रेन्त्रेन्त्रग्नान्य वास्त्रीत्ये श्रेत्र बॅरमायायर्रेराळग्यायीयाहेयायायी कंरमायायाय्येर हुत्यायायहेत्य्यायी क्रम्भः श्रुद्धित् निर्मानित्रम्भनः नामानिक्षान् निर्मानिक्षान् निर्मानिक्षान् निर्मानिक्षान् निर्मानिक्षान् निर्मानिक्षान् निर्मानिक्षान् निर्मानिक्ष वळवानवे कुं सळन् न्याया गुरहे यान्येयाया र्यो । गुर्ने नुकु से कुं र्खेयाया हे । गिवि'नश्रयास्भ्रीरानासवरात्रुगानविदे। । गुरानासरेतासरावेशासाया गिर्देशके। व्हरायासानस्यापदे व्हरायानेसामान्या व्हरायानस्यापदे हुर्न्न नेश्रासर्वे । प्राचेति होर्माने त्यश्चर प्राच्या प्रस्त राष्ट्रात्रा महिराया नडरायदे हुत्य नेरायद्रा हिरासु नडरा नक्ष्रनः परिः इसः परः नव्याः परिः नगदः पेतः है। देशः नक्ष्रनः परिः सळस्य सः इस्रायरानव्यायदे भ्रम् इस्रायने राष्ट्र स्रायन् स्रायन् स्रायने स्रायने स्रायने स्रायने स्रायने स्रायने स्रायन वेशरादे द्योय प्रम् सूर विस्र सु गु न स्या मुस्य वेश द्रा मुन परे नगवःसुरःकुषःभेवःवनवःहोनःव। वेशःगशुरशःसःसुरःर्रे।।

## हेशनहसासुन्त्

हेश्रास्त्र स्वरुष्ण स्वरुष्ण

यावरःयदः हे अःशुःयावरः यः यवरः यावरः यः शुः सुदेः श्रुव अः यवरः यवरः यवरः व अः श्रुवः श्रुव अः यावरः यदेः

है अ'शु श्रुवा विवाद व

न्वावायदे हे अ शुन्वावाय वडशयदी न्दर्भे स्थी स्वर्थ हो न नगनान्य अस्त्रे अस्त्र से स्वासी स्वा हेशःशुःस्रुनःपःनठशःपःतेःस्रःधुःनवितःप्रज्ञःनवेःन्गेःस्रुनःसर्तः नश्रव राष्ट्र नुर्दे । द्याया रादे हे अ शु यावद न न र र र दी द्या श्रव नु वि'व्याव'न्यान्यान्य व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त व्यापत नःभुःतुर्दे । हे अःनडअः इस्रशः ग्रीःनडशः प्रदेः सळ्दः हे दः देनः स्राधः देनः वे'व। श्रुन'मंदे'हे अ'शुःश्रुन'मंद्रा ग्वर'नदे'हे अ'शुःग्वर'न'द्रा <u> न्वावा प्रते हे अ शुःन्वावा पः वरुषः पः वाशुः अत्ते वरुषः प्रते अळ्दः हेन् शेः</u> वर्दरहे। सूरावडराग्री देवाया सार्दरावर से दार्थे दारे हर हे या सुप्तडया यदे द्वे राय दे वाट बवा वी वें वा हैं वा वर्ष यदे ही र हैं। व्यूवा स दुवा दे ब्र-नडशःग्रीः अळवःहेन्देनःहे स्र-ग्रीः ब्रूनः पदिः क्रुः अळवः देनः वशः न्यायान्यों अयम् वरुअया अया अया अवस्थित स्थित ही मान्याया स्था नरुरानियाययानसूर्व विराधया स्वाप्ताया स्वाप्ताय स् रास्री दर्गरावास्त्रिवासरास्त्राचा इस्राया स्वाया स्वया स्वाया स् कर् शे सुन् शे त्व्र रहें विश्व माश्रु रश्य प्राप्त हैं न्या श्री माश्रु र श्री माश्रु र श्री माश्रु र श्री माश्रु र श्री माश्री र माश्री

याडेवा वी । याशु अर्थ : कें या दें दें या है अर्थ : भी अर्थ दें : धें द : हव : दें। दें अर्द्य : र्शेट-५-१८-१ ने स्थान स् यशनक्रिंग्'राचु'नदेक्टाइसश्सूर'नक्षेत्र'रासर्देत्'यर'लेश'राहेर्'र्रा दे'गहेशके'हें ह्या वात्राचाया हें राजादा वात्राक्षेत्रायायश्चर्ह्हेगाया न्वीं अःश्री । प्यतः नद्दः भ्रीः नद्दे नद्दे नद्दः गिवे दिर नशसदिर केंग्र मिर्ग विश्व निवर निवर है। दें में है दें में शिक्ष भी वे में राया के त्या के वर्रीरः खुरः दुर्वे । ग्रेनः भवेः श्चें त्र या श्चें प्यरः ते श्चें रः नः इवा विवाने स्थे प्रेयः यन्दरनम् अद्रायम् नुष्यायाया द्वित्र स्वायम् न्या नुष्यायायने ह्या नहेन'मान्त्री ययामायानहेन'माप्पराष्ट्री'सी'नर्भर्नास्यामा रुट्राय्के नगरनिः भूराने । नगमारिः क्षेर्निः परिः क्षेर्रायाः विश्वास्ति । नगमारिः क्षेर्निः विश्वासि । नगमारिः क्षेर्या विवार्ते। विद्यामानादेः भ्राप्ते स्थान्धे प्यान्ते व्यान्ते स्थान्ते । व्यान्यान्यः नेयामार्द्धवास्त्र विद्या यह्यायी नेयामार्थिय । हेवार्यी क्षें वयार्थी त्या दी यावरायरा चेरायण्या भेरनेरायरा चेरायाचिरायरा है। भेरायरायरा वे.क्रेग.त.क्ट.र.विश्रागटाद्या.धे.वज्ञी श्रापशास्त्र क्रवे.त्राविश्रागटा वर्वेद्रायास्यापुर्वेदावसायक्ष्मा । श्ववाया ग्री विदायुः खुदायदा खुदे वाहिदारुः वियाम्बर्म्यायाः भ्रानुर्दे । ने न्या सर्देन सर वियास है न न्या नेया पर्वा

निरंदिन ने अपान सून हैं। । किंना ने अपान है से से मान माने सिरंदि माने दर्यान कुराया समदार्गाप हिंदार् मेंद्राय हिंदारी विहेशाय हेशान उसा ग्रीः भ्रम्य राष्ट्री विष्य दुः विष्य प्राप्य प्राप्य प्रमान्य विष्य प्राप्य प्रमान्य विष्य विष्य म्बर्याकेष्यात्रात्र्वात्रम्यक्ष्य्यात्रम्यन्त्रेत्रम्यात्र्वात्रात्रात्र्यम्य यायाम्यान्यान्याद्वा । मानिमा नद्वनायान्यो र्सेमानस्वायमा हेपायान्या वें द्वा दुःववायायादे सें सें राबर प्रवे सर्जे वार्देव पा कुया पर प्रयापाया यद्राक्ष्यायायायायायायात्राच्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय नवस्य हे नर वर्षेर ने स ग्रम् ग्वित व्य नात्र स स वर् ना सर होते हो स गश्रद्यार्थे। र्दिन्दिन्देयाहे जादयाग्री स्वापिसया बसया उदा ग्राद्वीया राया वे वा विवास्याम्यान्यान्विवासायास्यास्यात्र्यात्र्रात्राचान्याः विगाः अपित्रां वार्यायाव्या वया वया व्याप्तां । दे द्रापा वया व्याप्तां व्याप्तां व्याप्तां व्याप्तां व्याप्ता व्यायानयाग्राम् देयान्य न्यायान्य विष्यायान्य विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय য়ৢ৴৻য়৻য়৻য়৻ঢ়ঢ়৻ড়য়৻য়৻য়৻য়৻য়য়য়য়৻য়য়৻ৠয়৻য়৻য়৻য়ৢয়৻ वर्गे नर गुर्वे।

यश्यः देवाः संभित्रं व्यान्य स्थान्य स्थान्य

गिविमा नर्द्धत्रः याशुर्यः मेना या दे सामाशुर्यः श्रूम्याया ने विष्याया न्यायाया निट कें राष्ट्र नट से ख़्द्र द ने राग्य ह से गाद्र राय हिंद्र स्कु विट सके नर्भानग्रीत्या हे नर्भिर्भे भी गुर्दे अप्राध्य मार्थे । वर्दे अप्राध्य नर्डेस्रायायासूरानायतुरानरानसूनाया कृत्रायाया न्यानर्डेस्रायाया हेशमां सेनाने। वासेन्या उवासी सूनायां सेनायो सेनामी वियास मन नविवाग्री हेशाया से दायाया दर्गे द्या निवास के साम हेशा मान्त्रेन्द्राम्यस्य उत्। ग्राम्य स्वाम्य म्राम्य म्राम्य स्वास्य स्वा वशिरशास्त्र भ्रिम्स् विस्वाल् कं ल्या विस्वाल्य सार्वे स्था कि मार्थ सार्वे सार यर वर्ते नर भे ग्रु हे लेश पर्य मिले यथा न इत मार्ने हेरिन हे तरम ह्रियाश्चर्राक्ष द्वार्याश्चराया देश्वर्राश्चर्याद्वरात्तुश्चरा भे न में त्या हे न र तिर्दर्भ में में हो से ने स न सुर स स से में ने र पर स से हैं न र्देव धेव हे। यदे नगा धर्म सु ग्वर न धेव या ग्वर द्वादे हेट केश दर्गेविरम्बरम्याप्यम्बर्धः श्रे अप्यूम्रम्बरे श्रेम्प्रम् कुः के निप्तस्यम् हैंग्रयास्य प्राप्त विद्याय के स्थान के स्था के स्थान के सळवॱर्नेव धेव प्राष्ट्रम्थ पात्रसम्भाग्यम्थ पात्रव्यायाव्य सळव पाधेव पा मॅरियो खुर दे द्वायो अ अ यार्वे द दे। दे द्वा अळव देव धेव सर यव यदेनश्रास्ते भ्रीम् वासादेशासळ्यामाने प्रत्याप्ते भ्रीम् वासादे ।

## वयाया मुन्य नर कर मी अर्कन हेरा

गश्रुयायायाम्भेतायराक्ष्रियायायाम्भेतायराक्ष्रिया श्रुविताया कैंगार्ने देशो । १८८ में देश वर कर ग्री में देश के अपदे मंदे रवा ग्रूट र्शियायाः ग्रीत्राचित्राचीयायाः धिताया नरः कराया न्रीत्राची स्त्राचाः यान्वरानाक्षातु न्दा व्यापाद्विताचरात् वर्षे नावानरात् निर्माद्वता राष्ट्रातु द्वा भूवा अहे यायाया वरातु वार्वेताया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया मःभुनुर्दे । न्रम्भे वानविष्ट्रे खुराग्रीहेन सेन मर्से सम्मे नान्न वर्ते दर्भे अ श्रुव राया श्रें ग्राया स्याप्त तु दर्ग यथा श्रेन ग्री द्वर ग्री श र्देयारा थे भ्रे ना सक्यमा से न ज्या मान्या मान्या भी न न न वीर्थार्श्वरायासी स्रुर्गिता विर्धायदे का खुवार्था उद्याद्वा नुप्ता नुर्धाया निर्धाय विर्वाद गैर्रार्थ्याया थे भ्रे नाये दाये या स्वाप्ताया भ्रम् नुदे । निरास्त निर्दे कि वयानसून् र्वेसामास्ने नायानमान् वर्षेन्यावर्षे नेदियमाळन्ना हो <u>षदःर्नः हुः हुदःनरः भेःदेशःयः गर्डः में भेदः भेदःनरः कदः गहेशः शुः वर्शः</u> य। र्याण्चिक्षत्रावेष्ठिःश्वायविद्याद्या यास्यसासाम्बद्याद्याः

ब्रीयर्पे ।

हेशनुराष्ट्रिं रेग्यायानक्षेत्रायाद्वा येदायार्थे यार्थे यायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्रायाक्षेत्राया गर्डेर-ध-र्शेग्रथ-वित्रेर-र्हे। । नर-ळर-इस्थर-भ्रेश-ध-र-तुर-सेर-ग्री-हेन'ग्रान्य'नवग्राचे'न्। युन्येन'य्र्नन्ये स्रोध्यान्ना युन्येन'ग्रीया र्वायाक्षात् क्षेत्रायां वित्यायाववा क्षेत्रास्यात् व्याप्तात्रा द्वी क्षेत्रायदे यःश्रीम्राययः के नः भ्रीयाय प्राप्त स्त्रीत् स्ति स्त्रीत् स्त्रीत् स्त्रीत् स्ति स्त्रीत् स्त्रीत् स्त्रीत् स्त्रीत् स्त्रीत् स्त्रीत् स्त्रीत् स् नश्चेत्रायान्देशारीप्तरावर्षेन्यायात्रायिक्षेत्रे के विष्या नराकत्रवर्षेत्र हुनुरावराष्ट्ररावासीरायायर् नेरावार्टें के या वराकरार् प्रमुरा नवे क्षिना यान्य श्री रान हराया दिया विषे क्षित्र । विषे श्री रान राक दा डेश गुः बे'त्र रूप्य रूप्य मार्थ भूत्र राष्ट्री स्वापा श्री त्र प्राप्त होता स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्व मश्चरःळर् होर् हेश होर्रे।

द्धारिः श्वरद्दे । विषय क्षेत्र क्षेत

गहिश्रायाक्षेत्रार्देवायावि वश्रयायाद्वा यश्रयाहेवाद्वाया श्री वाय्याहश्रयाद्वा ह्रियाद्वा ग्री व्यय्याश्री श्री वाय्याहश्ययाद्वा ह्रियाय्वा ग्री व्यय्याहश्ययाद्वा ह्रियाय्वा ग्री ह्रियाय्वा श्री ह्रियाय्वा ह्रियाय्व

न्दः सें त्या मधुस्र त्य व्या न्दः क्ष्यः सुं से मा श्रे त्या सार्वे त्या स्त्र स्त्र

र्स् न्यायान्य का श्वामाया क्षेत्र विष्ण क्षेत्र विषण क्षेत्र विषण

निहेश्या केना केना स्वार्थ निविद्य नि

धरः क्रेंत्रः धः दृरः क्रुं द्वायः वः दृरः क्रुं दृरः सक्रंतः श्री अः दक्रेः वः दृरः। वारे रः क्वें स्वायन्त्रम्य स्वराधित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर् विश्ववार्यास्तरित्रे से संस्था सम् विस्तरित्र में विस्तर्या सम् श्चरावरायेत्रसायरश्चित्रस्यायेत्रस्य प्रम्यात्रेत्रपाद्रेत्रस्य से स्रम्य यंग्'न'ने'न्र्से'ख़्र्य'मर'विश्वायेत्र'यंदे'सुग्राश्चित्र'ठ्राने ग्येग्राश्चर यग्'नर्गुर्भनेदेरेर्देवर्। नगे'नक्षेत्रेवरेन्र्र्जुर्भभदेश्यवर्ष्ठ्वरे केंश्राम्थ्रस्थन् ग्री:न्नो:वन्द्राम्यान्यस्थान्वदेश्यस्य ग्रीसःस्वर्धसः য়ৢ৴য়देर्गेशग्रीशमाद्रशमाद्वीदायात्त्वामाद्वीरमाद्वशम्य हुदि । त्तुः व र्दे। ।रेदे में अदे अपिक में यक श्रुक्ते। ।रे यक शुक्तें नदे हेर्प य में धेव है। दे द्वो द्धयायश ग्रह पार्विव परे धेर दे।

महिश्रास्थ्याहेत् स्त्रास्य वित्राधित्य स्त्राहेत् । स्वाहुत्य वित्राधित्य स्त्राहेत् । स्वाहुत्य वित्राधित्य स्त्राहेत् । स्वाहित्य स्त्राहेत् । स्वाहित्य स्त्राहेत् । स्वाहेत् स्वा

न्तुंश्वरावि नर्म्वानावि स्वर्त्त्व स्वर्त्त्व स्वर्त्त्व स्वर्त्त्व स्वर्या निर्दे क्षेत्र स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त

वर्वे न मान्या नि स्त्र न मिल्या नि स्त्र मान्य स्त्र मान्य स्त्र मान्य स्त्र मान्य स्त्र मान्य स्त्र मान्य स् यसप्तियसे तुस्रायदे धुयात्रमा से दिराय दे विमायत्तर स्या हु से प्रमुटा नरःविषाः नर्त्रः नश्चेत्रः नर्त्वा । नमुश्रः स्विः भूरः नः श्वरः नदेः श्वेरः स्वि। देः क्षुन्तु-दे-धुत्य-व्रमा-देद-द्र-ध्य-(व्यम-वर्त्त्व-वर्त्त्र)त्य-वर्त्ते-द्रमा-हु-द्रमो-वर्त्त्व-व्य-स्विशासरास्यापुर्विदायराधीः वृद्धि । स्यापुर्विदायरायर्देदायावयाः नत्व नश्चेत्य न ने दे : बव 'वे 'न मे 'वत्व 'ग्री श मावत न ग्रीव 'व 'न मे 'वत्व 'ग्री ' यशः ही वातः सुरारेश । याया हे या हे या त्या खाल्या व्यवस्थ ही वार्वे या नःसःस्रभःग्रन्दःदस्र। वेशःन्हेन्यःसह्गःहुःध्ययःत्रगःरेदःनःवेःसः गर्नेग्राश्ची । मनः तुःवज्ञुनः नवे श्चिमः हे नमः वेन्यायाया वनः यायाया वनः वयावेयाद्वेराद्वात्रा । यदावाद्वितायावतायाद्वात्याद्वात्यावेया क्रियानियन्त्रे दिन्द्री विश्लेष्ठ यस हिया यस स्वित्य स्वाप्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वा दे त्याक्षे क्रम्भागी सुभागावदा ग्री क्रमायावदे स्थाना वदी द्या वदी द्या वदी । क्षुः भ्रे। सहे प्राप्त विकासीय विष्य के विष्य विकासीय विकास रवः हुः त्रुद्दार्वा द्वारा स्थ्रे वायर है वाया यस से स्थ्रे । वर्गे वाया दिया सु अ:श्वराय:वे। श्वरायदी:वाप्टा ही:व्या:तुःवदी:वायिक्रःव्येट्रायशासी। विसः ळ८.की.व८.वे.व८.वाट.सेट.अर्ट्य.की.८.५४.वाचा.वा.वे.क्रंत्राचा हिन्यर्न्, वर्वे नदे नर्क्ष कर्न्य वर्वे वाया संस्था है या तुया न से न्या वर्षे वाया से व्या के या तुया न से न

र्या श्रुट्राची कें विट्रा श्रु र व्या देश स्था कें विष्ण प्रि ते हिंग श्रा श्रु ते हिंग श्रा श्रु ते हिंग श्री त्या प्रि ते स्था प्रा ते हिंग श्री ते स्था स्था ते स

गशुस्रायादी नर्गोषाना कुःषसार्थेना प्रदेशकन्या विश्वासी खेदाया यत्रक्ष्यासुराया सूयामार्सेन्यास्त्रीयार्थास्त्रीयार्थेसामास्त्रीप्रतिरहेरासेन्य धरायदायावेदार्श्वेषायाददायद्वी । श्रृंयायाञ्ची प्रतिक्रेयावेदायेदायोदायदेव नु रना हु नुहान दार निश्चेत सर हैं गुरु सदि हुगुरु उत्ते दे दे ने पर्द् न ही रा नश्रेषानर मुर्वे । श्रे साधेद माशेर श्रुषानर्वे । रन मुत्वमुर नवे मुरे नरर्देरश्रायायाञ्चयान्धेवाव्यावेशावेदीः नरा चुःवेदा नश्चेवायर र्देग्रथं पर्यान्यायी श्राया देश वर्षे । श्रुव्याया स्वाप्तु द्वारा पर्या नश्चेत्रामरः हैं ग्रामर से नुदें। । वर्षे वा श्चे नवे के माने प्रामर स्पर वर्द्य । ने भ्रःतु ह्याय उव वे निश्चेय नर हुदे वेय श्रुरा य वेट र्येयाय ययर दे निवेद दे । भे अ थेद पाय रें इस मी रें अप अ भे निवे मुं अर्द वै। भुःवर्देदःर्धेवःवःधेदःगधेदम। दवःर्शेदःगशुम्रः सदःसदःगेः सूगः नर्या ग्रीमान्या प्रति श्रीमाम्या द्वायापराद्या प्रमासे वा रवा र्शेट्टा इससार्टे कं ने रायप्ट्रिया पेंट्र न्या के दारी से दाय है से ही प

दे त्यार्श्वेयामा से भ्रे निवे कु यह दे हे दाविशा वि रहें दार्से दार न्याके नदे भ्रम्या रे से महिना से नर्जे न सम्मा है क ने या निमा वियाधेर्नित्राकेर्सेर्मित्रिर्मे । यातेराने ते त्रामाधेरी । याराने वा भ्रेमार्डमान्यार्थियां विश्वानियां विश्वानियां मह्या मह्या नियानिया येन्यन्त्रित्रयः भ्रेयायद्यन्त्रभ्रेयात्रयः यादिनः भ्रे क्षेत्रायेन् वानः भ्रेया हिन्द्रस्य सर्वे । यहिस ग्वय सेन्य सेन्य से स्था विकारी । वि मेन सिंदे पर्रेन पान हेन इसेन सिंदे पर्रेन पान हेन पादे हुन परे यदिर्द्रा देशः त्रुप्ताचिवायदेश्यादेरास्त्रीवार्यात्रात्रस्त्रीत्रा येन व्हेरने सँग्रास्त्र से सर्दे न्द्र । क्रिसेंग्रास से दि ग्यून राधिता। भ्रेशप्ययम् तुर्भेर्पावदाग्रीयान स्यान्य द्वर्पायम् स्यान्य स्यान्य स्थान्य स् ग्वित मी के से स्ट्रिंग प्रिंग क्र स्ट्रिंग विवर मी राज हारा नदे-तुन्-भेन-वाःभैग्रयाः अर्थेन-नदे-से स्याः नेपानी अन्ननः में व्ययः शुः रुट वी या पाल्य भी रहें से या स्वा दें पारुय भी साथे दिया स्वी दिया से प्रा स्वा दिया से प्रा स्वी दिया से प्र नरुन्यायार्श्वन्यायस्य कुस्रसायदे सार्वे नर्हे । । सूर्ये पदे वस्र सार्वे न

नश्चेयानरा गुत्रमा वे त्र सावेदाया में त्री त्या मामा मामा सावेदा वे सा वैदःगी हेशाया प्रविदःशीया वस्या वदः वर्दे दः या या से वाया या वसे दादः नश्चेयायाहेरामधेनम्बेर्नम्र्र्त्ये नश्चेयाये। विदेशहर्यामध्येत्र मी कुरायार्थेयायार्थेरायमानस्वाचेमार्से । नियामना वेरायस्वा कर दश सेंदि परेंद्र क्याय सुर दिस्य से प्रक्याया केंद्र विस्रय क्याया राधर से द्रायर सुर हे 'बेर्दे । मु वन या शु ना वया राज ने विवास द्राय र्रे। ।ग्राट्यम् न्यर्भः न्याने द्यो प्र्त्यासस्य हेर्द्या स्याने प्राया स्थाने <u> ५८.र्घेथ.त.२८। ४८.ज.योथट.यदु.जन्न.श्रुथ.स.५८। जन्न.क्षेत्र.याद्वेश.</u> ह्यायार्वित्रान्ययार्थार्थेर्येन्वन्याः कृत्त्त्र्त्त्र्त्ते श्रीन्द्र्ये । यात्रयाः सक्तरायर लेव सर्वे । तर्ने के राय दिवयान निर्मे गुव हैं र यय हमरा शुः शुंदः चरः वर्देदः पर्वे । श्रुंदः चः क्रुवः चरः हैं सः य। सन्नरः श्रुवाः वस्यः छ्रुवः यिष्ठेशक्षश्राशुंद्धित् वर्षे । क्षेया देव दे। वश्चेव प्रमः हेयाश्रासदे कें या दर र्रे दशस्य मुर्या भेद द्वा के या मुर्या मुर्या मुर्या मुर्या मुर्या स्ट्र नदसःदनायः क्रेत्रसः स्ट्राय्यायस्त्रेत्यमः हैन्ययः यास्य स्वायः यादे द् नेयायाययाळवायवादेयायुग्यायायाची पर्वार्म्यायायायाय वरःगठेगः त्रंगश्रेयः नःयः श्रेग्राश्चादेःयश्वश्रश्रश्चेंदः नरःशुरः नः हेन्द्रम् वर्षास्य वर्षायात्रवार ने हेन्ये वर्षे । वित्रयाविस् यव यहिषायवः गशुसर्गासुरसायायरेराहेते सुरागसुसास क्रिंसाले ता क्रेंत्र सेराहे।

यविरःगश्रुः विश्वाश्रुर्यः प्रते विश्वाश्रुत्यः यश्रुत्यः प्रितः यथि । विश्वेषः यत्रः य्यान्यः यत्रः विर्योशः य यत्र र्यः हः विश्वेदः प्रते विष्यः विश्वः यश्रुतः यश्रुतः यथि । विश्वेषः विर्योशः विश्वः यत्रः य्यान्यः विश्वेषः

पि.क्रेयो.जश्रक्षश्रःश्रेटि.चश्रःभी.वयश्रःलुच.यी.वर्षेत्रःग्री.यी.वर्षे क्षराशुः ह्येंद्रान्यायाधेवार्वे चेत्राध्यादान्नेयायार्थेवायाग्री प्रवीद्याया न्नरःवर्ष्वःयरः तुर्वे । सुःश्लेषायः उवः (वृषायः यः न्दः वर्श्लेषः वः श्लेरः रेषे । नरःसःरनः हुरःस्रवः करः दरः ध्रवः सरः नस्रवः वै । सुः स्रेग्रयः ठवः हीः स्रः नः दे 'दर'ध्रव'रा'दे 'चलेव'ग्नेनेग्रय'रादे 'द्र्गे 'श्चेर'ग्ने 'क'ख्रग्रय'र्केश'र्गेश' वर्दे ने राते सुन्ने न रात्र ही हुत्य सक्त ने रात्र न तर रात्र मान रात्र न रात्र हो से रात्र न्तरासुः स्रेम्या या उता (त्मा या पारे के पारे मार्के या के या विकास के पारे के पार के पार के पार के पारे के पारे के पारे के प वेशः र्रेशः ग्रेष्ट्रानायने में माने विश्वास र्रेश्याम के पीता वेषा प्राप्त साम्रा ब्रेग्रथाग्री:व्रान्दरव्यक्ताव्दायायद्याम् याचि व्रान्दर्ये व्याचेत्र मदे भ्रिस्प्रम्य विकाय वर्षा स्ट्रा भ्रिस्य विकास विका मुर्थित्रं निर्धित्र क्षेत्र क ख्नाता क्षेत्राचरात्राचा प्रवेश क्षेत्राचे राजे विकासी कार्ये राजा कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या का रायरा सु से ना रा उत् । वृ ना रा रा पे दि हो । र रा तु हु दा र र र पा र र ना र र <u>ब्र</u>ूट्याया अप्रेम्याया उत्तर्मी । श्रुप्या ने । प्राप्य वाय विश्वास । यह विश्वास । यह विश्वास । यह विश्वास । ८८.क्षेय.क्ष्या.जय.जय.याध्रेय.ध्याय.श्र.श्रीट.य.भ्रेयाय.वय.र्थयाय.त. लुब.धे। भे.बयमार्टातर्थू। मि.यमर.त.रटा स.यमर.त.रटा रेग. नर्डें अप्यानश्रद्धान्य द्योप्यत्त्र श्रीप्त होत्र हा स्थाप्य हो प्रवित्र ग्नेग्रथायात्रात्रात्रेययाण्येयाव्याः सूरानदेश्यस्ययाये न्युयायात्रा थ्-सॅ-नेवे-सॅ-मॅ-नर-वार-वीय-वशुन-स-नर-वशुर-नवे-नुय-वे-सर्देन-वय-नन्द्रात्र्र्यात्र्र्यात्र्र्यात्र्र्द्र्यात्र्र्यम् विष्यात्र्या वशुरानानि त्यसामाराष्परासुराना वळना नडसा निमा शुराना साधी स्वसा वेशदेरी । यार पर उर य वेश यश यार उर या हे या यी श ग्रार के साथ हो। भ्रें नर नमून मण्डे | नियाम हुर नश र्मे याम थे भ्रें नाय पळन नरुशान्त्रीयास्त्रासी द्वीयाने निष्याने व्यापानसूत्रा नशनक्ष्रनारास्याने नक्षेत्रायराहेषाश्रायरानश्चिशात्रानक्षेत्रायरहेषाशा वेशनग्रीत्या धुरायी नर्षेत्र पर हैं ग्राया वेश ग्रासे नर्षेत्र पर निवेश्में अर्भः अर्थः म्याप्ति निवेश्में

न्योः तर्वे त्याया यी भाराषु ही स्त्री । वि यम् भ्रा भ्री यम स्वर् त्या प्रा स्त्री स्त्री क्ष्या ही स्त्रा स्त्री क्ष्या ही स्त्रा स्त्री स्त्री स्त्रा स्त्री स्

र्थे वित्रा र्श्केन से ने कु वे नस से महिंदन या दर्गे दस मिरे ही र में पिर्याभी त्रेत्राया विवास कुर्वित्र वर्षित्र भी त्रेत्र साधित वर्षेत्र वर्येत्र वर्य ध्रीत्वर्द्धा वर्षेयायम्। कुर्ने यथान्र्र्म्यायवर्ष्म्यायाः नर्भेग्रायायार्थेग्रायायवे धिताया देवायाग्राम्याय्या सुराम्रुवायार्वेरा र्भा बेराना की त्वरा दे। देवा अदे त्वोवा धर्म वर्दरावा क्रा स्ट्रा ना क्री मा यायदी है। द्रेश इंसार् बर् छै। कर् प्रदेश्य या है र र र वहनाया है। या या नर्ह्मेना'स'नियाधी'येत'स'बसयाउद्दायाधदादे'नवितुर्द्द्रेना'सर्द्रात्रे विश्वाश्वर्यास्त्र त्यायायाये भ्रेत्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र यर ग्रीश श्वी वा बेर द हैं वा श यर ग्री विश्वेद यर हैं वा श दश वर्षे द यर गर्सेवादर्गेशास्त्रावेदा भेर्पेशाने। नस्त्रेनासरहेपासानार्वेदास वार्श्रवः वेदः प्राधेदः प्रदेश्वेद्रा वावः हे व्यश्वेदः प्रदः ह्रिवायः द्यायः व्यवः व्यायः शे हो न पान्य भे त्ये व पाने प्रमे प्रमे प्रमे प्रमाय के प्रम के प्रमाय के प्रम के प्रमाय के प्र नठन्ते। जायाने कन्मशानठन्मिते के सूराना सासर्वे में हे ना हुन हूं। नवे सूर हो र र्रे । । र ने से रवे र्के राध्या सामग्या पा इसरा ग्राम सूर रादे हिरायना ह्याद्वा दराबेश सेंग्राया स्टारा विवास विवास यव कर कर यदे यया ह्या द्या दर वें र तु यव से र पदे मूर ह्या दर। यगाःशॅरःश्रुवाः अर्गेदिः गिरेरशःगाःश्रः तुरः ह्युअः र्येरः वहश्रः यः प्राः अरुः

गिरेशसे द्राप्ताद्रा सुराया विचाया से गिराम्या चर्माया है। सूर्मा के या र्शेग्रयायात्रिः हेरायार्शेग्रयायाये सर्वि सर्वि सर्वि नित्र प्राप्ति सामक्ष्रि उत् न्ना म्व के यायया र्श्वे र से नर्शे नर्शे न्या न्या वि नर्शे स्थाय वि न्या न्या नि क्रॅ्रिन्से त्रायन्तर्त्वयायार्थे नत्त्रयार्थेत्य यार्वेत्र के यायन्त्र येषा येग्'र्सर्व्या'राववेर'र्स्'र्दा नक्षिये मुत्राक्ष्य मुत्रा वळवाद्रा भेगापाग्रेगाव्याप्राद्रा अविगाभदे सुँग्राय्य अस्त्राय डं अ.मी.जवा.स.लूर् डेट.मी.च.वेट.मट.मट.मी.चे अ.स.जवा.सूर.स्यास् न्दा ब्रान्द्रभूषाळेषायालुयायवे सुर्गेन्द्राख्यान्य उदाकुराना येतुः श्रुर-५८। भ्रेंगायान सन्याणें राया राष्ट्र । क्रुं के त्याया भ्रुं ग्राया राया है त ८८. चरुषाराष्ट्रे श्रु. श्रे. श्रु. श्रेष्ट्र श्राप्त हेत्र स्याप्त विष्टा व्यवास विश्व स्वया हेत्र स्य नहेन नगान्त्र पानि यात्र हेन प्रमे प्रमा निम्मी स्वाप्त स्वापत स् ल्रिन्यन्ता तुन्सेन्न्याकेर्त्वस्त्रेत्यस्त्रान्ता से वर्तेन्यदे हिर विषय में हिर के अपन्य प्राप्त के ज्ञान विषय है । अख्रिनान्द्रा यदःहैं यास्यन्यस्य मुर्शास्त्राष्ट्रस्यानविदः नुसूर्यः गहराग्याप्तरा देन्ध्रातुवेन्ध्राह्मस्यादेन्द्रराखेदार्धेदार्केदार्धेसास्यास्यास्या नर्डेअः धूर्यः वर्षः ग्रीकः रनः हुः वर्षुरः नः रहः नक्षेत्रः धरः हैं वाकः धः रवावाः धः यहर्ने देवायाद्राख्यायार्भे वायाळवायायदे यहे यायाद्रवाहार्वे व्या ५८। अप्रमान्यस्य स्वामान्यस्य स

प्रस्तिकार्यस्तिकार्यक्षेत्रस्य क्षित्रस्य कष्ति क्षित्रस्य क्षित्य क्षित्रस्य क्षित्रस्य क्षित्रस्य क्षित्रस्य क्षित्रस्य क्षित्रस

## र्देशमार्चेन होन् ग्री वनशास्त्र केंग्राश ग्री स्नूनशाद्य प्राप्त

त्राचित्राच्यात्रच्यात्रचयात्रच्यात्रच्यात्रचयात्रचयात्रचयात्रचयात्रचयात्रचय

महिश्रासंत्री नर्गोषानार्के सामुन्यस्याम् स्विराने श्रासंत्र श्रुरः वा विदेशे स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वा

मशुस्रायदे। सुस्रायदार्गाः स्वायदान्ता वार्तेषायः सेवासः द्वाद्या वाध्यदार्थः सुः सुः द्वाद्या वादावीः व्यवाद्याद्याः वार्तेषायः सेवासः सुः सुः स्वाः द्वाद्याः सुस्रायद्याः वार्तेषायः स्वायदाद्याः वार्तेषायः सेवासः

निवासिक विवास्त्रात्यार्थे वार्यासिक विद्यात्या विद्यात्यात्यात्या विद्यात्या विद्यात्यात्या विद्यात्या विद्यात्या विद्यात्या विद्यात्या विद्या

देशमा क्षेत्रमा श्रुमो से साया से वा सायदा स्वा कुरी हु साया है । विदे सुर शुर्टे रें हेर् ग्रेम सेरान शुरानमान शुरान हुरान हुरान शुरोर ने दे शुर क्षराभेराभुरागुरायाद्या देग्वविवाद्यभूविगरसम्भागीमावश्चरायाक्षरा बूट हिर्मिट्टा अस्ययः भुति द्रार्थे वयः द्रग्रम्य वर्गाना वी श्रीयः अर्थे नुस्रान्ध्रम्प्रम् वर्षाञ्चा से प्राप्तम् सर्वे त्यास्याम् हेरास्याम् स्राप्तम् यःश्रेवाश्वासःधिन्। सदीनः तदीनः ठदान्। सुश्वासः हिंशाने सर्वी ज्ञाहाः के'न'त्रूर'र्से'के'न्रा खुर्यान्उरार्श्वेयामयाययास्यास्याद्वीत्रान्ता खुर्या वर्ष्णिः श्रुवर्षः श्लेवर्षः प्रवद्यः विवाये वाये वाये विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या सर्केनाससेन्सियमें कुरन्दा इन्म्सूरमें केवेल्यान्दा देन्वित र्हित्रमान्यरान्दा नायदानी मान्यरानी क्षेत्रे के मान्यरान्दा वेदःतुवे द्वावाद्यावदान्य वयाची द्वावाद्यावदान्य प्राचे द्वावाद्या गडिनाथॅर्पर्पर्पा इन्नर्पर्भेष्ठभासेर्प्यर्पा सेनाउड्डम्प्रस्पे क्षरावर्देवान्सरायन्ता सेवान्द्रायसायन्साने ज्ञान्ता सेवा ५७८८कु८वि८ ह्युयाय ५८१ वेषा विदेशात्रय से साम विदेश सम्पर्धित पा ५७८८ शेर न ५८१ श्रेमा अकेट नुः क्षर प्रकेर न नेवा श्रेमा ५८१ कुते कुः न्य स्थर है। रें य प्रत्रें न से वा कु न्य स्थान्त प्रत्ये प्रस्थ वा विवा यश्रामेन्यान्या भेगामान्यान्याम्यान्यान्यान्यान्या भ्राम्यान्याः स्रेत्रास्यान्याः

८८। रे.चवेव.र्.हेरे.श्रं.वर्.च.८८। च.वर.मी.श्रं.वर्च.च.८८। श्रेदिरे.श्रं वर्रानान्ता वेत्रत्वे स्थावर् नान्ता समामी स्थावर् नान्ता स्थेते स्थान गडेगायप्रा अयाह्रवाह्रवाह्रयाच्या में राजें सुरक्रियां में राजें नन्ता ने निवित्र मुद्रे में अप्दर्भ न्या नायर मी में अपदर्भ निर्म ब्रेडिटे में अप्यत्य निर्म विरास्ते में अप्यत्य निर्मा समामी में अप्यत्य न ८८। ग्रेंशर्गे नापश्यम् नाप्रें न नार्वे नार्ये न स्थित में श्रिक्ष स्था र्गेशमें महत्वस्थसे द्याद्या र्रे सूरके व की से वदान दा दे निव र्मिते से विद्यान्य वायर में से विद्यान में दिवे से विद्यान प्रा वॅट्युदेर्श्वेख्युन्यद्वा यग्गीर्शेख्युन्यद्वा श्रेदेव्यूर्सेट्यद्यार्शे याडेया'सु'गो'से'वर्या'सवे'र्से'याडेया'स'र्रा सें'याह्रव'वस्थ'सेर्'र्रा यगुष्यमान् उदार्भदाके सामान्या सम्बाधार से दास समे विदाय प्रमुख्य नवे अहेर त्नार्र। अर्गे अर्त्तर् ग्रामा प्रश्रमा अमा समा पर्रा अक्राय दरा केशास्त्ररावश्रासे सहेशायादरा देशस्त्र कदासदरा क्वेगायासुरा वीशः क्रुवाशः यर्ग्युरः यर्दा। वर्षशः तुः वाडिवाः यश्रः सेदः यः क्रिवाः वाडिवाः यः ८८। क्विमारामान्वत्वराक्षेत्रस्त्रात्रा स्रुर्वास्त्रं स्वराद्वर्वात्र्वरात्र्वरात्र्वरात्र् रेट.च.र्टा २.१८.पूजायी.बिट.च.रेटा खेश.श्रेश.पू.रेटा कुतायाकेट. द्याग्यर्द्यम्याङ्गेयायायाद्यायर्द्यायर्द्याः स्वार्ध्याय्याः र्श्रे.च.र्टा श्रेर.च.र्टा रगर.च.रटा रसर.चश्र.श्र.श्रहेश.संदे.वि.ट्रेंग. इस्रामानि प्रति। श्रुदेश्वानिर्म्यास्य स्थानि । स्वान्य प्रति। स्

गहेशमादी व्यासित्यास्य स्वासाम्य प्राप्त स्वासाम्य र्शेग्रथारासुर्थायार्श्केत्राळग्रथायाव्वराग्नीर्थास्यातुर्ग्निरात्रेत्रात्रे नरःगविगाः भरः से गुर्ते। मिहेसः भर्ते सम्मिन सह्मान्दः नरसः भरे हेसः मदी श्रेंश्रेर्प्त्र पृत्वुर्प्त्र शेष्ट्रिप्त लेशम्बुर्यास्य भूव हिना हार्या हार्या र्या स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया र्शेग्रायान्य प्राप्त हिंगा उर र दुर र सा सूर्या वा विशेष वितर विशेषक स्राया वि याडेया हु नश्चेत्र स्ट्रेयाय स्ट्रियाय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय गशुस्रास्रदाळन्यार्सेषानविदेखसाग्ची क्षेत्रायारेगायी सारेगा रूपस्रेदा धराईवार्यायरा ग्रुट्राया अळअया दरावाडेवा से देरावादी वा सेवारा यः क्षेत्रा या विवा यो अरवेता वर रास्त्रेत यर हे वा अर शुर शेर रास्त्रे। कें वा अर प्रशासक्षर्यात्रम् स्राध्या स्राध्य स्राध्या स्राध्य स्रा यिष्ठेशके प्रविष्ठेया उर् सुर सुर हो। व्यायशा वर्ष्ठ प्रायार्थेया वर्षेत्र प्रायार्थेया वर्ष ८८.जश्राचाड्रचा.चीश्राचाट.बचा.चली.चश्चेत्र.सट.ह्र्चाश्रासट.चग्चेट.य.जश्

यश्चाराश्चिर्यं रावि क्षेत्र विद्या विद्या

द्वाःस्रस्थितः द्वेतः त्विः विद्याः व

न्ध्रेम्यायाययाचे। स्रेटे केन्न् मुन्याय्यु प्रार्थेम्यायायव्र वादियाने वित्रेया मुणाबुया में । श्रिया परि श्रु श्रेया पापा सादे वे श्रिया यो व धरादवेगायाचेरार् भेगाल्गार्मे । दर्रे ससार् हितायायसासुसामाल्या यम्वित्रायस्य मुः श्वाप्या स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्या स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित्र स्रित् सवतःन्यतःबिटःन्त्रुर्यःसर्वे नःशुः <u>च</u>ित्रे स्थःनुत्य। न्तुर्यःन्टःसवतः सहस्राया से दिवे से हात्र ने वा पर निर्देश । से दार्से ने नवा सहे सा पर नि नवे भ्रेर्स्य स्वे अ भ्रेष्य नर्से मुद्दे । दि सानस्य नवे भ्रेर्स्य न वेवा केंशमेंशन्तर्गेशर्में वर्गेवर्गेवर्गेवर्ग्नित्राम्य केंश्वर्मे । अवर में अ र्री द राजग्वा राज्य थेद है। दे जग्वा द ग्रें र र्र्व मिंद थ र्रेग न्वें रायर वर्ष्यूर र्हे। अनुन्दाय शुर् वेषा यदे छे त्यं वे शुर भुर वे न নভদ্যন্যনূর্ট্য

न्श्रेणश्रामश्राधात्री श्चिर्णः मर्थेन्यः महर्तेन्यः महर्तेन्यः महर्तेन्यः महर्तेन्यः महर्तेन्यः महर्तेन्यः महर्ते । स्वान्यः स्

यःगुवः हुःळवाशः सम् ज्ञः निर्धे देश्वे देशः विष्ठाः व

मित्रेशमा सुरामार्डरस्थानियानियानियानियानियान्यान्यासिक्र नस्त्रक्त्रम्यन्त्रम् विरायय। न्राये क्षेत्राम् सुर्वेगायाने विरायया सुरानियावियाविया । ने साचीयायालया लया लया हिंदाविया ग्रीटा विद्री विदेशसम्बर्धान्यति । विदेशस्य विद्यान्ति । विदेशसः ग्रे-श्रु-८५: वनामे द्वारायायायी म्रायदे क्षेत्र स्निय से ग्रुदे | निर्मे क्षेट्रायया क्षेत्राया विकासे निर्मे क्षेत्र क्षेत्र विकासी स्थाप । निर्मे क्षेट्रा यथान्त्रन्थेन् भी कुर्ने वाया शुःषान् श्रुः नुः न्द्रे से स्या विया श्री निया गिरुरागारासेन स्वास्थित तारासिन स्वास्था स्वास्य स्वास्था स्वास्य स्वास्था स्वास्था स्वास्था स्वास्था स्वास्य स्वास्था स्वास्था स्वास्था स नर्सेश्वर्यश्वरात्र्युरस्ट्रा । धेर्यस्थ्यरम्भ्यर्थान्दे ते त्वर्यन्यस्युर्वे । वर यर तुर सेर या है। समामेर मेरिंग विमान का निमान क सबदे बारा हेर् छै सर्व रहा कुरा छै सबद सार हेर्सा सासर् रायर भूता <u> ५८:विटायः श्रें ग्रायः ये वहें गार्गे । दे वे वर्दे य्या सर्वेट वा श्रूट वरे हिर</u> र्रे । प्रवनः पः प्रदेशायाययायाव्यः शुः प्रायः व्यायायाः । सर्रायाने स्राया होते। ।विष्या पर्येस्य ही हिंवाय पर्यासहित स्याहिता यःश्रेवाश्वास्थावाश्वाचायायास्यस्थायाश्चेवाश्वादेवे के विवादित्यम् स्थान्ति।

विश्वाचीर्याये के विश्वास्था है । द्वारा वहरा वरा चुर्वे । विश्वास्था है शारेश वार्ते श्रें ना कना या निया गुरु कु तकना या स्वा विया ना गुरु किया श्रें या पारे वर्त्रोयायात्रेन्यात्राने मातृत्याहे सामानसूनायते श्रीताते साने नार्ते इस्रायन्त्रायसागुदापुरेवेसाग्चायादी यात्रायसेसायायस्य प्रायन् नरम्बुरक्षेखेरान्वर्दे । गुन्रुलेर्यायात्रेम्मर् विर्वेदेणेयो ख्र्या यःलूर्यसुर्यसुर्यस्त्रियात्रात्र्यात्रात्र्यर्यस्त्रेश्वात्रम् विश्वास्त्र्याते। में अ.धे अ.र्र अ.ज.ब्रॅचा.कवाअ.र्चा.क्रंचा.त्रर.तकवाअ.तर.प्यूर.चअ. र्श्रेवा कवा य दर व उया परि कुः वा व्रिया र या है या र या ही या व्रिया से । हिया से । हिया से । क्रॅंशर्वीशःगशुस्राधदेःधेःद्यात्तुद्रसाध्याःग्रहःत्त्रुशःद्रसाधरःवरुद्दा दें दर्के अभी अपने ने सम्प्रमूम में ने द्वा विष्ठे वादा में भू दर से में हैं दर से में हैं दर से में हैं के अप में अॱॻॖऀॱॻऻड़ॕॱ**ॸ॓॔ॱॻऻॶॖ**ॶॱऄढ़ॱय़ॶॱक़ॕ॔ॶॱमे॔ॶॻऻॶॖय़ॱय़ॱढ़॓ॶॱॸऻॾॕ॒ॸॖॱय़ढ़ॆॱय़ॖऀॸॱ वेरःर्रे । यावयःयःविः ठेवाः केयाः केयां यात्र्ययायाः वात्र्यः स्थः सुः या वर्षः नुन्य दुः या शुर्थ र्से : वस्य अ : उन् ज्या वस्ति : वहें न् : वहें न : वे अ : ग्री अ : न उन : र्रुर्न्नाउँ सर्रुष्परान्ध्रुव्यायीव्यास्त्रुर्न्नायाम्बद्गान्त्राचे। देशी वन्नर्दे। वर्दे मदे स्वाम्य ग्री वियान्य स्थि ग्री न्य क्ष्म श्री स्वर्द्ध स गर्नेग्रथायायाये अभ्यादे भ्रिम् गर्नेग्रथायाया स्वाप्तादे । ग्वर-र्-विशन्सासाचे नामेर्ट्सी सार्यम्या स्वरंग्यसम्बद्धाः धेरा र्यानःभ्रमा विभारमान्दानद्वानासुमान्यन्यारः स्निनान्येतः

धॅव निव दें दें से निव दें विकासी मिल के मिल रटररानी सेटानी अर्झे अरावे छेरा देश कर के अर्ची अन्तर्श्व स्था थें। गर्नेग्रास्यावकटार्'से'रुटाट्यास्रुयार्'रेग्रायायाययापदे'सेर्'सर् वर्रे हुरार्शे । क्रेंशर्मेशयाशुराया वेशया वर्रे र कुर क्रेंमा वेश ही रेंदर र स्रोति निर्दे भे निर्देश में स्रोति स गैर्भास्त्रस्याक्षेर्भे में जावन ग्रीर्भाद्येन प्रदेश स्वार्भाष्ठ्र स्वार्भ । स्वर्भाद्य कैवा मुद्दाय र्श्वेवा कवाय कवाय द कुया व नवा वया येदा यदा द्वी र देवा हिशने महिना त्या पिट र दे हैं र हिट र उदे मान्तर र से उदे वि नवेद्रश्रेष्यश्चर्युश्रायदे नर्डेष्य कुष्यद्र श्रेद्रावद्य दुर्दे । विश न्यायार्थे। भ्रि:र्रायापुरकुपर्यो नवे भ्री रात्रा दे रायर यार्दे न रिवा भ्री ब्रुं ब्रें न्यायायम् स्रुं । क्रिंम् तिम् नुम् विष्य स्रिम् विषय स्रिम् स्रिम स्रिम् स्रिम स्रिम् स्रिम स वर्जुरर्ने। ।श्रे.समामीर्स्यास्य र्यंत्रभाज्ञ्याम्राम्य मिराया विश्वास्य स्वर् सुरुष्यानुत्रप्रस्थे नुदे । श्रिष्यापी त्यानु ते ने ने श्रिष्यार हैं न से त्रा कुः सर्वेदे द्राः नः र्रेषा यः नवरः शुर्गादेयः ग्रीयः सर्वदः पदे द्रो पीतः पयः ने न्यायी अरग्रम् के न्त्रम् । १९ श्री अर्थे अर्थे अर्थे मुम्याने से स्वाप्तम् गुरु

त्रभः तुर्दा । त्रिभः ख्रेसः द्रमाद्रात्तः व्याद्यस्य व्याद्यस्यस

महिरायाक्याम्बर्धी मर्शिष्टामी। विटायामाटार् मुलेखा मर्शे पिट मी पिट पा शु न के मुस्या का के निर निर हो हो र कि कुट निर ही र र्रे । ५. न. श्रे. तश्च सका सके श्वेर ५. विराधा देवे ५ श्वेष ५ स्मूर विराधी ५ नाया वटायट्यामा कुर्या के विषय वात्रामा के विषय वात्रामा का विषय वात्रामा के विषय वात्रामा वात्रामा विषय वात्रामा व सर्वसन् सुन्यर प्रमुर्य निर्मेर विराने में भूर विराने र हो तु स्वार से विराने र हो तु से विराने मुर्-त्रिन्येनयामुर्यादिः र्स्तिन्न्य देन्वर्न्यदेष्ट्रम्यया वर्षिरःगहरादे श्वें श्वेग्राया थी र शिया शी श्वें ग्राया शी स्विराह्य गरा र स यान्यार्थः भेटा क्षें क्षेर्रायाने यात्यार्यये या बुद्राया में निर्देश सिंदर कॅरविवरवर्भेरवयाबुदयादेरवह्यायद्दा र्सेदेणस्वयाया नन्ग्रासदे न्व्यान्वेर्न्त्। हेग्रासदे सून्रास्ति न्वासदे निर्नेत र्थे तसे दाना निवाद प्रत्या निवाद विवाद वि रादे वन रात् व्या मुं भूरा विष्य है निर्मा विष्य में विष्य में मिर में भूर भूर ब्रेग्रयन्द्रिन्यक्र संदेश्वन्यः श्चिर्यन्त्रेत्रयम् ब्रेन्य स्वारायरा गुरायदे प्यट सेवा ५८१ वट ५ वहे व सायवा व बुद्र स्रार्थ येग्रथं भर्म नुर्दे । कुर्ने दानव्या भरे भी रात्र न के प्रमान के विद्या कर की नवगः श्रेम्र गर्या । यदे यर महस्य राष्ट्र क्रे व से सुद संदे महस्य महस्य स्था देवार् हें अवायी याठवायाल्यायम् होदे । से से प्रके प्रम्हा प्रे से मुन् 

ध्यायात्रयाचे नवदान्य विद्या । नर्जे । त्रा र्वाश्राभ्राभ्राभ्याक्षात्राच्या स्ट्राप्त विकार स्ट्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त स वृद्। । अभावक्षयावदेः वैवायाक्षे विद्युरावरा वुः वदेः विरावे । वद्या सर-र्-नश्रेस-र-न्गा-सेर-ह्यूग्रस्स् । दे-दे-से-विस-र-हेर्-नसय-नदे-म्रेर्नित्रार्भ्येयास्त्रेरास्त्रायाः । वर्षे। वर्ष वशाग्री निया विवास के अप्रायक्ष विवास विवा र्रेर-शुर-नवे कट-तुषा गुर-सके सानउद-तु रुट-रें। । नर्शे विट-देर-इ नयान्नेनयाये सून गरिट हैं। । म्राटायायाय विवास न ह्या ग्रीया में अःमअःनर्श्वे प्रदःमी अःग्रिन् श्लेन श्लेन श्लेन श्लेन अअः श्लद्ध स्थानि सः नदे हु गुने र न न गुन मुला है। । गुल द म खुग र मदे के न न खुग र स्था चित्रासदे स्वात्रासुन्यावर रहन चुर्वे । इत्राची स्वापन सुन्य वित्र सुन्य स्वात्र शुन्ने खुन्ने वात्र अध्यक्ष या वात्र वात्र विवास ने विवास येद्रपः हेद्रद्रम् व्यून्यदे ध्रिन्ये यान्येष्यया यात्र स्वर्मा वर्षे पर देर द्वो क्षेंद्र वी शह्य क्षेर हुवें विंद्य पर दुः हुय हुय हुय देवे केन्-न्-नियायनः चित्रं । वियाकः स्यायायमः चेन्-प्रदेन्नो र्स्नेन्-निर्देशः में अन्ता कुरु से १९ सरु सर् स्तु निर्देश ही र से स्वा में अ क्वें द र दे हि अ ने र च्यासर विवाय स्याध्याच्या । वियापर दे त्याची स्याद् स्वाद् स्वादी धेर्र्र्स्र्रिस्तर्गर्र्र् न्गे र्ह्सेट र्धे अ इस्र राय कु न् उटा करि वेश श्रुव पर गुर्दे । कु कं न नेर

कु: व्राट: श्रें श्रावश्रेदि । वर्यु: व्यव्याः प्रवा: क्रवा: क्रां व्याः श्रें व्याः व्याः श्रें व्याः व्याः व्याः श्रें व्याः क्र.व.चटार्झ्यानस्रोद्धा वियावटार्ट्रमात्रयाचार्ट्टाचायटाची ख्री.चार्ट्टार्झ्य निरमीश्वानगरानदे में हिं रियामान्यास्य मुद्दी । शूर हैं र्रश में हिश क्र्या.चर्रेय.क्षा स्रैयश.वर्ट्र र.र्योय.चर.र्था.क्री.विश.क्र्या.चर्रेय.ब्री रिश. व-नर्श्व-विन्द्रवे-न्त्र्व-विकाग्री-कु-नर्श्व-न-न्द्र-विकाग्रिकान्य-न्द्र-विकाग्री-किन्त्र-न नामरायानवे भ्रिम्से म्रे नवे में नवि में नवे में नवे मुक्त नवे मुक न्नो क्रॅन्ने अप्तह्ना में नाया नाम प्यान स्वान स्व शुःवर्श्वे।वरःदरःवर्षेयःवदेःविश्वावरःद्विश्वःश्वःवरःवस्त्रवर्शे विययःहेः नश्चीम्दर्नु विवाधाराधारुस्याञ्चरा स्थाप्तर्म् विद्वासुकार्मे निर्मा द्री विश्वीतर्द्रात्वर्ष्यायायायात्राच्याः श्वीत्रात्वर्षात्र्यायायायायाः हुः कुः यः श्रें गुश्रायायश्चीं विदाने राहे राहे से श्रे श्री श्रायाय विवासि है । हि दा उवा यशन्तरम् स्वादास्य स्वाद्यात्र विश्वान्य स्वाद्यान्य स्वाद्यान्य स्वाद्यान्य स्वाद्यान्य स्वाद्यान्य स्वाद्या विटार्नेराम्बर्यायराम्स्यार्मेम्यायादे द्यो र्स्स्यया ग्रीया अवता रहे । देशायरानेशायराग्चायवे भ्रेराभ्रित्सु ध्येव लेशाचे यराग्चा लेटावटा तुरास ल्यायायवह्यायर्देरायायाद्वीयराज्यादेवेके केरात्रात्वी क्षेत्र क्षेत्रात्वी क्षेत्र यार वी भ्री र नर्जे द यावद ने र से प्रह्मा या ग्राचि र है र रें। वर्जे र या देश नर्श्वेषिरादेराष्ट्रियायायाद्रायायह्यार्त्वेषायात्याये । नर्शेषिरादेरानङ्गा सहे स्मार्था ही दिन ही त्यरा है निर्मा क्षेत्र है मा मात्र राप्त है मात्र रा न्यायी शः हुर्दे। । याव्य सः से स्य श्रेष्टे । यावेय स्व स्व स्व सः स्व सः ह्या । यो सः हुर्दे। । वेसः

श्री । वि:र्नेरः वी:व्यथः ग्री:र्ने:वे:वे:वे:वे:व्य:प्रदः वर्षः प्रदः व्यवः व्यवः वर्षः वर्षः निर्दर्भन्यरमिष्ट्रिनद्र। अद्रस्ट्रिअद्रस्ट्रुव्स्रीम्यस्ट्रिनरः नवगःमःन्दा नेदःनहगःमःन्दःद्वेयःधेःन्दःसुसःग्रेसःनसुःनःन्दःवध्याः यन्द्रमुन्द्रन्द्रन्त्रयायार्थेन्य्रायार्थे । युव्रक्षेन्यान्व्यायाय्यार्थेन्य्यायायाः न्यायी ही ने र ही त्यक्ष है । यह दुंद या हेया यी वा या हेया त्य दें। । धूद हेया । वावर्यायान्द्रप्ते वावर्यान्वा यो यान्ये ।विद्रान्द्रप्ते स्वीत्या विद्यान्द्रपत्र स्वीत्या विद्यान्त्र स्वीत्य र्बेन्' शुन्दग्' ग्रम्' गर्द्र शुंदि । ग्रुम् वस्य स्मार्यम् । ग्रुम् । शुः नरः वाववार्वे । तुस्रायाद्मायार्थेवासायदे र्सूट्सूट्स्स्र वस्राउट्यार्के वारे नविवर्त्यार्यराञ्च अत्रथः स्टर्स्यो याव्याः हे व्युवस्यावयाः वे । यादः वनान्दरन्नो प्रत्व श्री थे ग्रुन् वस्य य उन् प्यन्ने व स्य न वना स प्य र्शेम्याययायेम्यायराञ्चानाद्दानञ्जयायाद्दान्यः विष् दॅराग्वर्षे । नर्शे। तर्रे नरायह्या संदे के सुन सुर राहे वह्या सर ग्वर्षे । सहस्यानिराद्यान्य प्रदेशास्य निर्देशासाही स्राप्ता स्राप्ता दवा से वायोदान्य स्थेवाया सर्म्यस्थ्य या प्रदा वहुवा हें वा वी हें दिया स सहें अप्याद्या सेस्राहे न्या विषय ने स्वादि । पाव्या से हो नि सर्वर्रयाक्षेत्रे विद्य विद्यायायायायायायायायाया र्शेग्राश्चर्वित्रान्याञ्चरम् । वित्राहे सूर्वाव्यायर ग्रावेषा वसम्बार्यास्त्रे से क्षुः नः से म्हमा से माया सुषा निहास कि नाया हो नाया स न्भेग्रयायाय्यात्र्वात्ते । नर्भेर्षायाः वी ग्रुः नः वस्य उत्राहेत्रायाः सहिताः

मुः क्रेंब्रायाया सुवा वर्ष्या या प्राप्ता अर्दे वर्देवाया प्राप्ता वर्क्षे सुप्ता स्रोता स्रोता स्रोता स्रोता गशुस्रायान्त्रात्री। सिर्याक्त्रात्रीयात्रायानाः वेदावाद्यात्रात्रात्रात्रात्रा रुट विगार्वि व र्श्वेव प्रश्ना ही दें र प्रश्ना रुट शे हा न प्येव ही खुरा प्रनर विगामी असी दाया गाव अप श्रम्भ अप उदार पित गी न हीं । प्रदाय विगा पुर सी दा र्वे । नगमा सदे में अपिहें अपिंदा स्था के मुद्रे । खुअपी में में रामी खारा है । अन्दर्भः हो दर्भः माल्याः में विद्यन्दर्भः दर्भः वर्भः देः माद्यते स्वा दर्भः र्षेद्रास्याधीताची विदेरम्ची त्यसायदी दरावेदि सादेरासाद्रासासी मल्मार्मे । विश्वासायाध्यराद्य प्रामह्म् विराधी मधि मधि प्राप्ता रहा र वर्देन्द्री रिक्सेन्यक्ष्याचेन्याप्तिक्षयाविस्रसायकवाग्राम्। यप्रशासन्दरम्बर्यदेर् स्कृषाची या द्वारा विस्रया द्वारा स्वरा स्वरा स्वर् नुःधेन है। विःश्वःनुदेःहें न् सेंद्रभः स्र स्र स्र स्र स्त्र नियान नक्षेत्रभाष्यभा द्धयाथ्रम न्द्रभेराची याय न्द्रकेषा निवेश्वे से वार्ष रानि पिट र् से पहुन देर से मिर्विया वर्के न मिर मान्य मान्य सार्थे सामसा नम्भी त्रापि । द्वापायकयान्यायायन के सामित्र से। सीमार्यायन हिर्द्रायह्या देरमार्वेषा वर्केन्यक्षेमार्यमा माठवामात्रवास्या नः स्वान्त्रिक्षः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त् त्रुव्यन्त्रः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्याः स्वान्त्र्यः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान

कुंवापकवाद्देव्यून्ने रायन् गुले वा सर्वेट वें राद्वारा गुरा ग्रीयानेयाम्यान्त्री ।देवाद्येयायाम्याने। श्रूमाद्येवाद्यायन्याने सर्केग्। एं ख्रेया विस्रायक्या नास्राया नित्र राष्ट्र राज्या सुराना से ख्रा उर-वुर-न-य-जर्भन-नग्र-वु-भ्रे ने महिश्वी नश्व-माय-वि क्कॅर्युर्या भीता भीता है स्वारा क्केंग्राय है स्वारा क्केंग्या प्रायम विद्यारा है स्वारा क्केंग्या स्वारा स्व ५८ के अ विट ५ कु ५ यदे कु . धेव यय नेव ५५ देव के यदे हे र है। । य य ५८:व५:य:५ग:वे:ब्रिअ:य:धेव:व:धर:वश्चेव:वग्म् न्य:श्चे। य:य:वे:यवः वर्रेग्रांग्रे विराधेव मदे भ्रेर्प्ता वर्ष के स्रूर हे दे विराधेव मदे भ्रेर र्शे । परमें लेशमान्य मृत्यूरमणेवावाय हे हे र्श्वेश लेशमें । दे नलेवा ध्ययः विदःसरः उदः मान्दः स्वरः सुदः देः।।

योष्ठेशरायेग्याश्चरम्थे। व्यायश्चेत्रपति। व्यायश्चरम्थेरम्थेयायः व्यायश्चरम्थेयः व्यायश्चरम्थेयः व्यायश्चरम्थे

वेत्रा हुरायार्शेषाश्रायायदेवायरा हो दायवे सामा दि स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व À'र्नेग'र्राय्ययातु'नर्भेव'नयाह्ययातुयातु'यत्वे 'येवायासुरात्ती'ह्ययार्देवे श्रेराधेवर्ते । देखनदाविषाचीशानगुद्यावेषा द्युःसरायार्शेषाशास्याः नभुः अहे : गुरुष्त्र अर्थे अर्था युः क्षेत्री । सुनः यूनः यूनः हिन् ग्रीः धुनः र्वे । अर्थः व र्भग्रायाम्बर्यान्त्रेयास्यान्यायायात्राम्। वियान्यान्यान्यान्यायाया नगुरुष्तु सुनायर भेष्यु र रस्य बेष्वा स्था से स्वायि से निर्देश ध्रायायात्रः कुते तुयाया द्वी यमायत्रु यमाया स्वायाया स्वयायाया यिष्ट्रेश्वास्त्राम्बर्ध्यासुयास्यर्भे । यादः दुः ह्विश्वः द्युः व्युवाश्वः श्रेः यार्वेदः देदः द्युः कुटरद्विः इस्रायायद्यान्य विकास्या विदेशी । दे दे विकास्या विवाद् वस्या विद ग्रीभाभ्रे निरुप्तरावराविषामी भागवरावरा । कुर्ने नासुन रैट-रु-ग्राव्यायर-द्य-विदेश्चिर-स्वाया-ची-गर्विट-रेट-देवे-स्रेट-रु-पि-ग्राय-ग्विमार्गे । शुक्रिस्पावक्षायाम्बर्धिया सेवासे सेवासे सेवास सेवास सेवासे स्वास सेवास सेवास सेवास सेवास सेवास स रेट. देवे माद्यत्यवे सुंग्राया सुर्याय्य स्वाप्त्य स्वाप्त्य । विया श्रीया यदे सह्या हु या ख्या विदायी या स्वया या स्वया स्वया स्वया स्वरा स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया र्वत्युव्यान्त्रम्दार्याच्युःचादेवेःयाव्यादेवःवित्याद्यात्रम्ह्यात्रम्ह्या यार-र्-नु-वा याद्वयाः यया। विरायो स्ट्रेर । यर में या वी से । यर हैं या विराय । यर हैं विराय सक्सराश्द्रि | इसामाहे सूनागुःत्र रुपाञ्चयाग्री मुनाग्री इसामाय<u>्</u>या उत्रुत्रें हुनः धरः र्रे । वरे वरः व्यव्यायरः ग्रुविः भ्रेरः मृदः यवाः वयुः यतः श्रूष्ट्रा विश्वास्था स्वास्था स्वास्य स्वास्था स्वस

यश्चर्यायायायायां विष्याबदशद्वीत्रशह्यः तुः तुः तुः तुः विष्या बरशने से खेवा सर गुनि दे से र तु विवश सुर में के दे से वा सबे वा वह न सहसायान्त्र संदेराचे स्वरा स्वराची न्त्र सामान्या यदे से 'हें वा वड न 'ब्रें वा 'ब्रें वा चें र वर् वा या वा हुन या उर उर से र र व्यव नर्ये । मरामान्यायायाये हेयाया कुपावन ग्रीयान्यायायाया । पासून हि यावयायी द्वियायायाटार् यावयायार्यात्यो तर्त्रा की केंद्र्या वट्या है। विटार्वेया तृति । गार वना में किया वर्षा दे माद्र शानर में क्षेत्र माया में विष् वार्ड्या वया विट १३ संशास श्वट विट श्वेट र द्वार्ड्या वया विट वी श्वेया संपाद र्भूर्य वेद्रा श्री विषय स्वाया स्वया स नुत्य। इःस्वे इस्रायः भ्रानुरार्से । ह्युसारी प्राना ह्या वासाना वा वारा वी शा नभुन्न न यह मी भ्रे नवस वहिस प्रश्रा । दर्गे द सके मा सके द प्रते देव रुःश्चेर्न्यर्भेष्यर्भेश्वर्भान्यः वित्रवित्रयः श्चेर्म्यः यादेयाया वेदादि। यिष्ठेश्वराञ्चेत् श्रुत् श्रुत् श्रुत् स्वार्थात्याः श्रुत् अर्व्धवर्षेत् स्वराधिरः

नवेद्रसेद्र्से मुद्दर्भन्य म्याप्य विवास स्वित्स र्श्वे द्रायाद्रमायाः यावयाः प्रदेशयाद्रशाद्रमाय्याः याव्याः याव्याः याव्याः याव्याः याव्याः याव्याः याव्याः य न्दारी निस्ति । निस्ति । निस्ति । निस्ति । निस्ति । वै। अर्पनवेर्भेर्पर्र्यात्रुत्त्र्रान्यम्यस्थे र्या हुर पश्चेत हैं पाश्चा होते। दि त सुर पहेर पहेर हो रहेर पार ले ता र्वेर य ने के नियायान धीव के विष्ट निर्देश के निया के निया है निय है निय है निय है निय है निय कदे अवद अकुद अ सु वि त त अ पाविया नदे अवे ने दे वें पाट है। अवे ने दे &বাষাগ্রীপ্রবাষাবারবারেষাবস্থার <del>প্র</del>বাষাগ্রীপ্রবাষাবারিবারী বেস है। ने प्यर हैं त्र र न्री र पदे लेट कर है। इस है मा है। सबे में दे लेट कर क्षेत्रार प्रदर्शित श्रीत्रार पाठिया दर्श प्रस्थर हे क्षेत्र र हे दि श्री श्रीत्र र याडिया'वी'नर'र्'क्ट्रें रें य'त्रश'यावय'न'वेश'र्'। वेश'रन'हेर्'यर्। क्षेत्रारु, नर्भितः बुर, प्यानिक्षान् राष्ट्रे में त्यान् प्रीरु है। बुर, प्यानिका वि वियानिर्द्रावेशन्ता में शामवित्रा सवेनिर्द्रान्ता सवेनिर्देशमान स्था म्राम्यासुरम्यादिः भ्रिम्भी । देयात्रास्येन स्रीमानी भ्रमासासूर ग्री कर केंद्र या दे दि रेग अप अप केंद्री । याद केंद्र या देग अप अप केंद्र वि द्वा वर्चरावसेवार्चवर्षा स्वार्चा के स्नेयार्चा खुवा सामा इन्त्र्य वर्ष्य राष्ट्री रावस्ति ।

बेदुः कुर गर विरान दे ने देना या या धेन दी। बेदुः कुर मी कंदा गर वे ना तृमा नयःथा हयातृमा गवितृमाह्ययाशुःयामाइदेःवेदाख्टामारायावेः वर्चरात्र्वार्से के दुरायाञ्गर्यास्यामा इते खराव दुवा से। यावा इते खरा गडेग'य'र्नेर्'ग्रे'श्रर'गहेश'र्षेर्'र्रे। विर्'ग्रे'श्रर'ळर्'र्'न्डे'व'वे'श्रुश' इ.इ.माहेशर्थिन है। सियाळन्न न्य इश्यान नियम् स्यान हिम्यान ळॅर-र्रे वेशन्त्रत्री।रे ज्यास्यवेर्रे खेराहे। हेम्मा स्यापराय हे न्त्र्याची अरावकुन्यी कन्ने वियान्ता अव के ग्रायान नुगास्य वे श्रद्भन्तक्तर्भिद्रायाधेदायाबेद्याद्वी ।देष्यवयाबेताभिद्रायादेवाद्याद्वायाद्वी वा वर्षे अयव शुरावयेय प्रमुक्त मार्चे प्रवास मित्र हो । वर्ष य्य व्ययन्त्र मा भ्रम्य में कर द्वार वर्ष या सुया वर्ष मा द्वार द्वार वर्ष या स्था ने प्यर में न् भी हो नार पेतर है। नय स्मा व्यय हुय यह सम्मेतर है न नर <u>ख़ॱॺॱॸॕॸॱॻॖऀॱॿ॓ॱॿॖॆॸॱॸॸॱॸॕॱॺॕॸॱॸॕॗॗॗऻॸ॓ढ़ॱऴॺॱॺ॓ॱॹॖॺॱढ़ॹॗॸॱॸ॓ॱॿ॓ॱॿॖॆॸॱॸॸॱ</u> यः पॅरन्ति विश्वारी विराधितः स्ति हिराम है। हिराम है। नसःस्म सःगःइदेः वेदःकुरः सेनःनरः नें त्यः वे नेंनः से नन्तर्या सेनःनरः नवि'र्धेन'र्ने । अ'ग'इदे'त्रे दु'रुन'र्ने'य'ते'त्रे'ग्रे'नन्त्रस्य'नवे'न्न'हिन' रें व्याप्त में विश्वासी । दे विश्ववासीया विष्य में प्राप्त क्षेत्र क् र्केंद्रामिन्स्केंद्राद्राचिष्ठशार्केंद्राया ग्रुद्धाद्राद्राचिष्ठशाया विदाना देवी सेवाया यधिवर्दे।

ने महिरागी कर हे उस ने ता ते मारा केंद्र सन्मास्य राष्ट्रिया न

शुःर्द्व ग्राम्स्य प्रश्नित्र स्था है । यह साम्य स्था स्थ्य स्था स्थ्य स्था स्थ्य स्था स्थ्य स्

पि.क्रेमी.पर्यंश.क्षय.क्री.श्रंश.क.लुयं.संश.संजा.मू.जं.लुयं.चु.सं.नं. क्ष्र-सुव्यन्त्रगुव्रयः वक्कुन् विन्यने दे दे ने वाया प्याय प्येत हो । वान प्येत प्यनः रैग्राया नगे र्सेट्ग्रीय हीत हीय नक्ष्य रुट्ग्री खूट न हेट् रुट्ट्र रेग्यायाधिवार्वे । विद्येदाद्दाकेवार्यवे क्षदाहे स्थातु विद्या विदे कवे सम्बद र्वित्वत्वर्थास्रवे वित्रेष्ट्रियाटाची खूयास्य रत्त्र्या व्याप्टि के स्यापा इते ते सु कुर ग्रार थर्रा थ्रुग रा र्देर सा केंगा रा नर्डे रा रा ख्रुव कंट र्टर नर रा केंद्र सा न्दानरुषायाः विदानाने ख़ूदानने नायने दाने वाषायाधीय विवास स्वासी नर्डेशमञ्च्रतळ्ट्राट्राचरुशर्छेट्रायाद्राचरुशमञ्जेट्राचरेट्राचरेट्रा केव सें र रेग्य र प्येव हैं। विका हे तु व रे। क्षूर प्रवेद कुर दु केंद्र वर्षावर्ग्न सेवियाको र हो वे वह का कर हो छ। केंद्र साहो या र दर सुस गहेश। समे रेवि हैं गट मी में साया नवि मासुसा नहें ससा र हो नत्त पट <u>ख्रस्यार्ने वर्ष्य के क्रम्</u>रे हेश्यवर्म्य वर्षेटाने वाहेश्या से न्यान यर-रुद्र-वर्दे वेश-वाश्वर-वर्ते न्युद्र-यर-त्रुदे । द्वी-श्वर-यर्वे श्वर-वर्वेदः ग्री:कॅन्यारावे:वा नवी:क्रॅन्य्यानवी:क्रॅन्यो:क्रून्यवेन:क्रून्य्याः

मासी निकार में न नवेद्रके कंद्र दुर्वणुर नदे भ्रीर दें । द्वी क्षेट्र अदे भ्रूट नवेद्र कुट दुर्वे वर्यादश्रामान्य अप्तिरामाधीनायावर्ये रात्रे प्रोत्ते श्रामी मन्त्रामान सुराने रामा धेवाते। यात्रयात्। केवार्यावे प्यायाया इते वे त कुटा वाटारें। किटा र वे खु खुर छे न दे। । ने दे प्रयम् वे प्रयम् वे यान्य। हे समा न वो क्षें र इस्य या ग्रे खूर न ने न खुर र जार धेव र ने वे न ने क्वें र स क्य य ग्रे छेव से धेव है। दे यश्राञ्चमारा नरुदानर से हुदें। दे दमामी कुद दु से यह सामुमारें के नर्डे अप्य ख्रुद र्क्षट् प्रदान विश्व र्क्ष र क्ष्य प्रत्य विश्व र क्ष्य र विश्व र क्षय र विश्व र र्नेट्रिन धेन दें। विदेट ने पिनेश में प्रमानेश में प्रमाने स्त्री स्वरंध स्था प्रमाने के स्त्री स नवेद्रकेद्रार्से देने हिंद्रक्ष्य ग्री सूद्र नवेद्र कुद्र द्राद्र क्ष्य नवेद्र स् वर्त्तेर-प्रमः कुर-दुः प्यर-दे विविद्यन्त्र विश्वन्त्र विश्वन्ति विश्वनिष्ति व र्वेट्ट्याधिवर्से विश्वर्से | द्यो र्स्ट्रिट्य देश सूट्ट्य वेट्ट्य विश्वर्या हेदे-नग्र-तन्नावनाः धराग्रदे । श्रुर-नदेः अधिकार्वे । नग्रिन्यः हेः सूरः नुन् नुरः कुन न्दर्भ नुरस्ये व्यास्य स्याप्य स्रीय मी नुन्य स्राप्य स्थाप क्रन्यश्राम् म्या म्या म्या स्वार्थित स्वर्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार तूरायार्शेनाश्रामधेरळें स्टान्नदाना सेन्दानहुत्र में शागुरासूरान नेन्दे क्षेत्रप्राच्यायाध्येत्रप्रयायाध्येत्रप्रदेष्ट्रेयायायेत्र्त्री । क्रियाचीयाचाय्या गिन्द्रित्वः क्षुं क्षंग्राक्षः हे खूर्ये व्याद्युद्दः न्वेत् दे न्वेत् त्रुत्व हुत् से श्राम्य दे

हेन्द्रन्त्वरुष्ण । प्रमान्त्रेत्र । प्रमान्त्र । प्रमा

नुभगश्चन्यत्व विद्याम्य विद्याम विद्याम्य विद्याम विद्याम

निक्षासार्यन्यस्य स्थान्यस्थित्यः स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

धिरःर्रे । इतायर वर्षुर नश्रान् उदानश्री शायर श्री गुर्दे ।

ग्रुअः यः चल्वा यदे वाव्यः द्रायाव्यः सेवः यः चस्रुवः यः वे। सूरः नवेद्रिके सेद्राद्रे देव्या ग्राट्सी नव्या से विकास स्ट्राट्यों अपस्य स्ट्री न-१८ वार्ड सँगास से वार्ड र नदे हिंगास सु से नव्या है। सूर न ने द ते नवनानी । नार-रु-नवनान् भूर-नहेर-नवनानाने देरे के दर्र देश हिर होते। हे क्षरा गुरु ना द्वारायना । परा विकार ना नहे ना सदे के गुदे। । हे ना सा गुरु विवायानमें न्यार्स्याह्मरा वुरावी विषये ग्रीश्राक्षराच ने दावना प्रति क्षेत्र क्षेत्र मुन्ति । कु के त्यश्रा नुष्रा भाषा हाले वा भुगासदस स्रदास्य मान्य । देते ही दर भी नादर स यश्चित्राम् वीत्राद्रास्य वित्रायात्रम्य स्यामादे स्राम्य द्रामा वित्रम् भ्रॅंबर्रापञ्चरदेवेयावरःवयायीयःविरायःबुर्यादायवरदे। भ्रिंबर्र विः श्रुरः दे श्रेयाया श्रेवाया प्रदे वार्वे द्राया श्रुरः वदे श्रेरः याया श्रे वववा वि भ्रेंत्राप्तः श्रुरः ने 'धुव्यः वाव्यः नु स्थे पश्चरः रे । । विरः विरः नः श्रेवाशः श्रीः नवेन्ने भेर्ने न्युवा हे खुवावाव्य न्युव न्युव वर्षे । वर्षे नवे के खून नवेन्यग्मरार्थानभूमःर्मे वित्विक्षानभूमःव भूमानवेन्ने धुया न्वानकः प्रमान्ति । श्रुद्धः प्रमानकः विद्धः विद्य

याहेश्यान्य क्रिंग्य प्राचित्र व्याप्त व्यापत्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप

गहेशमा मुराम्य विष्यामा सुराम्य सुराम सुरा

यानुमाना मुहान अन्तरा भ्रमान पायान महिला माहान महिला विकास महिला महिला विकास महिला विकास महिला म बसूर्भूर्भूर्विरभूरेर्भूर्वेश्वरभूरेर्भूर्वेश्वर्वेश्वर्वेश्वर्ष्यात्रभूर् न्वीं अः स्था न्वो वन्त्र श्री अः स्वा स्वी स्वा स्थि स्वा स्थि । यार वया मी श्राक्षे श्रेय व्या श्रिर यवे र यार व्या है शासून वे खा श्रूर यवे र શૈ.વુ.વુંવે.ક્ષેત્ર.ત્રમ્લે.રસાટ્ટ.મેં.મુંત્રેત્રાજ્યાં છે.ક્ષુત્રાજ્યાત્રાજ્ય કાર્ટર શ્રુંક્ષ્યાટ્ટ. र्रे. हे. ब. हे. ट्यार से. ट्रा क्वर से. हे। ब. हे. दया से. ट्या से. च वर हे. से. सं. च हे. म्रेर्-र्रे र्िन्यारान वरान सुम्यायाया व्यापित सुन्देर प्रमान वरा स्वर थुग्रायावोर्यसर्गे येन ५८। युग्रायाया गुरापि युन्रापि युन्राया हुसारी दसागु नवित्राः बुरः वाश्रुयः न्दा ने हे नः ग्रीः यद्यवयः वय्या यदः श्रीवाः यो व्यादाः न्दाः थ्व'रा'कु'श्रेव'ग्री'शें 'क्ष'तु'न्व'नवह 'क्षे'श्र'नदे 'ग्रीम'र्से । ग्री'सर्या ग्रह 'ग्रुव' व'नवर'र्दे। ।गर'गे'से'स'वे'व। भ्रुग्रार्थासे'से'सवस'र्देवे'से'स'नहर'नस' मुनर्जे । ने वनव लेग मे रामुन न रा ले न वनु सर न र न र न हैं किया वर् न'य' श्रुवा'यर शुर्रायय श्रुव्रे । वार वी या नहर व श्रुवाय यय हैंदे क्षेट्र-ट्र-विह्याम्यानसूयायादे द्यासूट्र-विवेद्र-हे स्वाउयादुः वर्श्वेद्रि । सूट थुग्राश्चर्मा भ्रुद्राची भ्रुद्राच स्कृत विद्या साम्य स्वर्था साम्य सा

रसप्रायहेसामानश्रेशम्बर्भात्र्

यहिश्यसंक्षेत्रश्रम् द्वान्त्रही । श्रुवाश्रभुत्त्वस्यस्य श्रुव्यस्य स्यस्य श्रुव्यस्य स्यस्य श्रुव्यस्य स्यस्य श्रुव्यस्य स्यस्य स

मशुश्रामानश्चेनामिते छं यात्रे भ्रुट्टानश्चेनामान छुँ । श्वनशामानश्चेनामित्र छुँ यात्र मुद्दान्त स्वाप्त स्वा

सर्युवास्यादिराविरानु वायके रावस्य के प्रविद्यास्य क्षिण्य स्वाद्य स्

महिश्यस्व न्या स्व न्य स्व न्या स्व न्

यत्त्वाची भावश्रेत्यास्ट्रें प्रायम् दिन्याने क्षेत्राची भावत्त्र स्थान स्थान

## र्वेन'म'से'हसरामर'नसुर'नदेर्द्वेराम्।

विश्वभाक्ष्याचे क्ष्याविश्वभाक्ष्याचे स्थ्याचे स्याचे स्थ्याचे स्थ्याचे स्थ्याचे स्थ्याचे स्थ्याचे स्थ्याचे स्थ्याचे स्थ्ये स्

न्दः र्वे त्या या व्या विष्या या विष्या या विष्या या विषया विषया या विषया विष

है। दे नशाम्बर्याय महेव पाद्ये राष्ट्र के निवे हिरादर। दहराही सा पिशः सिरः रं जिर्दा राषे रे से राष्ट्री । रिचिरः श्रः यात्र श्रः राष्ट्र राष्ट्र रे से राष्ट्र रे से राष्ट्र र ग्रवश्येत्रप्रायुर्वित्रवृत्राष्ट्रयाहेशाशुरवशुरव्यस्थे। ग्रुवराग्रवशः बेर्प्सर्गुर्द्धः वाद्रार्द्धायादेशायश्च्राप्यवश्चरावर्धः विदे । १८० र्ये महिरादी नशुर द्वीं राहे। द्वर प्रशासे द मार्थ साम से द राहे हिर हैं। त्यात्रा के अभिने प्राप्त का निष्ठा विष्ठा नन्गानी अष्ट्रेन् सः श्रुरिः नवे वात्र अष्टरः न्दरः खर्यायः श्रे वर्श्वे नः न्दरः हे ः नावरान्नो द्धयाया सँनारा प्रदे सूर्गेव मीरानावरा ने नर्या नर मुदे । ह्यापादिशासे दे के पाद्याये पादि पादि व व दे व द व या के या स्व पाया हा नःव्यन्यन्य विदेशके के शक्त न्य स्थाय व्यापन स्थाय विद्या विदेश विद्या सळवरहेन्'स'र्थेन्'व'यान्'गविव'त्वेते'व्न 'त्र श'क्षव'स'य'रे'वेग'मी'गव्रश' हेर्ग्रेशज्ञानःव्यन्ज्ञाक्षे यदेवे हिंद्राद्रायम्य में विवासधिन हो स ब्रिन् ग्रीश पदी पाल् प्रम् गुर्दे लेश पाश्य स्था प्रदेश भी मान्य स्था सा व्यानराद्धयाविस्रयायळवानाने सुन्तावानन्तानी याम्दारासहे ना र्शेम्बर्गन्त्रेत्रत्म्यम् से ह्या देवा ग्राम्य म्यान्य मेर्द्वेत् म्यान्य होता मानद्यामीराधी अभियाद्यासराद्यासराधी गुनिदे द्यीयाया नर्यात्री वार्यासम्द्रासायार्यात्रास्त्रास्त्रात्रे वारायात्वारायात् मिर्स्थियामिर्द्रिश्चान्यस्थाने स्वाचित्र स्व

ह्नेग्रार्गे हें या पार्रा ध्वारा क्षायक्ष य श्वारा शक्षर पार्श्व वा या रदःचिवरुद्वर्गवर्थाः अळ्यश्वरुद्वरुग्वरुशः । बःअवःचवेःचा बुवाशः शुःदर्गाया नह्रवः सिकार्यः दरः ध्वाया नहेः नः दरः नर्वेदः यः दरः ध्वाया वटायिक्राचार्यायायवायर्ग्यायायाचित्राया स्राम्यावयास्याया या नर्द्धन्यः नर्ने दशः शुः नर्शे नन्ना भेरः वर्ने खेशः नर्गे : नर्गे स्थः वावरायकवः वरः वार्वेषः वा वर्ष्वः धरायः वर्षाः वावराः स्थितः देवा वर्षाः नदुव-मायान्यानकपानकपानिमायकेषार्थे। विषायवान्यस्यान्त्र्यार्थे। न्नो र्द्धया श्री मान्या धीन प्यमाना वार्या श्री रहें मा श्री स्रोपन में निवासी । ने भू तु य नहेन न सर्के केन में य गन्य भरते महा भूर पेंन हन परेय नररव्यूरहे। भ्रेमरनमायमा न्यायदे भ्रेने स्मायद्या स्माय त्यानवे द्धया श्री शानवो या नहेव समा श्री ने निम हे वाने पी पेवि का निमा क्रेन्न्यान्य्रीयायम्। प्रायम्। प्रायम्। वियायाः सूमः मे । प्रायमः। ग्रैभःग्रदः बस्रभः ठदः वः ग्रावसः श्रेवः यरः से ग्रः ग्रदः वदे । सुदः वद्भःग्रेः नह्रम्यास्य स्थान्य अञ्ची । मानस्य न्द्रम्य मानस्य न्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स यर मुःवे व वावयः मुयावयः यावयः य यावरात्यासदात्तर् भेरान्या नश्चेन्यम् जुद्रा वित्रसावरासं त्यायावरा नरदर्ने अर्थअले न अपिर में ने हैर ग्रम्थ सम् ग्रम हैर धेर समेरे मुरायावरार्राने त्याहे स्नून नश्निराया है साया मान्या निया । याना

क्ष्मश्राम्य स्थापन् स्ट्रिन क्षेत्र क्षेत्र

यिश्वास्त्राचित्राचित्राचित्रक्ष्याचित्रक्ष्याचित्रक्षयाचित्रम्य वित्राच्याचित्रम्य वित्राच्याचित्रम्य वित्राचित्रम्य वित्रच्याचित्रम्य वित्रच्याचित्रच्याचित्रम्य वित्रच्याचित्रम्य वित्रच्याचित्

नगुरः हो दः दः भे वाल्वा यः ददः । के अः ददः बदः बेदः द्वाः वी अः वेद्र अः क्षेत्रः र्'भे'ग्विग्'र'र्टा दळर्'१,व'र्शेग्रं'र्गे'र्ने'रेटे'र्सेग्रं'र्म्स्रं नर्दायाद्या ग्रम्थाद्यायायायास्त्रीयात्र्यादकराधीयात्व्यायराज्ञी । कदा यने न्यायार व्यक्तिय ने या सन्दर्भन्ता वे वे वि उत्र हमा न्याय हैं से नदे न न मान्य अर्गु अरम न मान्य के नाम हो न न मान्य के न देशमान्त्रेन्ने । पात्राचीराक्षाक्षामान्यान्य । स्वान्यान्य । धर होत्र धायात्वो प्रत्व तहोव त्यात्रिवा या धरे हे या धार्से सार्थे र प्रश्नुर इटार्सेराग्चानवे भ्रीराज्ञवशाम्रीकार्यो हिटालेका हैवा उवाज्ञव ना क्रीं नरा चुर्दे। विद्रासदे कुं सद्दार सेवास यह दायावस या वर्षे दाया सेवा हर्निन्द्रम् वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र विस्त्र वास्त्र व वृदे। । कर्पवि कुप्तहरान नर्वेर्पा व्यानस्देश या वा भी नर्वेर्पास्थी वुर्दे। कुः अञ्चर्दाना नर्वेद्राया वुः नर्द्रा वेद्र अञ्चर्या नर्वेद्र यर्द्र अञ्चर् यर विरश्वर विरश्चेर हैं। । वन या वार वी या ग्रार इर वेर से हो र या है र लेवावा देवावयापरावयाच्यूनायरा हुर्या थिए हुन सेनायरा नुसून न्या वेया नभून गुन्यो र्ख्याय ने र्ख्य म्यान्य ने त्यान भी सुग्यान नियान वेषित्र प्रत्य विष्यु विष्यु प्रत्य विष्यु प्रत्य विष्यु । विष्यु प्रत्य विष्यु । विष्यु प्रत्य विष्यु । विष्यु प्रत्य विषय । महिश्रासा मुद्दा क्षें स्ति मुद्दा स्वाप्त की अळ दे क्षें प्रिये दे स्तु मुद्दा की स्वाप्त के स्वा

वार विर ध्वा रु शे किर देर न पर महास्वया न श्वा शहरा रे हे तु <u> इर-५८-१९८२ । अॅ.१९८-१८-१८.६४.२.४.४४ वर्षः १८८२</u> चेत्। विश्वानवरावे वा क्षेप्तवराहे नरामवमायर चेत्। क्षिके वार्या चुर्याया ले विचा ग्री:ह्यारायावाद्या व्याप्याद्या विषया विचारी ह्या या विषया या गुरुषा मर्दे । भ्रेष्ट्रा निका भ्रेष्ट्रा भ्रेष्ट्रा मित्र मित् मश्रेमवर्त्र्र्र्र्र् नवे भ्रेम सम्दुन पठिया पी श्रापि विया व्या हुन सम् हुर्वे । बुन श्री हैं पश्रा र्शेन्द्राष्ट्रेन्द्रान्द्रन्न्वत्र्व्यात्र्रे । श्रेन्ट्रेन्यश्चाद्रान्यान्त्रेश्रासाधेत्रासरा इन्नवरक्षे हुद्। ।न्य दुश्हे क्ष्र हु वे व शे व शे व श्रान्य निष् निक्ष्यायार्श्विषायायार्थायार्थेन विद्नारा विद्वा विद्वारायार्थेन विद्वारायायार्थेन विद्वारायाय्ये शेर्देरर्दे। शिर्मेषायार्श्वायापवेरसुयात्ययार्थः विराधेर्देरर्दे। दिः न्वाःग्रम् सुःसः तुरुषः सर्वः से स्ट्रेन्स् । से स्विन्ने व्यक्षः तुः से स्वतुन्यः नवेतर्रावन्याह्रअप्टराष्ट्रीयश्राम्यान्ति हेर्र्यात्र्वराहेर्य

यश्चारायाव्याय्याव्याय्याव्याय्याय्येत्र त्याः है त्यायाः विष्याः विष्यः विष्याः विष्यः विष्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्य

त्रु न न मुन्या अर्के न हेत्र या सुना वर्षया न ने अपना है। अपना है। मर्बिरायरार्द्रमा मरायार्क्ष्यादे में या मुरायार्द्रमा ने यार्द्रमा समास्या नियार्द्रमा नियार्द्रमा नियार्द्रमा ह्म'न'ळें अ'य'न्र अ'हे 'न बिद्या | बिद्या श्री | अर अ'हु अ'य अ'ट्ट रें र ह्म अ'य' स्यान्त्रः वरायश्रद्धार्यः द्वायायायाः विद्या स्राप्यायाः है। देवे स्रे स्यायाः वि नक्ष्मारावे पावि सामस्याया वरी नक्षमारा मस्यायस्य स्थापे सा नहुयः वृग्रभः उदः श्रीभः त्रः यस्य । स्रूरः हे दः सयः दसः यदसः दसः देश । सः निद्याचर्यात्रयादे दिवात्। स्थित्यायादे स्वया स्वरित् । दे त्या स्यात्र्या नभ्रेत्रायाधेया भ्रास्यावे स्वार्धिया स्वार्धित है। नि वे ने त्यायात्ययात्या स्वार्थिया । क्रें मानविद्यन्त्र पद्मिष्य प्येदा विश्व न्ता स्टा हिन स्याम् स्टर् नविवर्ते। । प्यम्य मात्र यात्र या प्रमानम् । ये दुर गुरुष प्रायु पर्दे पर्दे प्रायु । हैं प्रारू शरशः भेशायात्येशः सियोः प्रकृता सिः सः योवशः प्रदेः सुर्योगशः यो वियोः न्गुरायाश्चापस्याननेत्रालेशाश्चरायाश्चा नने नेराना वन्या ह्या नर र्शे-भेट-दट-कुःय-श्रेष्राश्चान्य-द्वायाया । दे दे व्यवष्याश्चायाः स्वाप्ती । दे दे व्यवष्याश्चायाः स्वाप्ती । हे सुन्तु सुन्ति न की लेश मान्य या नहें न पर किया । नहें न पर न ने देश में वर्रे यः न्वायः बेरः न्वा वारः यः न्वायः नः ने न सून सः यः हे नः नुः हुर्दे सूसः नुः

धीर्यः गुर्दे । व्यावेशाय्ये यात्र्याय्ये थ्याये व्याप्याये । व्याप्याये । ग्रम्भःने नर्भेनःश्रूम्भःमःविषाःधेम्भःग्रम्भयः होनःयाम्भयः ग्रमःहोः दॅर-वृद्य । प्रायम् वार्शेयान्यान्य यात्रुयान् व्यान्य वार्थ्य यात्रुयान्य वार्थ्य वि नम् वर्षेरानशान्त्री नार्वे नक्ष्मनायाम् अया त्रार् वर्षेयानवे नम् अराहे या दुरागर्विष्य रामकुराधेरा प्रस्वा रायसा या प्रमा निर्मराये याडेया ग्रुप्त हे रहें राग्री प्रविंद रहें भूद हेया सदे यह राप है राप निवा सक्त ज्ञान द्वानिक के निया स्टार मना स्वापन द्वानिक । सर्के निहेता महिरादे के राष्ट्री निराम ब्रम्म महिरा ख्रम्य गुरि प्रमा स्थाप के मार्थ महिरा के प्रमाय गुरि महिरा महिरा महिरा यदे नहा सर हेदे हु सर् र हैं प्रमुख्य मार्थ स्थान स्था धेवर्ते। । वायरे नर्शेन् श्रूबंश्य राष्ट्रेश्वर स्वाय स्व कुळवार्याया स्त्री विषया विषया है या वर्षा सामे व्यवस्था सामे व्यवस्था सामे व्यवस्था सामे विषय स्था सामे विषय स धेव व खूव डेग हु न शें द खूँ अश्वाय दहुना न अ शें शें र वहुना डेश वावरायाल् वर्त्र विद्या वायाने वावराने खूद ठेवा वर्षे न खूँ सरायायह्वा धरःवर्डेदःकेदःवर्देदःवःवावयःदेःकेदःददःख्वःकेवाःवर्शेदःश्लेषयःवः वह्रवाः धरः हुर्वे । ध्रुवः ठेवाः व्वावायः धवेः क्षेः त्युरः से कः वः सेवायः धरः दरः धरः राद्रा वाषरद्रा व्यम्भवायाः श्रीवायायाः व्रम्यायाः श्रीवायायर वावरायरायर्म, वर्षे वर्षे वर्षे विषये विषयः विषयः वर्षे नर्सेन्यान वरान विवा हेन्य वाव याने त्यान न्यान सकेंन्य सकेंन्य सकें ने नावरा न्द्राय वर्षे नाय स्वरं न स्वरं न स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं न नावरा स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं

नःकेशःसर्केनाः तुःशुरायादि । निवेशः निवा हेशः वावशायाद्यया नरः हरि॥ ग्रम्भःनेमःनर्भेन्।मःय्ययःविगः हुःसः वन् वुःनः वस्रमः उन्यः वावर्यायायायी वार्वे दायादे । सूर्य स्टें दारे वा यर गुर्वे । वावर्य ग्री स्क्रूय वेदा श्चे त्रुवारायःस्वारायन्वारायम् नुद्धि । वार्वाराखन्यायन में विरायन नवेन्द्रान्त्रवेन्कुर्न्तवेन्कुर्न्द्रात्यःश्रेष्यश्रान्ययुः नर्म्यवेश्वा विश्वश्रान्दे न्याः रटरर्ने म्वर्थर्भ मविषायर हुदै। विवयास्य सर्केट हेव या स्वाप्तक्या नः वा वावर्यः स्थायद्वाः इयः दृदः कुः दृदः स्ववायः यः यः स्वायः सः दृत्यः वि॥ यावर्षाणी मादारा नया न्या निर्माण कार्या न भी सही प्राप्ती माद्रा माद्रा प्राप्ती माद्रा प्राप्ती माद्रा माद्रा प्राप्ती माद्रा माद् वान्त्रवाद्यान्य प्रवाद्य । वाद्यान्य प्रवाद्य भी सवाद्य सूद्य प्रवाद्य धरः हुर्दे । त्राक्षेष्ठियानान् । त्राव्या व्याप्य व्याप्य हुर्दे । त्रा वयश्यीःयावयःस्यायदेःहेशःशुः वयश्वत्राव्यत्यः वृद्। । मूरःयः नगु नवे छ ५८ मट हेव ५८ मट हुअ ग्रे क्रेंट के य बर अ ५ तुय नर ग्रेंट्र यावर्षाः ग्रीः सक्षेत्रः ख्रुसः याहेर्षः श्रीः नरः ग्रुट्रि । यावर्षः ने 'नयो 'वर्व ग्रीः श्रुयाः नन्रःश्रेष्यश्चात्रः भ्रेन्। न्यः भ्रेन्। नुः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स अर्वेद्राय दे निर्माणी अ सुद्राय था श्रीमा श्रीमा श्रीमा स्था मात्र शादे । यश सुद्राय स्तु हो । वर्त्रः श्रीश्रान्त्र्रेस्याया धेत्रात्रः देते दिन् श्रीः यश्याया वर्षे दिन । यह यात्र श्राद्योः

वर्वामुर्यायम्परावर्देरावरावर्ष्म्रयायार्थेवायार्वेयावर्षेयायाहेरात्रा नर्भेश्वान्द्रम्पी ग्रुम्पित्राया देख्रम्यानर्भेश्वायम्यावनः विवासित्रायायम् सर्वरायशास्त्रराद्धराद्धराद्धर्य । भिरार्वेषाश्रायाश्चिषश्याराद्धरावराद्धराद्धरा अर्केन्द्रेन् अँग्रायाः भ्रेयायाः भेर्यायाः कृतान्त्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वि नर्नेनायन्दर्शे निरक्षन्य नश्चन्य व्याया श्वीत्राय स्थान में विषय न स्थित <u>षदःवेशःमशःग्वर्शःग्रेःकेदःदुःसःबदःदगेःवद्वःग्रेःश्रेरःषदःदगेःद्वः</u> नर्भे विश्वस्त्रम् भ्री स्र स्वराहर् देरान्य स्वर्ते न्य स्वर्ते स्वराह्य स्वराह्य स्वराह्य स्वराह्य स्वराह्य ब्रेग्रायायम्याम् ते वे प्यानुयानु या पुत्र के मेरायम नुर्दे । क्षे त्रोगशने नगा हु से न तुया वे । ५७ उटा से सर्ग्रे ग्रास न या तुरा ने सा नविवर्त्यावयापरायार्थेम्यायाये वर्त्त्यम्यायात्राहे रावहुरावर्तः क्रॅंशर्मेशः श्रें श्रेश्रायाः श्रे दुर्पर दुर्वे । याव्याय्याय्याय्याय्याय्यायः श्रे नुर्दे। । गावरु दे त्यानवरान विषा के सेरानर तर्गा पर नुर्दे। । गावरु दे ल्रिन्यश्याव्यायम् अत्रि । याव्याययायव्यानेते अन्याययायः वें सेन्यर्भे अपरम्युन्त्रा ग्रम्थर्थे कें अपी अप्यर्भे ग्रम्ये यथः यःग्रांभःसरःग्रुःमःद्राः ग्रम्भःग्रेःग्रुःमःयःवर्गेःभूगःभग्रेग्भःग्रेट्राः सहसायसायह्यायर मुद्री विवसाग्री मुन्याया भूराय विसायर मुन् मर्टे.क्.रेर्ट्रके.स.रेर्टी विष्यासंद्र,रेयर.सीयार्थायाः साम्रियः संद्रात्वयायाः श्चित्र व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत

गहेशमाब्रायाद्याचार्री निर्देश विस्राया मुस् गर्थेगानहगारान्या अन्यहणारान्या नन्यार्थेगायी राहे सूरा ग्रायेवी न्द्रस्ति। मान्यान्द्रमान्यान्यान्यत्रस्ति। मान्यान्यान्यान्या ठेगा नात्र या या या तत्र न्तर हो त्य या नात्र न ते हीं न या हे नात्र या दर सम्बर्धिन्द्रा क्षेत्रन्धेवन्द्रा सम्बर्धिम्बर्धान्द्रा क्षेत्रन्धेवः याडेया'स'न्रा याद्धयार्थ'संदेखानुस'यर्देश'स'न्रा ध्रुव'डेया'तु'नया'सेनर्थ' यदे वात्रसङ्कान सेन्यायर ङ्कान न्या वार न्या ख्रुव रेवा वाव्या विवास वर्वाःसः न्दः व्यवः विष्ठेवाः पुः वर्शेवायः सयः वर्षेयः सदेः श्रें वः वर्षे वः नदः वादः गैर्भाग्नारासर्वेरारसार्वेर्भासार्गाहेर्भासुरास्त्रीत्रसेरासराधरा न्यायः नः स्त्रिः पर्यो या राज्ये राज्ये राज्ये राज्ये या निष्ट्रे । स्त्रुवः केया याव राज्ये यायार्सेन्यस्यित्रम्यार्धेन्। होन्यम्यस्य सेन्यस्य सेन्यस्य देवा'स'इसस'ग्रेस'दर'वार्षवा'ग्रदे | विर्वायर्षवा'ग्रु'वदे स्नवसंप्देर र्स्न न्य्रें मान्य स्वाप्त न्य्रें मान्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त वर्गियायावर्भे से द्वाप्त्र में से द्वाप्त्र मात्र भागी हैं नाम्में वास्त्र में वास्त्र मार्थे वास्त्र हैं बेन्द्राय्य राष्ट्रेन्द्र यथा र्शे । निरमेन्द्र या यह से से द्वाराय राष्ट्रे। । निरमेन्द्र न्नो ख्यान् सूनायम होन्यया श्री । ने सेन न सूनाय से सून न से न हो या वर्षाण्या होत्। ।वर्षाण्या हार्षे अस्स इस्थ रेपा उर्द विर वस्थः उर्ग्ये वर्ग्यार्थे गार्चे रासे त्रान्य वात्राय सम्जानिक विद्या व ग्रवशः तुः अः ॲं नः वावकः ग्रानः निनः लुः लिनः ख्रुवः ठेगाः यह् गाः प्रवेः वनः वार्षवा निर्वाणिया निर्देश । वार्षिया निर्देश । विर्वाणिया निर्देश । विर्वाणिय निर्वाणिय निर्देश । विर्वाणिय निर्देश । विर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय । विर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय । विर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय । विर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय । विर्वाणिय निर्वाणिय निर्वाणिय । विर्वाणिय । वि

गहिरायां नि नि वर्त्रायां मुद्दानि श्रुव के वद्यायां विवा वीशः शुरु दुः दुरः वी वदः वार्धवाः श्रीवाशः श्रीशः शुरु दुः श्रीः दुरः दे। । दवीः वर्वाची अव न्यावराय स्यापी अव सेनाय हैन धीव व अव ने वर्षा पी पा मीराधित नम्माम्बन या वर्षेया मुमार्वे । धित नम्माया नरेया धर यायर्वेरावादगे।यत्वार्वे।दर्गेराययाञ्चवार्वे।विषे वर्त्रम्भे में द्राये द्राया या स्थान स वा बुवारा या र्रोया न प्रकें प्रकें प्रकें प्राया न वा राष्ट्र के वा राष्ट्र वा राष्ट्र वा राष्ट्र वा राष्ट्र यव कर ग्रम् श्रेव पर ग्रमें । वर पर र र र र रेवे परि स् श्रेय या पर्वे र व वर्ष्यानेविः ध्रेरात्रान्यो पर्वर्षा श्रीराय्या राज्य वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र नहरन्नर्म्यार्ग्यार्ग्यार्ग्यार्थायाः स्वीत्रायाः स्वीत्रायः स्वीत वर्वः ग्रीः नर्गो र से न व सरसा मुका ग्रीः नर्गो र त्यका श्रम्भ स्वर्था स्वर्धे । निर्वोः वर्त्रदर्भाष्ट्रशास्त्र स्त्रे अपे पादिका ग्री राध्य शास्त्र स्वर्ध स्त्र स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स यादर्वेरावाधेर्वावस्वाधरात्राया सेरावास्यस्य ग्राटाहेसायासेरा म्राज्यायाची वर्षाणियायी वर्षाने व्यान स्रोत्राच्या वर्षे वर्षान्य स्रोत्राच्या वर्षा वर्या वर्षा वर्ष शे हुर्दे। विद्रास देवे के गार्देव द्राप्य स्वराय दक्षे नाय सव याद्रा के शाद्रा व्याया वर्शेन् व्यथायायवायावन्यायेवायोगायायायम् भ्राम्याय्यायम् भ्राम्या ने ख्रुवा सर कवा रायदे निर्देश में ख़ुर न वे न ता र्रेवा राय हिर केंवा रहेश वर्ग्यायाया वर्ग्यार्थेयायीयार्ग्यायाय्यस्थे ग्रुप्यस्व स्थर ग्रुटे । वर् वार्षेवाःवीरुव्हर्भन्दे व्यःश्चेःवाद्यश्चःयरःश्चेः ग्चःवरःवाद्यश्चः दवाःश्चेदःहे॥ वर्षार्थेग्राचीशः च्रेवः पदेः वार्यस्य प्राप्ते वर्षः प्रसः वर्षः चर्षेः चुर्दे। वर्गणिंगानेशवर्भाने । वक्षेरानेंगशवर्गो वर्वा की सवासूव वस वर्षाने सुरका हे वार बना में सया सूव या नवना सर बुदें। । वनका नार म्रीश्राचीवया.वृ.यी पश्चास्त्रेश्चराष्ट्रिश.र्कर.ची.य.कृर्याचीश. ग्विमासर मुद्रा विकेर देवाश सदे म्वाय श्रम्य शहे सूर विश्व सरम्म मु वा दक्षे न ने दे नावश भ्रम्य श शे ह्या श दक्षे ख़ुश श्रें ना श प्रें न श शु नहना यायाधराद्रराधराद्रायनदायरा हुर्वे । वदायादेशा है विदावर्डेगायरा हुर्या यदेः नि नदे में राने न्यान्या नदी वन मार्थेयाने राज्य महिन धेव हैं।

र्वेदःवःश्रेष्रभःधरःवर्वे नदेःके द्वो वर्त्रदेशम्बर्धः नहतः द्वो वर्त्रः इस्रशः श्रीः सर्वः र् पर्वो नरः होते । पर्वो नवे छे र्वो क्षें र रवा वे वारा व यावरुष्य महत्र भी रूष्य स्वर्ष प्रमास्त्र हिंदि । द्यो क्षेट दे प्रमासी रूपावरुष यहत्र दे बर-रवी-श्रॅर-रे-रवा-सव-द्धंव-व्याय-व-प्य-न्यूर-स्य-तुर्वे। वावय-नह्य-वदःवयःयः वुदःवःयः द्वोः श्रॅदः द्वाःवीयः श्रेः देदः वदः श्रेंदः श्रेः वश्रदः धरः ह्यों । गावसः नह्रवः ह्यें रः गी हे व्यविसः तुः ईगासः सः सः स्परः द्योः क्षें रः द्याः वीशनस्त्राच्या । वायाने प्रवी क्षित्र प्रवासीत्र प्रवास वायश नह्रम्धे निवेद्दर्भात्रभूरादायारान्ध्रायरानुदे । । निवे क्षेराद्वययाने क्ष्र-नर्भन्या क्षेत्रमा क्षेत्रमा क्षेत्रमा क्षेत्रमाने व्यापने विष् **बुद्रि ।** नगे र्श्वेन्स्स्रस्य बर्स ख्री र क्षेत्र न्यू न न्यू व्या क्षु न्यू स्था र दे के र ग्री नर र् कुर बर कूर के वा के अ नक्षे नर गुर्वे वित्व अ के र वा न वर्षानञ्जनाषापदिः तुषाये द्वायायाया विष्टे रागाव्या महत्र देवे सूर्व गाव्या धरः श्रुदे।

नह्रवाश्वास्त्रः हें द्रायाँ वाश्वास्त्रः स्वर्गाश्वासः हे द्राया अद् वार्षेवाराखेवारायरासासुररायाहेराधेरादा कास्वारासहेरायराजुः नदे भ्रिन्येग्रायन्य याने व्यापन्य अपूर्य पाने गाहे यायायगान ह र्शेम्बर्ग वृद्धि । नर्मवुर्वाण्यम् अर्थो द्वार्ने विष्ठे व्याणे व्याप्त विष्ठा विष्ठे गर्वाचे । इट्य सेंस्य नह इस्य ग्राट सहे स्याय स्यागुर व ग्रावस नहता र्रमीश्रासहेश्रासराग्री । पात्रानहत्राग्रीश्राम्यरानुरिन्नायायर् वहेंदेःगान्रसःग्वान्तुः श्रुःचरः से गुर्दे। । गार्द्वंगः वया। वरः प्रः प्वांवः सः पेरः ग्रथम् तु ने म्या मी शास्त्र व्याविस्रशामी स्त्रु व्याविस्रशादम् मा मान्य सामा गृतः मुर्श्वेर्यः र्रेग्रायः रे प्रदेव र्यं गृत्याव्या प्रमः श्वः विद्यः द्वाया विस्य रे प्याव्य प्रमः त्राचायारेश्वासराञ्चरायरायारात्वरी | प्रवोश्विराञ्चे तुरातुरादेरशास्त्रात्वे । ररानी परिंदा खून केना पुरिंदर या पा इस या पा के के राजहन या नार या वर्षामवर्षास्य में भी स्वाक्ष्मास्य मावर्षा मात्रस्य स्वर्धाय में दिन स्वर्धात्र म वर्त्ते नरः क्रशः सदे वावसः नहतः श्री शर्ते वादः तुः वर्ते नदे सुवासः तरः वादः दशःवर्ते निवः प्रयाद्रायया र्त्ते वाका वर्ते वाका वर्ते वाका वाद्रया ५८.५२.द्वेत.स.इस्र.की.योवस्यस्यत्रःस्यान्यस्यस्यः वर्देर्या हेर्यम्या अत्राद्यया यर् गुदेया व्यत्र द्ये व्यया वे विर्मे वर् ळशरावेःगावशःगह्वःग्रीशःगावशःवशःदेरःयॅरःशःशॅवःधरःगावेःवशः**ळः** नःश्रीम्थानुःनःवस्थारुन् वेदःसदेःवःसरःन्मे श्लेनःखदेःह्यादुनःवनः यास्यायायात्रेयायात्र्यायात् इत्रायम् नुर्देश् । दर्वे नम् क्यायदे पात्रयानम् न

ग्रीशाम्यरातुः इस्रश्रासे में दाराहे न्यराहे नाद्राहे दाद्रासाहेद्रायार कुलानर्डें आया हेराया देशायर श्रुरानर हुदी विराद्ध हिया ग्रथरःतुःत्रःक्त्रःयःत्रअयःउत्।ग्रुरःक्षेःर्क्तेत्रःपःक्षेत्रःत्रःयावेदयःयःकेतः याश्चरावराव्ये विर्वेष्वराह्य विर्वेष्वराह्य विराधिक विष्या विराधिक विष्या विराधिक विषय भेटायार्शेषायापित्रसस्ति सम्भागात्राचेयास्य नुहिष् । प्रसिद्धेस्रयाया र्शेम्बर्भित्रध्यान्दरव्यम्यायार्शेम्बर्भित्रव्यानसूत्रपान्द्र खुर-र्देर-स-न्दाय-र्हेद-य-स्वाय-स-न्द-नवद-न्दुर-स्वाय-वय-ग्री-ह्रेर-यन्ता अत्रन्त्वन्वार्धेवार्श्ववार्श्वार्थात्र्वार्यः वित्रवार्यः श्रेवाशरादे ग्रुप्त वश्चवश्रायश्चाश्चर गुर्ह्म श्रायायद ग्वाद्वाश्चर गुर्द्दे। <u> २५२ जात्र अः धराप्या सुर्या धरे जात्र या नहत्र मुख्या प्रवा प्रवा प्रवा प्रवा । प्रवा प्रवा प्रवा । प्रवा प्र</u> देन्स्थे हेन्स्य वे क्रियान निष्ठे हैं है देन्स् हेन्स्य विषय के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स त्रे देन के त्राया के प्रवाह कुटा विदेश कुषा प्रवास मुक्त के लेखा के प्राप्त कि । वावर्यानहराष्ट्रस्य अरु उत् श्रीयार्ट्स वी विदेर र्तु वार्ते वायार स्टें या श्री वात्रय वर्देन्-स-न्याःयःयानःयःयानःदेश-न्नः हेशःशुः अनुवः पवेः केशः हेः यनः नश्चनरायरायरायर्गरायरा वृद्य । तसम्यारायदे से श्चाना स्वाय धेर्'यः होर्'यः हेर्'यः द्वायः नर्वा निर्देश महा स्थ्री महा महिता है । इं यः निर्वे धेर्नेर्भेर्भरम्भे त्रावर्षि व्यापर्वापर्वाप्याचन्त्र में वित्रमानह्त्रा श्रीमान्यवा वितात्र प्राप्ति स्तर है। यस हिर्मा स्वीप्त व्यव्या

त्तुःसःस्टामीशायेदायाः सुवासाधिदायवे धिरार्दे।

नवि'राने'यशमावन'रादे रहेयाविस्रश्रायाया विसान् पर्वे नदे रहेया विसमा इवःसः इटः सुटः यः वह्वः या वाक्षुवाः सरः वदेः खुवः विसमा वासरः नुदेः द्धयः विस्रमा वार्षेवाः विस्र-५८ वात्रमः वश्चरः वर्षे ।५८ से दी ५वोः श्चॅराष्ट्रियान् पर्वो नयाष्ट्रियान् श्चे में नायान्य याने नया प्राप्त प्राप्त स्थान रेट.र्.से.योषेश.तर्सें र.र्.हीर.पर्से.यह.स्रास्त्राचेट्री तितत्त्रस्थात्त्रस् भेगान्धेर्यतक्ष्रम्यते भेगाञ्चर्याप्ता विभाषान्स्रम्य विभाषान्स्रम्य विभाषान्स्रम्य विभाषान्स्रम्य विभाषान्स्रम् यदे गान्य होर्ने । हे सूर हान श्रेन या स्री गार गीय होन यर हो र या ख्रा न्याची यश्राम् स्ट्रिंट प्रवस्थाय प्राप्त क्षेत्र प्रमानु स्थान स्ट्रिंग में षरःश्चेत्रान्त्रान्दान्देशःर्रान्दानेत्वेदाने। हिन्यम् नुप्तकुराकुराकुरा म्रे। यहें ५ र् ने पे छिन यर भ्रेन यन्यान्या । नरें यान्य विदायी छिन यर प्रभा भ्रितः यद्या छिद प्रस्या अ द्वार स्था । स्यु अ प्या अया अया । श्चेत्रायम् होत्। ।दे श्चिमानग्म स्ट्रेशक्का केत्राद्या ।द्रुवाद्यायम् कर् सेदा यम् हेरा । विर्मेगाय सेंग्रास्त्र सुस स्मा । दे यस मानुग्रास्त्र स म्याराष्ट्रवाचा । न्यायान्याने नेवा क्षाया । न्यारा नेवा वा निवायाने । स्थातर्युम् । तर्ये निर्मे निर ग्रीश विद्र विद्र विद्याया विश्व श्रीयाय द्रा पविद्र हिं स्व हैं स्व हैं श्री हैं समुद्रायाधीया विराहेतात्रयायम् से ग्राहे । दियाविसयास्तरस्य 

८८। विरम्भाराखेग्रम्भरस्र क्षेत्राच्यात्र । विरम्भरत्य उत्तरेख्याविषाः वया वि.ल.धयारी.भै.चर.वर्चेरा शिवयारायारे.केर.च्याचियावया। ५५.५४५.७५४५.४५८५१ । त्यं याप्य अस्य अस्य विष्टा वि न्ययः र्वे से स्थ्रु से दः प्रथान स्वाया । वियाः से । । न्या से स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ्र स्थ् ८८। अस्तालर्प्तास्य नस्य स्याप्त स्य व्याप्त स्य विस्थान विभागायापरहि श्रेनावर्केवे नम्नु से क्रम् श्रेन् श्रेनाववे क्रम्यास् दर्गेव सकें वा वा शुराया शुराय शुराय हों निर्मा निर्माय स्वीत स्वीत स्वावी स्थाय हार नवे नवे नश्रेव नवा व विस्तान ने नवा ने सामर श्रुमानम व्रिवा । विशेषाय वै। विसन् वह्यायन्ता नर्सन् स्रूस्य सामेवायन्ता वर्ते वर्ता स्यायः क्षरायाववुराववे क्षेत्राचुरायवे खुरादवा वी वहुवा साम्रस्य उराया क्षरा नःश्चे त्रुद्वाराने सूराद्वार्थे त्रशाद्वारायश्चित्र वर्षे । हे शासु दर्शे नः तुः सरा नक्षुनरा पाने क्षेत्रा सरा से । तुः नरः से । तुर्दे ।

चक्ष्यान्त्र विकास्य स्वत्य स

यश्चर्यात्र विद्वा । प्रमेव प्राप्त श्विमाया विद्या । प्रमेव प्राप्त श्विमाया । प्राप्त श्विमाय । प्राप्त श्वमाय । प्राप्त श्वम

न्ने मंद्री ध्रमानन्म प्रत्याय प्रम्य म्यान्य स्त्राचित्र । ज्ञित्र म्यान्य स्त्र स्त्र म्यान्य स्त्र स्त्र म्यान्य स्त्र स्त

य्यानी गर्षेनायिन्यम् मुन्ना र्ख्यान्य से समुन्या स्वि गर्वे दःसर्भे वशुर्यं देशे देशे प्रदेरमावगार्गे । माय हे देश रहा गव्य या गर्वेद्रायादे स्ट्रियाद्या र्ये या क्रुवाय उद्गत्य याद्या चार्य याद्य प्राप्त प्रमा कुत्रनडर्याले स्देर्त्या स्वेतः स्वासा के सार्ट्यस्य स्वेतः से ससा न से र दशन्वो न जुन ने स ब्रिंश वाद्य स्य जुने । क्रिंश दूर धूय संदे जुन थ नवगःमा नेवे गवि वश्यापिया वर्षिम से नगव विन पुरा गवि न न् वर्षे न क्षु'त'रे'र्गा'ठे'त्र्याग्रर'ग्वत्र'र्भे'दर्भे'वेर्र्न्,विराग्रु'न्ये स्त्रुत्र'यारे'पर' कुत्रवार्देन्। सर्श्वेत्। सन्दर्भूत्। सर्भुः वः सैवायः ग्रीया श्वेरः वस्। वरः नुर्दे। । स्ट नाव्र त्य मार्वे द सदे मार्थे मार्थे स्तु नु न से समुद दे मनस यादायी अ'राष्ट्र क्रुव्या केंद्र यदा शेष्ट्र अ'रा हेद्र प्येव व्या विद्या विद्य मालवर, रे. तर्ज्ञा, चर, चीट्री वि.च. श्री अश्वव, मार्चेच, मार्चेट, सार्टर क्रू अर्धेच, जा नवगः यः नेते मुक् मी अः गर्षे गः दिन् र-१ द्युव छ गः हिन् छ र द्यव र पते र

स्थान्यस्थित् । निर्मे श्वेन्यस्थान्यस्य । । निर्मे त्यस्य ।

पश्चिम्यान् स्वतः स्वतः

वर्नो र्श्वेरमी मावसम्बस्य उत्र्रमो र्श्वेरस्य वेसम्बर्धित्यर गुन्य वियानमाले वा रमार्पय विदान मान्य मान्य मान्य स्वाप्त विदान मान्य स्वाप्त विदान मान्य स्वाप्त स वावराशुः दवो श्वेदः स्वावेरा वाहेदः सर होते विश्वेदः हेवारा ही अवराशुः हे सूर हु ले त्रा नस्रेत पर हैं गुरु पर हो र पा के पा है र गा वे र नो पर्त र **ग्री:**द्वुश्रःशु:तक्षेत्र:धरःहें वाश्वःधःदे वाश्वंत्यःवःत्यःश्वेवाश्वःधःदवोःश्लेदःवीशः हो ५ - ५ वीं रास्या ने व्ययाना व्यवस्थिता यह से से वारा ५ - या प्रवास के वि र्शेग्रथारान्गे श्लॅर वेथा श्लेशायदे ग्राद्या शुर्न्गे श्लेर सावेश नहें रायर ह्यों । हिन्यम्यावन्येन्न्यावेषा ह्यायेन्ययेन्यये गर्भेषानायार्भेग्रामधेः भ्रम्यायदी मान्गे स्थितायदे न्वो पत्ता श्री स्थेतात् न्नो र्श्वेर नी न्नो प्रत्व श्री अ नश्चव सर हार्वे । नाहे अ स नर कर है नदे हिर्यम्बी अदेर्वो पर्वर्वप्यविवार्यर विवार्य व <u> ५५४। शु. नर कर दी न्यायाय वर वरे नया पवे के वा ५वा ५वो क्षेटायया</u> नश्चेनर्भामा स्रेन्स् नर्भु नर्भु निस्ति है। दे से कि नर्भु निस्ति है र दे । मह्यस्य प्रस्ति । स्त्री स्त्रिया स्त्री स्त्रिया स्त्री स्त्रिया स्त्री यदे न्य न्य देवी क्षेत्र या लेया शुन्तदे कियाया याल्य पेर्टि । याहेयाया यान्तरसें यानहेत्रन्वे रायरानस्त्रायां है। नवे सेंरासाने प्यरानवे सेंरासा

यन्त्रभुत्रपदेन्त्रभन्ते। नगेःर्स्विनःसनेःभ्रम्यशामानःतः श्रीतःत्रभन्ते श्रीतःतः

या भिष्मेश्वर्त्तात्री याद्यवासी त्यास्त्रात्त्रात्त्री भिष्मेश्वर्त्तात्री भिष्मेश्वर्त्तात्री विश्वर्त्तात्री विश्वर्ते विश्वर्त्तात्री विश्वर्ते विश

नवि'मः कुन् र्र्यून र्रुट नवे । व्या स्थित सार्थे मिष्ठे सा शुन्रप्ते रेंगा मिं त्रान्त्रेत हेंग्या गुत्रा लेवा कंत्रा पा शुन्त या श वन्यामविद्वान् श्रिन्ययाळ्ट्याम् श्रिन्याक्षेत्रयम् हेवायाम् न वाहे नराम्वयायवे क्रियायाया विनायरान क्रेतायरा है म्यायायर के विमूरा र्रे । दिन्दर्ने अञ्चर्यस्पर्नो क्षेर्यस्य देश्वयम् अभी मुन्यस्य विन्त याष्ट्रितः स्रे। या केंगा गोया सुन् सेन् नस्रेन सम्हें गया सम् हेन्यन ने हेंन यदःर्र्यायः भ्रे वरः वन्द्रायदे भ्रेर्द्रा भ्रेष्यदे स्रावम् पिशः ह्यार्यश्चर्यात्र स्थेतः यसः ह्रियायः याष्ट्रीत्रः यदेः युर्वे स्थान्यः विश्वानः व्यवस्यः र्श्वेरिकेर पात्र राश्चेर्यायायार्थे यायर प्राप्त रायर स्वाप्त या स्वाप्त रायर स्वाप्त राय स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त राय स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त राय स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त रायर स्वाप्त राय स्वाप्त च्रशः ग्रद्धारा के भेर्ते विद्या भेरित केर मात्र शा भेरिया पार्टी भेरिया नन्ग्रायानाधिताने। यदे या विदायमा की नश्रुम वा मामा या स्था गश्रम्भःश्री ।देःगदःमीःकेःश्चेत्रावेःता ग्यदःश्चेःगश्रवःपवेःदेगःहःद्योः र्श्वेर्-अदे-द्रवो पद्व गुर्ग अटिश र्श्वेर् प्रेर-विक्य ग्री र्श्वे अपने र्श्वे व पर होरी । यादाह्य अन्या श्री वा निवा स्वी स्वी दिन वो प्रमा हो। प्रमा श्री प्रमा विकास हो। प्रमा स्वी विकास हो। प्रम स यश हो दारा से सामर कर है साव सा से वार्ती। है स्ट्रिस से वा देवी से दि यदेः द्वो पद्वायावार्ययान्ययाया सुयायह्या सुयाया सुयाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया ह्वाश्राची । वित्रास्त्रे । द्वी श्वेंदास्रावश्वेत्रास्य हेवाश्रासाय हेश विश्वाद्या वे बुव सेंद्र न न शुस्र दूर भेदर द्युर न स्य न बव हे खे है र 31

इरहेर्याम्रिम्यायाव्याम्बरम्ब्यास्याय्यान्त्र्यान्त्र्र्यान्त्र्र्यान्त्र्र्यान्त्र्र्यान्त्र् र्श्वेदास्य प्रतिवास स्पर्ति । से सामित्र स्वास्य स्वा क्रम्भः श्रुद्धित् स्टान्निरः सेन् स्ट्रम् स्ट्रीन् स्ट्रम् स्ट्रीन् स्ट्रम् नरादशुराना इस्राया शुक्र सेंदाना निवी दिया। देवा या दिस्य सामाना ८८। वक्षनायाद्वादि वर्षे । विशायवे मुदासे साधि नापि ने नकुर हेर नहेर दे। भ्रिः नवे के अनकुर इस्र अनहेर पर जुदे। निकुर वै। नगे र्सेन सम्प्रानगे र्सेन सम्भाया नस्रेन सम्हेन सम्प्रान नि न्वरावर्थाक्षेत्रस्वरावर्थाने संदेरन्वे त्वत्तर्द्वराचरावर्ष्या न्वे ह्येट यः द्धयः विस्रसः हससः संग्रस्थः श्रीसः त्रीतः स्रीतः त्रान्यः स्रीति । ग्रथम् नुःयः प्यम् सुग्रा सुः यः प्यम् यामः नः न्यम् यान्यः यान्यः यान्यः यान्यः यान्यः यान्यः यान्यः यान्यः य गदि'न्वो'दर्ब'व्य'स्वा,'नःश्चन्यान्ना न्वावान्चे'च्यान्याने वाहेश्या इटायरोवानामहिकाहे नक्कुरादे । इकाव्यामी के भी नदे के मान्यका नर्हेन्यराद्यालेषा सूरावरावकुरावावहेन्याहेषायायाद्या न्वे हेन् नुर्पित के अपन्य अपनि द्वार प्रत्य के अपने किया के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने अपने के अपने अपने अपने के अपने के अपने यानरळित्राची वित्यस्त्री नर्गेषान दुवारी त्वा श्रुरानर वृद्धी द्वारी उत्र ते निष्ठेय नर जुदि।

द्वार्यायान्ति व्या सळव्याविश्वर्या । स्वार्यायान्ति स्वयः स्वार्यायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । स्वार्यायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । स्वार्यायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । स्वार्यायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । स्वार्यायान्ति । स्वार्यायान्ति । स्वार्यायान्ति । स्वार्यायान्ति । स्वार्यायान्ति । सळव्यायान्त्रायान्ति । स्वार्यायान्ति । स्वार्यायानि । स्वार्यायान्ति । स्वार्यायायायान्ति । स्वार्यायान्यायायान्ति । स्वार्यायान्यायायान्यायायायान

## र्या हु चुरायदे या वि वु यदे भ्रयश्रवश्रवश्रवश्रव

गश्यामालु नाया के निर्म्न स्था या क्ष्रियामा के स्वामा के स्वाम के स्वामा के स्वाम के स्वामा के स्वाम के स्वाम के स्वामा के स्वामा के स्वामा के स्वामा के स्वामा के स

हुन। ।

ह्रियानाकुमानाक

 हे अवित्रःसेंदे सेरासान्हें दात्रः हैं सामासे हुं निरान्ता निरासा दि । वा श्रुवः सेन ने। धेन व सेन न हैन न वें राया प्राप्त के न वें राया व वें राया व वें राया व वें राया व वें राया वःश्चित्रध्ययः श्चीर्सेत्रवर्द्धेत्रययः श्वीयायः यविवर्ते। वित्वयावित्र। द्योः र्श्वेर प्रयाय विया प्राया अपिक भेर हिन र्न या क्षा राज्य के विश्व या शुरु श्राय रहा यदेर्त्यात्रायेर्यायायाये क्रेर्या दर्रयायाविदेर्त्यात्येर्यात्राह्रेर् बेर-वाक्षेप्यवनारी वाचा वेरायवेर त्यावार्षे नाया केराये वाची मुन्द्र अपिव रेदि गुन्द इस्य साग्नु या गुर र्दे साम हो ना पेद रिन रेदि सुन पि.कृता मूरि.श.शिवधे.मू.रेट.र्जिथे.सपु.र्जूश्रासपु.रेचट.रे.चेश्री पर्टे.शिवधे. र्रे निर्मे के के स्वर्थ के स्वरंध निर्मे निर्मे के स्वरंध के स्वर द्ध्याची र्श्वेसामाने सामन में निम्धन मित र्श्वेस मित में माना मित स्थित मित धेरा । विरुचे वर्षसम्दिः सम्बर्धः भेर् छेर सक्त हेर् या सेर या वरि गुरुद्याय। सृःयःत्रययःदिदेःयात्रदःर्यःयेदःयःयागुरुद्यःवेदःतःयेः वन्नद्रो नम्भमः देनः विद्रायः केनः विद्रायः विद्रायः विद्रायः विद्रायः विद्रायः स.र्ट.लट.धूंश.सर.वर्धेर.यदु.हुर.रू।

प्राप्ते अपित्र में जाहत्व त्र अभे न प्रत्य हैं या विस्त्र प्राप्त क्ष्य क्

नःवःश्रेष्यायःस्थः श्रेषः सः यः कष्यायः सवैः श्रेरः वेरः नवरः सेः वत्र दे। सर्देः वर्रे महिराद्रम्यायान्द्रा यान्यम् स्वरं महिराद्राम् । वावर्यायर्थाः नर्वे अर्थे नः यमः वाशुर्यायः नदः ववायः नदेः ध्रेम् स्र युग्रायादी स्यादासूराकें ग्रायाहेयासेदासुदाकेंग्राया स्याप्ता स्याप्ता स्थाप न्वेर्याया वर्त्रः भ्रेष्यः हेया ग्रुयायः न्वेर्ययाया स्वायाया । सार्थेरः यार वया न दुः वे न स्रेव सर सा है या या है । या पव से से से दार प्राप्त वे या र्शेम् राम्यान्य स्वायान्य विष्त्र से स्वायाने ने ने सामन से से न मर्थाये तर्शे सर्था विष्या प्राप्य दर्गे द्रशासदि द्वी म् स्वित से दि प्रश्लेत प्रमास्य हैंग्रथाय हिन प्येव व प्यान स्वापन में सक्व हिन प्यान प्राप्त हो। व्यम् नश्रेव पर्दे वाया वाया पर्दे वाया पर्दे वाया पर्दे वाया पर्दे वाया वाया पर्दे वाया वाया वाया वाया वाया व मश्रम्भेत्रम्भेत्रम्भेत्रम्भेत्रम्भियायम्मिन्न नश्रेत्रम्भेत्रम्भियावेशम् नश्रेव सर सर्हेग्र लेश नग्री नगर सुय मा गय हे नन्ग मी सम्बर्धे मु: वनरा शु: नावरा पा पो द रहें वि या हु: नर के या द दे । न ये द पर या हें नाया वेश गुर्दे। । पाय हे से भेश द दे न स्रे द पर हैं पाय वेश गुर्दे वेश गश्रम्या येव पर हो न प्रायम्य स्वायन से निश्चेन पर सार्हे ग्रायम्य क्रिया राधिव प्रमा न्ने ह्वें त्याधिव प्रमाने भावसायेव से समायेव से सिन् मश्रुयापार्के मानिरासरावयात्रयाश्रुययात्रयाश्रुप्तरायश्री वै। वस्नेवःयरः हैं ग्रायःयर वर्दे दः ययः याववः यः दे से दिने यः ये वियः श्रीरः र्श्वेट्टायायाय्यटार्श्वेयायाये श्रेट्टि । नश्चना ग्रुप्ता ग्रुप्त यहूर्द्रप्राथ्य अर्थ्य स्थायहूर्य अर्थः श्रीत्र्र्य । त्यो पर्वे पर्वे स्थायः श्रीत्र्र्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य अर्थः स्थायहूर्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्वर्वे स्थायः स्थायहूर्य । त्यो स्थायः स्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्था

यवि.स.स्वाश्वार्श्यायात्रस्य वि.स.स्वाश्वार्थात्रस्य स्थाः श्रीत्। विस्तार्थायात्रस्य स्थाः श्रीत् विश्वार्थायात्रस्य स्थाः श्रीत् स्थाः स्थाः

प्रश्नित्राचा द्वेत्राचा द्वेत्राच द्वेत्राचा द्वेत्राचा द्वेत्राचा द्वेत्राचा द्वेत्राचा द्वेत्राच द्वेत्राचा द्वेत्राच द्वेत्राचा द्वेत्राचा द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्राच द्वेत्रच द्वेत्राच द्वेत्रच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच द्वेत्रच द्वेत्रच्वेत्रच द्वेत्रच्वेत्रच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच द्वेत्रच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच द्वेत्रच्याच्याच्याच्याच्याच

नरःकर् ग्री अर्कें वर्षे वर्षा नाशुस्य यथा वना स्याप्त वर्षा सर्कें वर यदे देव दी रही नम्म राषा के वाका माने का माने निकार नि बेन्द्रा वुन्बेन्धिः इयायावन्यविः क्षेत्रायायावन् वीः इयायावन् सेन् <u> ५८: भ्रे अःयः यश्यावदः यः धेदःयः यः धटः भ्रेत्। विःदः ५:५ग्रागः थः ।</u> न्वें रास्याने न भ्रेरायाय प्रत्या से न्या स्वापाय न ने ने स्याप्त प्रत्या स्वापाय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व त्रुःतुवे भे इसमात्री नर र्सेर केत में भार्याया सामात्री के भाषा सुरमा अळव'हेन्'उव'न्ना श्चेन्'वावव'वशः श्चेशःपापः श्चेषः श्वेपः श्चनः । अळव'हेन्'उव'न्ना श्चेन्यावव'वशः श्चेशःपापः श्चेष्यः श्चेपः श्चेपः श्चेपः श्चेत्राचा हेत्र याद्र त्या ह्याया स्वाया स्वया स्वाया स्य वा नर्गेशने। द्धया ह्यन से प्यन्ताने निमास्य है। यो से से प्रिया से से से प्रिया से नगनायः भ्रीटःनाव्व र् भ्री अःग्रटः द्वयः ग्रुटः वर् यः नगना सदेः भ्री स् न्वेर्न्न भ्रीत्यवर्त् भ्रीयायायायायायायवित्रा यया स्यायार्थेयायायया वसरमानान्वतायरानमूनामदे भीता भेता से नार्वे गामाना श्चे त्यर विर उव रदा कुन श्चर नर प्रत्व द्यो नर प्र व स्व कुन मित्रेश्वरक्के सुरक्किर्याद्या स्ट्रा स्ट्रियायाद्या स्ट्रियाच्याद्या ८८। भ्रमाखनामवे क्षान्त्रान्या भ्रमामी म्या त्रमाने शास्त्र विवास प्राप्ता श्रुःमेरिनरसेर्परसेमामहेशनरस्टिरशम्परा सेमान्यस्य नः र्हें निन्दा है अदेश्वाकेत्या क्षेत्र नित्ता केवा वी खेट सेदेश्वा न श्वेदार्या विश्वासाय द्वारा स्त्रीय स् ८८। भ्रेमायहेराठवा८८। भ्रेमाल्याउवा८८। भ्रेमायत्यात्राउवा८८। इ.च.२.६८८ श्रेर.च.२८। ५.६८.२वार.च.२८। ५.६८.२८४२.च.२८। इ.च. विशाने सूर्व अवस्ता हिरार्श्वे वायवार्य कुरा दुः या हिरार्श्वे वसुरम्भायावर्त्रेरार्षेर्यायात्रा हिरार्स्रे के यार्षेर्यायात्रम् क्षेत्रायात्रम् ग्री वर र दें अळव व्याप पर प्राप्त विश्वेष पर हैं वाश पर शे केश प्राप्त हो व पर ८८। क्षेत्राह्म क्षेत्रस्तरम् महत्यमाम्बन्धमान्यस्त महत्यमास्रेत्रस्त अन्तर्मार्श्वर्धर्मात्रा अर्वे स्ट्रास्टिकेटे स्ट्रान्य हेटे अर्वे स्ट्रान्य हिते अर्वे स्वान्ता नायरावी अर्वे स्वान्ता ख्वावी अर्वे स्वान्ता दे न्यायाः श्रीः सर्वे व्याप्ताः द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा स्थान्य सर्वे व्याप्ती स्थान्य प्राप्ता स्थान्य स्थान अर्वे दिर्यन्त्र अर्वे अर्य्यन्त्र अर्व्यायायायायित्र विराम् नुदेः रे से दिर थ्वा पार्टा सुरमा प्रमान प्राप्त पर्या परा पर्या परा पर्या परा परा परा पर्या पर्या पर्या पर्या पर्या पर्या पर्या परा परा पर्या पर्या पर्या प यदे क्कें द्रायम ग्रीम द्रायम दे द्रायम स्रोत कें या हे या या स्रोत्य स्रायम स्रोत राइस्रायना ह्यायार्शेनासामसादयद्यारी ।यनारादन्याने वदेनसा

ने निहेश्याम् हिन्यम् र्थिन् निह्न में हो साम हिन्यम् ये स्थान निह्न स्थान स्

त्वीरात्री सामामक्रमान्नी सामान्नी मान्नी मान्नी मान्नी सामान्नी सामान्नी

वर्गुर-र्रे । अय्वर्षद्धायाः श्रीवृष्ण्याः रतः त्यूरः वर्गवाः परि अर्द्धस्य सेदः यने ग्रुराय केन्या कें ने प्येत श्री नर्यन या क्या ते या कें में या प्येत है। या या र्रायम् नम्यान्य प्राप्त स्वाप्त स्वाप नरः कर्ने शेषक्षेत्र हिन्दी नगे ह्यें राष्ट्र शुक्र ह्यू राम लेका मल्या हुने का मश्राद्यो र्सूर साय है विया ग्रुस द द्यो र्सूर सास्तु सुर नर विग्न न्द्र बेर्गीशर्गोर्सेर्या हे विवा हुश्य राज्यो सेंट्र सुन्य सुर्य प्यूर विवा नश्चेत्रायरः ह्रेन्यायायवे र्श्वेयाया प्राप्त विद्यायया या स्वाप्त प्राप्त विद्या नमुन्यानुन्यते न्वो श्वेन्द्रन्द्रिन्द्रन्वो श्वेन्या श्वेन्या श्वे । स्वन्याया श्वेन्यया दे खर्या हुर विदेशेषा प्रदेशवदे वा कुरुरा शुःश्चिर वा द्वा द्वी श्चिर दर द्वी । र्श्वेदायाश्वेदाद्वाद्यायो विषयायम् विष्यम् या स्वार्यम् या स्वार्यम् या स्वार्यम् या स्वार्यम् या स्वार्यम् य यदी दगे र्श्वेर्स्य रेग् य दर्श्यायम् सुर्था य स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स क्रम्भासम्भुन्गुरान्ने र्स्नेरास्युन्य वृत्त्वराच्युम्यम्यम् से क्रम्यासम्भुत्रस्य सुन्धूरानमात्यूमायी देख्याम्बन्धीयासी वर्गुर्यं वर्षे कुं अळव्ये वे अळ्ट्यायर श्रुट्याया व्यव्यक्ति केंद्र्या श्रुट्या निव हिमार्वे दिस्ते हिमार्से विश्वया शुं हिमारा विश्व श्रीया प्रवी नेपा परि नदे निः क्रिया शुः सार्श्वेद्दान्य स्थिदासा निष्ठ्व न्त्री स्थे स्था स्थान शुक् स्थिदाना याधिवायरावसूवा न्याकेयार्स्स्यायान्यान्यां याधिनाने। न्योः र्स्ट्रिन्योया ग्रान्नो र्श्वेन अन् सुन। नने र्श्वेन अर्ग ग्रान्न ने र्श्वेन सुन न श्वेन  বর্গী মান্ত। বালব শ্রী দ্বী মান্ত মান্ত শ্রাপ্ত শ্রের শর্ এই বালবা বাব শ্রির শ্রের শ্রের

<u>थ्या भ्रेष्ट्रे न प्रमासे भ्रेष्ट्रे न प्रमासे प्रमासे प्रमास मिल्ल</u> ब्रॅंब-रन-तृ: हुर-न-व:र्नेषायाय निर्माती नुर-येर्-नक्ष्मनः संख्यानः अळव्राशुरावया श्रेुयायाकेट्रानुसूत्रायाचे रामानुसूत्राया श्रेवाया ह्र्यायास्य स्टार्स्य हेराधिवाते। क्रीयासायार्श्वर स्वाप्त स्वरास्य स्वर अधिव भवे भ्रेम गहेशमा श्रेव भूत न जुर न ल में न ल न न न न न श्चिर्यस्य स्वरं स वश्चरानः व्रवासेरासाधिवाराध्यापरासुन्। या उवारम्भनारास्यावसासुन्या धरः सळ्त् शुरुः धः प्यदः रचः श्रुदः वश्रुदः हैं वा यः श्रुरः सु। सळ्तः शुरः यदे क्रिन्या ग्रीयाययाया त्रुत् क्रिंटा या धीताया दे एत्रययाय राद्यु रावदे श्रीरा र्रे । वाशुस्रायातुन्सेन् श्री व्यक्षाश्ची विः क्रेन्य विषया विषय विषय विषय वर्त्रः श्रीश्वास्त्रः वर्षा स्वास्त्रः वर्षाः वर्त्तः वर्षाः वर्षे श्वास्त्रः वर्षे वर्षः वर्षः बेद्रावश्चेत्रायरः ह्रेंग्रयायरा ग्रुपायरा श्वायरा वात्रया ये दे प्रोप्टर्त इस्रशास्त्र विष्ठित स्त्र में में स्त्र में में स्त्र यव यन अपन्य प्रति निष्य राष्ट्र निष्य राष्ट्र विषय राष्ट्र विषय राष्ट्र विषय राष्ट्र विषय राष्ट्र विषय राष्ट्र रैटर्न्यावर्यस्य न्वार्यो विर्यम्य स्वर्यस्य नविष्य स्वायः क्रेवरवर कर्योशः

## नक्ष्मन्यायन्त्रवाक्ष्मिन्याः है। व्यविश्वी दिन्

र्ट्स्य है द्वर्ट्य वर्ट्स्य वर्ष्ट्रिय वरम्य वर्ष्ट्रिय वर्ष्ट्रिय वरम्य वरम्य वर्ष्ट्रिय वरम्य वर

वर्वयानवे के वा वाशुर्यायायान्वीयाया विन्ते ने भूमा समुद्रा में दिल्ला न-दर्पायाम्भेत्रस्य प्रश्रम्य स्थार्भेयाम्भेयः भेरा गहेरम् यार्देवाची शेष्ट्राचड्यायम वीं नान्ना वनेयार्श्वयाय विनित्रयास्त्राहित वर्षिः र्वेर वे विदेश्वेर प्रमा इसाया विवा पुषा श्री प्राया श्री वासा यव विवादिता न के के त्राप्त निवादिता हो या के या त्राप्त व के निवादित के विवादित हो विवादित है । यं ने रायदे हिम् न्वे क्षिट्य म्व हुवा हे रायदे स्वेच वाट विवा नक्ष्य राभी पात्र राया । पर्ने पा ने पार्या सुरा सक्षेत्र पर्दे ता प्रसा । प्रस्न पार्या । यात्र अभूत 'हे या व्या । या बुया थ 'से र हि अ 'सर यात्र थ 'स प्रवास । विश वाश्रद्यायाक्षात्र्वी । ख्रदात्री श्री स्वत्यायमः श्रुद्रियाद्रदाश्रु मात्र्याव्या स्यानसूनामानुस्राध्यास्या नुस्रामा सानुदायेदार्से प्रसायापा र्श्वेर्यायार्गे नरामुनिये भ्रिरार्थे । दिन्दार्श्वेयायार्गे हिरानवे मुन्नवित्रम्यया वर्देर्स्यान्त्रम्त्राचि कुः यळत् के धीत् वि वि कुः यळत् धिर्ने । खुरः इया वर्चेन्न्,याव्यायाश्रम्यायदे स्रिम्न्न्। वर्न्नेयाम् स्यायम्यायाः स्तिन्य नमून्य सहिन्यमा नस्त्र नास्य निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा सर्व क्षेत्रप्रवादि हुर्यात्र्य इप्यास्त्रप्रद्रायस्य विष्या वर्षानामित्रमा । विष्ठेमाः भूदान्य स्मूराययाः भू । वाव्याद्याद्याः देशाः 

यन्ता वेष्ट्रिः भुः अवेष्वः यः श्रेषाश्चान्दः छे नेषाश्चान्यः यन्तनः या अळेषः वन्यानश्रेत्रान्यान्यानि वदेः गार्ने टार्ख्याधेत्र विटाष्ट्री या गारे या गुना समय याधितार्ययायात्रभूतात्री । सुतात्रात्रम्ययायात्रेययात्रात्रेयात्रम् वर्ष्णे के अर्थेन ने निष्ठेश व निष्ठि राम के न सम्मिन नक्ष्रनः संस्थानः न्दानक्ष्रनः संस्थानः स्थानः यक्षेत्रप्राक्ष्मे नक्ष्मायास्यान्यक्षेत्रप्राचित्रक्षेत्र्यस्य सेत्रप्राच्या चुराया नक्ष्मनाराष्ट्रस्यायराच्यायरावे नक्ष्मनारादे पुरास्य सुरो रामरा त्रुयानि दें वियानि स्वानि स्व वै.यार्वरायायाया १ अअअ.सर.चे अ.स.वे. इअ.दचे र.स्या नक्ष्रनारा क्रयान्य न्या निष्ट्री निष्ट्र गर्हेर डेग डेश गुन्य अग्राय रात्ने श्रुट मे खुय गर्हेर वर्देर पदे क्षेत्राः ह्रेन् प्रम् ह्रेन् प्रमेर् हे अया शुरुषा नक्ष्रमः प्रमुखः प्रमेत्रः विषया शुरुषः ग्री नक्षन भाषान धीत है र निर्माण प्रति नक्षन भाषीत है। वित्रार्थेयायानितानयान्य कर्नी निर्देश्ये वित्रायि है । दे प्रमानुका ग्रद्भार्यान्यस्त्रात्रे स्थान्य स्थान यायनुयानने सुनायदे नसूनायाधे माने नसूनायास्यास्यानमाने यासूनायास्यास्यानमाने यासूनायास्यास्यानमाने यासूनायास्य याल्यायात्रास्यास्यादे हेयामा त्युराया नक्ष्मामास्यानयास्यान्यास्या सक्ष्यम्प्र्यात्वितः । नृष्ण्यस्य न्याः विश्वान्यम् स्थाः स्थ्रीः नवः स्थ्याः स्थ्राः स्थ्

 नन्गा भेर पर्ने विश्व न में नियं न सुन पर त्युय में । ने ने न सुन पर पर मी र्रे.च.च५८:चर्षे । अ८अ:कुअ:अअ:क्ष्यःअअ:८गो:वर्वःवर्ववःवःवे:क्ष्यः यदे इन्यानहर नर्दे । क्रिंयाय महिर पर्दे द ग्री न स्याय से द पर द में द अर्क्षेनामहिंदानम्हेंदानशर्देशमानहिंदानासाधिवाहे। द्रमे ह्रिंदासावना र्रेश नश्या राष्ट्रया राष्ट्रशाद में वासकेया याश्या यह राष्ट्रिया यावरार्रे प्रतुषानाते। र्थेयायायाहे नरार्श्वेरानार्षेर्याशुन नहरानदे श्वेरा र्रे । यन्या विभागमः या बुरः न् या श्रेयः वेशः या दे यञ्चयः यये स्थाय निरायसः नक्ष्रनः सः निष्टः निष्टे । दिषो रहे यः दः मा बुदः दः मार्शे या विश्वः स्रशः दिषोः र्श्वराची स्वाप्त विष्ठा द्यो प्रमेश्वर प्रमान के वा विष्ठा विष्ठ यरेशर्भे । वः यन्तरर्भे त्यरासुः से सुरान से किंगाये म नार विगार्भेरः यदे के अन्तानी विकासे ने ने से सामित्र विकास करी सम्मान

गिहेशमान्ता सळवाहस्यानान्ता सार्वेदासेनान्ती । नगे र्सेनासास्य ह्यूट नवस्य मु: बनसः सु: पावसः यं ते न न न ने वे वे वि । व न न न न न न न क्रिंशः अधित्र प्रति स्त्रिम् अप्य प्रमुद्दा मान्य अप्य स्त्र स्त्रि स्त्र स्त समारा हुर नवमा सु भ्रेनाम उद दमा सु भ्रेनाम उद त्नाम सर नगर्मित्रम् अप्नगर्भप्रम् न्यानर्रेअप्नगर्भप्रम् न्योप्त्र्व्य न्चेत्रचुर्यायया ने निवेत्रम्नेग्याययात्रस्य सेय्याच्या सूरावरः ग्राबुद:र्,पार्श्रेया न्या क्षंत्र सम्स्य क्षंत्र सम्भेत्र प्रित् स्वा प्रम युव रेगा गवस रायस सें दस रें दिया कें ना में विस रा रा ना से रा दे र रा से नवे के ना न्या प्येत हैं। । त्युय वेश रा नश्चन रा त्रा स्वापत रे वे नर या शुरा नन्गान्दाम्बरान्यार्थयावेयाया विसायात्रयाने नवेताया रायाद्यासेस्राधियाधूरान्द्रेत्यते हिंगासहर रेसारान्द्रेत्र्रास्य नुनि हे मूर् कैना हु सार्श्वराधर गहिर नदे सक्त साय राग्र स्थानर वश्रूराते। देशवासुशासी इसायरारेगा सेदायशासारा स्वापायरावस्य राया <u> रमामी इस पर रेमा हेर यस ग्रह सुयान र त्यू र रे लेस मासुरसा सा</u> ब्रॅम् ह्येर धेन प्रनाप्तर व्याप्तर सक्त समानक्ष्य प्रमान स्वर्धन समान स्यानराम्स्रास्य विकिताने सार्रेयार्स्यार्स्यार्म्यान्यात्राम्या श्रे त्याय बेर में । नक्षम माद्रुय नदे कें पदि।

म् । निर्म्स त्या श्रुम श्रुम निर्म्स त्या में स्वासी स्व

हुर्यन्त्रिं । न्दर्शें है। इस्य हो ने श्रें ने स्य हो ने श्रें ने स्य हो न

दे या न है। न न स्वा दे ने अक्त के न है। बार अरे भी में रेमा शुर्ने व शुरमायदे यत र्धेता मायशुरमायदे हेमान्से वामार्थी। न्दर्भित्री र्ना पुरुष्ट्रा निवे हेत् श्री सूद्रा निवादी मिले दे त्या दे दि सि वर्यान् हो व न्या पुरसे न त्या से क्व हो क्वें व या नहीं व स्यास है से क्व यार्श्वायायायायायात्री हेमाना सुना होना से स्थायन वर्ग ना वर्षे ८८। रगे.५५४.क्या.अदे.के.८८। क्ष्ट.ग्रेट.ग्रे.के.८८। क्ष.क्ष.४८५५गका रादे श्रेन्द्रा नक्ष्मारादे श्रे लेशन्द्रा नश्रु नरा श्रुट नदे श्रे क्ष्म ह्या थ्र है। दिख्यस्य मुस्य प्राप्त विष्य द्रा मिल्य स्था है स्था स्याय स्था र्सेनायान्यः कुरादरा विदेयायरानात्याययाचे रासेनायादरा वियासी । दिन्ध्वन्त सून्यन्तिष्यः वियानन्ति श्रुसारीन्तिके शाव्यायारीन्तर यातर्यार्थालेयात् भूवियोरात्री भूवार्यात्रयात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र सम्रास्त्रे के रहे न में निकाया स्मास्य गुन्त्र म्या स्मास्य में प्रमास्य में स्मास्य ळवर्र्यार्रेग्राया भेटा श्रेंयारी श्रम्याया उद्गारेयारी स्ट्रायर्या श्रीर है। भ्रमासन्दर्भस्य विषासँग्राप्ता इसायग्रेत्यमा हेराया र्श्वेस से विष्या है स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्य

नर्दे बिरान्दा वर्षा हेट यथा हेरा सर्वे सार्वे है सूर न निरायर नही। के नर विद्रा के अप अर्थे अर्थ के प्रविश्व निष्ठ कि निष्ठ के प्रविश्व कि निष्ठ के प्रविश्व नशःगुवःवशःनश्चरःनःध्वेःनःदरः। स्राधरःद्युरःनशःगुवःवशःनश्चरःनः धरानान्ता नवी वर्तनाञ्चना समाग्रातानमा नवी वर्तना ख्याःसराग्वावस्यानस्रमः नायमः नायम् विकारमः विकारम् नायम् विकारम् यदे शेरक्त र पार्टियाय प्रदे र र यावितया हेया से या हेया नुराञ्च्याः सर्भे द्वायार हेरा नुरार्थे के स्वर्धा स्वर्धिया दे निवर र्'न्ने रुष्यायार्से म्रायायि हेयाया इस्या ग्राम्प्र्याया धिवार्दे । महियाया वा नर्से अन्दर्भ उदर मी हिन्य स्निन्य होन्य है। क्ष्र प्राचाने वर् नेश ग्री कवशनश्रुवा वर् नेश गर्डे न न नेश में गर्डे न गहिरासुप्तर्भाने। देर्ष्युयायया नक्ष्यायदेगाविदेगाहिराने। दर्भेरा गर्डें नेंर्नुनर्रा द्रेंशर्यें गर्डें नेंर्नुनर्दे वेशर्ये । श्रुंर्नितं कर्य कुर-८८: खर पार्श्वेर अवदे नर ग्वित र्यं श्री अर्केट र्र न हुन पार्शेगः गर्डेन्'कृ'तु'न्न्। कुन'न्न्'से'कृत'राकेन्'न् से'नतुन्यरानेग्याकृ'तुर्वे। गर्वमायर्देशस्य सुरावते महियाही वारे मार्मा पर्वे मार्था वियार्थी। यरक्रेन से नियान प्राप्त स्वर्य महिन परिकार सिन के विकास व्यामी क्रांत्र रायसेत्र प्रशासी व्यापार सवर व्यामी के रूट मी खुरा ने रा ५८.५चेष.२म्ब्राम.भ्र.६८४.भ्रू.५.५८। ५चेच.५.४४४.४४५.४५। र्रमी खुर्य ने यन्तर वहीय से न्वें या या से ना वहिता वा विदेश

क्रवमा भेममाउदायानहेदापाद्राभेममाउदायापीदापायानहेदापा यद्वेश ग्रेन्पते क्रान्य स्टानी साम्युन द्वी सामान्य वर्षे या प्रान्य वर्षे या प्रान्य वर्षे या सामान्य रामहिरा वर्द्धरानदेः क्वें न्यास्य अप्तरामी व्ययमि व्या द्वानदे क न्या ग्रुनिः भ्री म्रुनिः म्रुनिः म्रुनिः भ्राम्ये म्रुनिः यथा । भूर निर्वेश रेश राय गुर निर्वेश स्त्री । विश्व स्त्री । विश्व स्त्री विश्व स्त्री विश्व स्त्री र्रमी हिर्मरम्पर्वेषा विकेष हेर्मिश्रम्भगाय स्वारित्वहरूर्य नविव निर्म र्य हुर विंव त्य भ्रेम मुख्य राम यह अप विवादि । क्रेव-दर्गेश्वाकेश्वाकेश्वावराया सेदाया स्वाविव-दर्ग सेदायाय स्वाविव-दर्ग वयानक्षरानाररानविव। नगोनान्रासुरायानसूराग्रीयागुवावयानक्षरा नःनडरूपास्री नडरूप्सरः वस्र राज्यस्तराधे न हें विया वेरान श्चित्रन्ते। ने न्याया कराय बुराया अवया विवा कुराय करा सूराधिव सर नश्रुव प्रशानि द्विम् रदास्याश्वा सुदान देवे कुरे देवाश बस्र उन्दें त्र सें र सामा उत्तर् देश मान्य निवेद सें दे हैं सामा माहेद सेंदि हैं सामा स होत् श्रेत्यां ने प्रवस्था प्रदेश्वर प्राचीत हो। । अर्देत् ते गाः तु। के स्वर त ही स धरादशुराना इस्र साव स्वापित सार्वे । प्राप्त सार्वे । प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्व निवन्तीः विन्याः विन्यते अळव के नियम् विन्यते स्वित्ति। यह निवन्तीः विन्यते स्वित्ति। विन्यते स्विति। विति। विति अर्चि न ने से सका हैन से द्वार कर ने में न कर ने में श्री न कर ने में श्री न हीं श्रें व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वा

गशुस्रासार्टे में त्यामाशुस्रायम। न्टें सादी। ही ह्या हु हु ना हु सादी

ग्रा व्यायाः सुरान् सुरान सुराना सुरान सुरान सुरान सुरान स्वाप सुरान स्वाप सुरान स्वाप सुरान स्वाप सुरान सुरान स्वाप सुरान सुरा सुरान सुरा होत्रहेशग्राटाद्या इसामरादेषाहोत्रहोदान्वेशग्राटाहोदी विशादरा न्वो नवस्य से न्वो नवस्य सुर नु स नसूत्र रा वेस वह न या से न्वो न न र स्रम्पुं साम्रुवासमान्द्रियमानुही विकार्यम्यास्य मा देः प्यमासमा निवन्दर्गन्यस्थान्यस्थानिवन्द्रात्रस्थान्ते स्थायाधिवाया नरसारा यान्यस्य सम्दर्यामाने स्री साम्री मान्यान्। स्रमानमून मानाने त्री ग्राम्यर्थे अः वृत्र वर्षा ग्री अः नक्ष्र नः मायर्थः माय्यः माय्यः माय्यः माय्यः माय्यः माय्यः माय्यः माय्यः म नरः हो दः यं ते । खुदः दः न सूत्रः यदि । खुदः यः न सूत्रः यादः वे व । व र्डे यः सूत्रः वर्षाम्भागम् । वर्षामायक्षामायक्षामायक्ष्याम् । वर्षामाये । वर्षामाय नश्रव पर्दे विश्व द्वारे विश्व माश्य है के मानी ते माना अर्के द हेव ही । वर्षिरः सरः हुः र्थेवः सेदः सरः होदः सः प्रमा वसस्यः प्रवेवः सेवः सरः प्रसूतः यदे माने त्यरायन्यायाम् मेरिकान्याने भूतान् मान्यान्यायाधीन हेरिका न्दा दिन्ध्र यथा सूर नदे रूट निव रे ले वा सुरा ग्री न्दर द्या मी यथा वन्यायवे मनाविव वै । वि स्रे पीन ग्री त्रया ववे मन विव वि वे वि मुन नः भेतः वे ता धेनः ग्रे क्रिं सामाया के क्रिं सम्माय हैन सेन स्वेन र्भ । श्रें श्रें र वर पवे श्रें अप व हे श्रें र व व त्र हो अळ ह हे र पे ह हे । खु श ग्री:इस्रायाग्रुस्राद्यागी:इस्रायान्वि:वेस्राग्रुप्तरादेश्वर्पर्देश्वरार्देश्वरार्देश्वरार्देश्वरार्देश्वरार्देश्वरा श्री

महिरायासूरायात्र्युयायायात्रेमा होत्रात्मे रासी प्रति रात्र्युत्रायात्री मिंडेम सूर्या देशमहिराहे। इ.म.से हेर्या प्राच्या इ.म.से इ.म.स यःरेगान्तेराक्षेर्प्रात्में अरो न्त्रायान्य अर्थान्य अर्थे अर्थेराय राज्ये राज्य धिराने। खरान्। नर्द्वामा खुर्यासुः प्यामार्जेवारमा नुः प्यामार्जेवायरः न्ने र्ह्सेन्स्सर्से नुन्न सकेश्रासम् विन्ने निने र्ह्हेन्स हार्से दे सम्मान वक्षतः वृद्ये विश्वाद्या श्रेस्रशायनयः विषापाः सूरानरः वशुराना सक्षेत्रः यथा लूरे. ये अ. श्रें र. श्रे. ग्रेर. श्रें र. श नः धराने भ्रमः वर्देन समः वासुरसः सदे स्रीमः वेसः बेमः में । वाववानवानः रे। क्षूर न वशुन राया रेगा हो दारे अर यर दर्गे अर हे। वर्दे द राये रेगा हो द भेवासायग्रुवासायानेषा ग्रेनारेशास्त्रान्षे अत्यवे श्रिनारेष् । ने सूनायन यहिंदिनीति यहिंसामाध्यरके हिंदिन यहिंदिन स्वर्थ हिंदिन स्वरं हिंदिन रैगा हो दासे वा सम्मान स्था निष्ठ दार्थ दा स्था हो दार सम्मान स्था है । सुराव दो । गहेशःग्रेःयसः र्'द्रगुरःहे। दर्रे यः दर्गः धरः गुर्दे वेशः गुरुद्रसः धरे श्रेरः <u>५८१ है मारा हे अ ग्रुअ पेंट्य सुर्हे गया या पेव ग्री पेट ग्री वे सेव हे। पि</u> इस्रायरावशुरावायार्सेवासायवे इस्रायर रेवा हो रारे व्यापेरायवे हो रारे। वेशन्ता व्यवित्रमा खुश्यान्यायी होन्या होन्या सम्मिया होन् बेर्जा रे बेर्ज्यक्षूर्य बेर्ज्य हिर्जे के ज्ञान है ज् धरःरेषाः होत् खुरः बत् खं साय शासेत् साया दर्गे दशाहे। देश द्वरः श्रेंदः क्रम्भार्त्र मुक्रायन क्रायन नेपा मेन मेन प्रायम क्रायम मेन स्वायम स्वयम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम दे 'द्रवा'वी'श्वेषा'यदे 'व्रस्त्रस्य स्त्रेस्त्रस्य स्त्रेस्त्रस्य स्त्रेस्त्रस्य स्त्रेस्त्रस्य स्त्रेस्त्रस् धेव'यर हेवाराव्यक्षः दे 'द्रवा'यः 'द्रद्रास्त्रस्य स्वादः द्रवा'वीर्यादः द्रद्रास्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य

है 'श्वेर त्र मान्वर की ह्र स्थान र रेगा के दे 'श्वेर त्या है दे स्थान स्थान है 'श्वेर त्या है दे से 'श्वेर से 'श्व

मश्रुस्तर्भयाःश्वाःश्वरः त्रं मित्रमा स्वाः मित्र मित

दे त्या के ते अ ज्ञास्य अ त्य क्ष्म के त्या के अ ज्ञास के त्य के त्या के त्या

देवे वर्षेयाम् रूटा निवर्षेया श्री अपक्रया प्रवे कुषा विस्र अस्य अद्यास्य कुरानर्डेसः ध्रुवः वद्या ग्रीयः नडयः या त्या सेवः सेवः वयः या सेवायः या यार-न्याः धेर-सन्दे न्याः श्वेर-यः इस्यः यात्रेर्यः ग्वरः द्ध्यः विस्रसः धेर्दि। नश्चनःमः अर्दे अःमअः ने : न्याः श्चु नः नः तकवः मवे : क्वः विस्र अः शुः वयु नः रें : वेशन्ता मुलास्रभायमा नेन्यार्स्ट्रिन्यम्सर्स्यान्यर्स्साय्वरायन्यार्थीः नगदायासाग्रामादे सुरादळवानदे सुवाहिससासु द्यूराहे। व्याया ग्रीशन रहें या विस्रशसासर्वे शन ने प्रकया नने रहें या विस्रशसाधीन ने लिश नन्दर्भ धेतर्ते । विश्वर्द्भ द्यो र्स्स्ट्रिं विश्वर्षेत्र स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर र्शेर-हेश-इस्रयान्युर्यान्। न्नर-होन्न्यान्यान्विवेन्नर-ह्रो-विद्या स नश्रूर्यानदे हेया द्येग्या करा निष्या भारत्य विष्यु । निर्मेश निष्यु । निर याश्रुद्रशःश्री । याव्रवः प्यदः श्रेयाः श्रूदः देः तेः चः च्रुदः शेः याद्ययः वर्षः हेत्र वार्रवात्यायस्य वसाह्या इत्र प्राविकात्र व्याप्त स्वाप्त मे

निवासक्ति हिन्या श्रुट्य सक्ति हिन्य स्वास्ति सक्ति स्वास्ति स्वासि स

चश्चित्रायश्चित्रायश्चित्रात्त्रित्त्र्वर्गः विद्याः विद्याः

भ्रम्या श्री श्री स्वाराय स्वार्थ निष्ठा म्या स्वार्थ निष्ठा निष्ठा स्वार्थ स

त्रुवान्यः व्यान्यः त्रेशः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः

नत्त्र मार्गि से अत्री के क्षेत्र ख्रि में सि अप्त स्था कर्म मार्गि से आप्ता मार्गि मार्गि मार्गि मार्गि से अप्ता मार्गि से अप्ता मार्गि मार्गि से अप्ता मार्गि मार्गि मार्गि से अप्ता मार्गि मार्गि से अप्ता मार्गि मार्गि मार्गि से अप्ता म

न्तुः संस्वः र्थेवः वे नश्चनः संवर्धः स्वः र्थेवः न्त्रेः न्युः स्वः र्थेवः न्त्रेः स्वः र्थेवः स्वः र्थेवः स्वः र्थेवः स्वः र्थेवः स्वः र्थेवः स्वः र्थेवः र्येवः र्थेवः र्थेवः र्येवः र्येवः र्थेवः र्येवः र्थेवः र्थेवः र्येवः र्थ

वशुरावादरा वदे।वरागिहेदार्वेगाचेदावदे।वराश्वदायरावशुरावादरा गिहेन्'र्वेग्'रा'त्र'क्षु'क्रस्य रान्सुन्'नर्रा'त्युर्न्'न्। ग्वित'प्पर'क्षेग्'रादे' वनाळ वर्ता वहेन्य राष्ट्र प्रमान वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत इसराग्रीयास्त्रियाः हेट्रस्थान् स्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान् वीशने द्वाप्तश्रुद्दायाया श्रीवाश्वास्त्रास्त्र । यही वाश्वास्त्र । यही स्वास्त्र । म्रम्थःनेरःकेर्यः प्रमः द्वार्षिययः स्याप्रमः द्वार्यदे द्वरः वीयः दे द्वाः नश्चरःनःयःश्रेष्यशःसशःसदःयर्षेष्यशःसरःवश्चरःनःरदः। वावदःयशःक्षेत्रः वें अप्यःश्रेष्ययाप्रःद्वाःक्षेत्रःग्रीयःक्षेष्ययाक्ष्यःद्वरःद्वयः व्याप्तः विग्नुसःवःद्वरः वार-त्-भ्रो-वर-वर्देत-स-व-श्रवाश-सवे-भ्रेत-वश-वर-दिवा-सर-विवान-सर-वशुरावादरा मान्यापरा माने दरा इसावहेरायमा स्वाहु हुरावहे द्रा वक्रमाग्वी देश वर्षे द्रायदे भ्रवशाय श्रेवाश प्रम् वेश प्रमः वृद्ये। नदुःयः अन्तर्भुद्रअः पदे हे अन्दर्भग्राश्ची क्षेत्रं प्रश्ची द्वार्य क्षेत्रं प्रश्ची क्षेत्रायार्थेवायायार्वेवायाद्याययार्थेद्रायाद्या वदवाकेदाग्रीयार्थेदायरा वर्गुर-व-१८। देशसाञ्चर-ग्राट-केंशहेर-ग्रेश-र्जूर-वर्ग्य-वर्गुर-व-१८। अर्हेन्यश्रास्त्रीहेन्यश्रान्दा द्विन्यश्राद्विन्यश्रास्त्रस्य स्थान्यत्रस्य म्यान्यन्ता वर्मेन्यन्यन्यक्षाने वर्के वर्ष्यम्यन्ता द्वार्श्वर्यः गशुस्र नुः भ्रे न्य अर्गम्य सः नुः सः पेन नि

यिष्ठभामाने विश्वास्त्र में । क्ष्रिं माना में स्वास्त्र में स्वास्त्र

ग्रुयामानस्याद्वाम्याया इयावन्ति। मुर्यायन्ति। इया इयायाग्रुयाग्रीयायार्वेदायरायह्दाने। सूरावाइयाववगादा। सूरा नः सेन्यन्या नक्षनः ग्रुवे। । न्याने। न्याने न्याने न्याने न्याने स्वानि । निते हें र न इस मर निवा र है। निस हरा हर निस्स सर निवा र है। नश्रयापान्दार्श्वेरानदेर्श्वेष्ठ्रात्रश्चान्द्रात्रात्रा श्वेरानदेर र्श्वेर्यायः हेरी विश्वास्त्रम्यास्य विवासिं विश्वासिं दियापत यगामी अळद हिन्द्रा सेयान महिसा यदायगादी कु यो अळद हेन्देर्भे ने प्यर्ग्वे हे। ग्रिन्य म्याप्य मान्य हे स्थाप्य प्राप्त हे से प्राप्त स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स त्रुगामी प्यत्रायमामें । माने प्यान्ते । याने प्यान्य स्थाने प्रमाय प्याने । र्श्वेर:५८:५५:नेश:गहेश:र्शे । १८५:नेश:५८:श्वेर:नदेः प्यतः यगः सः सः नः ययर-र्देशमिवे प्रमुद्दारार्धि र्दे । विष्य हे मुः सः स्टर्म याया सम्भानुः वर्द्धराना के सेवाया के लिखा क्षेत्र के दारे। क्षेत्र सम्मान स्वाया के विकास सम्भाव धेव'मदे' धुरा

यावर श्रेवाश से दार स्थित या भ्रे ना द्या न के साम के त वशुर्यानाशुर्यार्थे। । प्राप्तिने क्षूरानार्यार्थे प्राप्ति । प्राप्ति । सूरानार्यार्थे । प्राप्ति । प्राप्ति । सूरानार्या । प्राप्ति । प्राप्त यगारि देग्र राया स्टार विटाय हेगा स्टाय याद विया सूर या वाव सुर । न्द्रभागविष्यःश्रेग्रथायदे क्रुर्यायवग्या विष्ठेग्ययायन्दर्यदे कु क्रम्यायम्याविष्यात्रस्य स्वर्था स्वर्या हे स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स् मिले से द ग्री से त्या न प्याप्त से द प्राप्त में न प्राप्त से द से प्राप्त से द से प्राप्त से प्रा गर्डेन् समारादे सेयान धेन मासू नुर्दे । वेम ने मन से प्रमाने प्रमाने प्रमाने शेषानरावगुरानाद्राशेषानवे नहाशुरानाषरादे दाशेदादुराववे धेरा देशन् क्षूर्यानारमी प्रदर्ग गुरुष्ये प्रदेश्यम स्विम्यम स्विम् देवे दिस्य ग्रिन् न क्रेन् प्राचित्रम् । यस यगा सार्क्य न से से या न सा व शेयानर्दे । मया हे ग्राव ह्यें दाये प्यव त्यमा सार्क्ट न देश शेयानश शेयाना बेराना धेवारें वित्रा साधिवार नामा धेवात रें वार्ष माना सेरा न्वावाः धेवः वः शेवः नः वः छेरः वशुरः श्रेवाश्वः शेः रेवाशः श्री । नृ हो व। सूरः नदेः प्रमायावि नश्यामार्श्वे रामाश्रम् सुमानवि मारासुरासे से सा क्राचान्यादियावियायाक्ष्यायाक्ष्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्या षवःवनाः अः रूटः नः षटः देरः वर्षः भी । वेरः वर्षः रः वर्षः नर्दे अः दटा देः यशर्वेश्वराश्वेंशरींदे देव गान्त या द्वारायें।। न्दःसाया वःश्चनःन्दा केशवःश्चनःन्दा कुदःवःसेन्धि । न्दःसा वे। यय भ्रूवा वी भ्रूवया शु र्श्वेय में भ्रू। नर्रेय वावि ने प्यय के वाय देवा सर वःश्चर्यते भ्री र्राष्ट्राप्यम्यम्याचिम्यायाकेश्यास्यास्य याय हुर है। ते मारा रह वी या वावन ही आधिर आशु आव हुर वर यह नेयायायदार्भ्रेयार्यार्वेत्रस्थे रदावीयद्रानेयायद्रा व्यवसार्याया न बुद्दानर पर्नु भेषायर न उषाया है । सूद्दान प्रायद्वान है रही । दे न विहा <u> नृःषेत्रासुःसःन बुत्तायःषेत्रासासुःसःन बुत्त्वरःवन्त्रःनेसःसदस्</u> लूर्अ.श.चर्चर.च.र्टर.चरुअ.सर.पर्ं. जुर्अ.स.लर.सूत्रा.सू.पर्ं. विश. गश्रद्याराष्ट्रातुर्वे द्विमारा पि.डेगा.हु.प्यतायाश्रुयाययागहियाया क्राचायाकेशानुसासुपर्देनाने विभागस्य मार्थेशासास्य महिसासास्य <u> चुर्यासुरियामास्रीत्रात्र्या वित्रा पार्डमा हुः वियामास्रीत्रयापार्डमा हुः वियामा</u> धेव परे भे स्ट्रिय प्रश्निय विश्व स्वर्थ प्रश्निय स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर ग्रुन परि द्विर र्हे । ग्राशुस विश्व स क्रुव सेव दस विदा स धिव है। देंग्र स यने द्वारा न्या निवासी मान्या यप्रशासदेः वाशुराधेवार्वे । वाववाधराधवाधवायारेवायार्वेदायार्वेदाः बेद्रगुद्रः खेँद्रः दे।।

याहेश्यःयादी स्थाःश्च्यायीः भ्रून्यः शुं । प्रश्च्यः हो। प्रूप्यः नेः श्व्यः वाद्यः स्थाः स्थाः

यवनामित्रेष्ठिम्भा । श्रुम्पान्दिश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्तेष्ठाः विश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्तेष्ठाः विश्वान्त्रेष्ठाः विश्वान्त्रेष्यः विश्वान्त्यः विश्वान्तेष्यः विश्वान्तेष्यः विश्वान्तेष्यः विश्वान्तेष्यः वि

गहेशमाने वर्षा वर्षे सम्मेशमें सम्मेशमाने सम्मानिका यार्स्स्यार्या वेया न्या हेयायार्स्स्यार्यदे हेयायायादा वेया यया यसम्पद्द्वा वित्रुव की खूवा सर्वे । विदे ही र हे सम्म सूस में विश्व हा वे वा इसमामिक्रामी से माने के माने हैं माने हैं माने से म ययात्र श्र्रेयारी निर्मा स्टानिव श्रीयाहेयारा श्र्रेयारी पीव प्रयाद हेयारा र्श्वेसारें है। ने हे हे सारा श्वेसारें हि सा हुटें हि सा गुरु स्था वरे महे न सह रार्झेंब्रार्से र्हेंद्रायर होत्याया देंद्राध्वायया दे प्रूर हुका दार्हेंब्रा र्रे विश्वानु नदे भुने द्वारा गहिशा शुः द्वेत है। श्रेट र् क्याशायदे भुद्रा ल्य भिष्या मिर्ने विषय स्त्रीय स्त्रीय स्त्री स्त्रीय नःलेबर्द्वे बेशम्बर्ध्या देमहिश्राम्भित्रस्य स्वाप्यस्य स्थाने हेव नगे हैं राय अन्ता है क्व यस ह्या विंत ना वाद अ स्वर हैं र न्रें अन्ता ग्राम्यायावे ग्रिमान्ता ध्रिमान्स क्षेत्र स्थिति स्रिमानि स ग्रेन्यक्षे सक्षवक्षेत्रपाधिवक्षे । श्रिः सम्हेन्स्रे स्थायस्य उत्तर से क्षे में भू भू मार्थ कर निर्मा यात्र अभू न अर्थे मार्थ में मार्थ ८८। गर्गश्यावियावेगयायार्, याद्रा श्रेर्येशयारायायहग्रायारा ने हिन् ग्रीया ग्रीन ने वहवाया या वा धीत हैं वा शुन हैं।

सक्तः हेन् न्याया हो नि स्वीता नि स्वीता है स्वी स्वीत्राय स्वात्राय नि स्वात्राय स्वात्राय

 रेग्रथाधेव पर्दे।

नविःयःवे। स्राञ्चान्देशमाविःयशन्यवःविदःशुदःनःमाव्वनःयशः

विवःयःवे। स्राञ्चान्देशमाविःयशन्यवःवे। विदःशुदःनःमाव्वनःयशः

विवःयःवे कुन्नवे कुन्नवे क्ष्यान्यः विवःवे क्ष्याः विवःयशः विवःयशः विवःयः विवःय

য়्याने कुरित्यादहेनन्ते क्रिंसं अळन्ते नियानि के वित्र हे क्रिंस् नित्ति के स्टित्यादहेन नित्रे क्रिंसे नित्र क्रिंसे क्रिंस

न्दर्भि विश्विष्ट स्थान्य श्रीत्र स्थान्त श्रीत्र स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान स्था

न'सळ्द'हेर्'म'र्रासहसामा हे इंग्नासळ्द'हेर्'म'न इसमाद्रम वर्त्रयार्वेगायायार्वेग्यायार्वे |देशकेंगाते। अवरायात्रुगाययार्श्वेरान्। सक्त हिन्य सेत्यम इसमा वेस होते । या सुसमा दी समम सुगा परि क्षूर्यान्यात्रात्वेग रहरर्याः श्रुरियान्यक्षत्रित्रायात्र्यात्रास्थे। या क्रयानायाक्रयासुरह्येटाचायासँग्रयासासुरतुर्दे। |देयाक्षेत्रादी। सबरा त्रुगाम्यात्र न्द्रियामावी यह्यत्र हिन्य सेत्र म्या इसामा वेया हुर्दे वेया बेराया देवे हे अयब हा गायाया अँवा अयद हे खूर च बेदाया अदे वर्धे नःसदेःवनाःसःनार्डेन् सदेःश्वें असे श्वें नश्वेन् नः इस्रान्नवनानीः गुक् श्वेंनः मैश्रागुरादशायात्रभूदशायशार्श्वेयारीं यहवाशायायाधीतावेशा वेस वुः वर्षानावहित्रपात्रामे। श्रुमाना अळव हेरामान विष्णेत्र हे। श्रुमान श्रीमाया गशुसन्दा नर्रेशमानिवे श्रेमारेवि । ने नगमी सक्त हेन सेसारा ननित्र सम्बन्धनान्द्रमान्निनम्भेन्यदे कुर्सन्यमान्यसम्बन्धनामान्निम् माम्रस्था उद्दार्क्य प्राप्त देवे हे प्राप्त के स्वाप्त माव्य क्षंट नाय श्रु र निर्दे र अप सुव कर कर पर दर। निर्देश माविदे स्थापदे ब्रॅंबर्से नक्षेत्राचे कु पाववाक्यश्या ग्राम् कंटाया नक्ष्या मंदिर्देव की सबस श्रुवा'रा'त्रा यस'क्ष्वा'नक्षेत्र'रादे कु'रे 'रेवास'रा'स'रू'र बिर'वार्ड 'रेदि' विया परि । शिर्य में स्वाविया यो गीय श्रीर से र यो र खर यो विया से से श्री से स र्शेवार्थाःग्रह्मस्यार्थः धेत्राहे। त्रेयान्। धरायवाःवीः इस्राधः यसः शुः सुहः वायः मुश्रिक्तः हो। यद्यः प्रमेत्रः यक्ष्वः यथा याबुदः वर्षः हेः क्ष्रूतः याश्रुद्यः यः क्ष्रूतः देवायः बेयः यश्रुद्यः श्री।

वे पाने। श्रुमाना अळव हे नाया श्रुमान देश श्रुमान हो स्वाप्त स गिविदे र्श्वेस र्रे गिहेश र्षे द्राया श्रें रायदे श्वेस र्रे दी सस भ्रमा नश्चे दायदे र्श्वेर्यान्द्रियार्या प्रवास्थ्या स्वास्थ्या निर्वे वा स्वास्थ्या निर्वे स्वास्थ्या निर् स्वास्थ्या निर्वे स्वास्य स्वास्थ्या निर्वे स्वास्थ्या निर्वे स्वास्य स्वास् मः अवरः व्याप्तेयः नः न्दा अः नक्षेत्रः सः सः वर्तेयः नः महिकः क्षे । न्देकः यविदेः श्रॅं अःरें दे। स्याध्यां यो प्यतः यया यवितः स्टायविदेः प्यतः ययाः ग्रेग्'सर्क्रान्यस्य गुर्स्स्रिं में इसम्प्रस्य स्वादः विवास क्रान्यस्य नन्ग्रायानायाद्वेयाधेयाधेया यम्यमाम्ह्रेयास्ट्रास्य स्ट्रास्य र्रेर्याशुर्यायात्रस्य उद्यान्यायायायायीतालेयायाशुर्या हें याहे। न्यरः क्रेंत्रः प्रदे त्युवाकात्या क्षुः प्यन्यः प्रमः त्युकात्रः क्षेत्रः से स्वर्धः वर्षः वर्षः र्श्वेर्यान्त्रेयात्राक्षेत्र सर्देर्य क्यायायदेश्येययाद्रात्य्वरायदेश्वा वेया न्दा न इस्र सार् सात्र विसान्दा ने न्दर दर्शेया निरे त्वे सान्दा ने न्दायियायान्दा वेशन्दा ईसायादे वेशास्यायास्य यास्य साम्यस मालवरन्यान्द्रिंशमाले न्दरने दे स्थाया लेखामा खुद्याया प्याप्ये व स्वरे हि रा न्ता वर्षेयासम्प्रेम्पाश्रम्यास्य स्थिति म्यास्य हिम्प्रेम् नः इस्रायरमान्यायार्वेस्ययर होतः हुनायर होतः या है : श्रेतः तुम्यस्य वर्षामावर्षामाववर्त्रःश्चित्रस्थे होत्रःश्ची न्यर्त्रःहेर्षायःश्चित्रःस्यूरःस्।

रम्मी न्मार्थित स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्त्र स्

न्दर्शिक्षी नश्रमाधित्या विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य

न्दर्भे न्या प्रवास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्ति प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र नश्चेत्रत्र्रात्रदेश्चेत्रानदेश्वर्षात्र्र्यात्र्र्यात्र्र्यात्र्यम् ग्रह्येत्रान्त्रे यक्षविष्ठित्रायाधीवाते। यद्यस्यायाद्यस्य सङ्ग्रीत्रायाधीवाते सा र्शेम्बरम्बर्धरस्य प्रते श्रिम् महिस्य प्रति म्वत्र प्रमान्देस्य मिले प्रतः नेते । इयायावेयाम्ब्राह्मायाः इययाधिताया इयायावेयायादितायहार्यदे द्व वशुरर्रे विश्वानु निर्वेश के वार्षे विश्वार्शे । वाया हे प्रस्था विदेश इसार्ये श्रॅमःसंस्पित्ते। मानवःश्रीःत्वित्तेत्त्त्वेत्रःस्मार्थाम्याम्यान्यान्यःस्तिःस्रीत्रःवित्वा वरीराह्मसारा विसारा श्रीरावाधित हो। हे मारा दे त्यादिर सावविदे हसारा वेशन्तुःनःन्रेंशमविदेःश्चें रानःश्चे न्रेंशमविदे।पित्यांशेंनासाळदानः हेशमञ्जूरारेदि न्देशमिविसमित्रा विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास गश्रम्भा गयाने स्मान वे लेखाय दे तुमाना वर्षे गया वे दिश इस्रायदेः श्रूस्रायं पीत्रायदे धेरार्ये । विस्राम्युरस्रायापर र्देत्र दे हिरापीतः ग्वित धित सम्मेगासम् गुर्वे। विश्व प्रा देव ध्व स्था वर्ग प्र प्र से शृषा वु त्रमञ्जूनामान्य पेत्र त्र ने दे ते के ज्ञान उर्प पदे हुँ राज पेत्र पर रेगाः धरः हुदे वे अः गशुर्या धरे हुरा धरः दर्भ गविदे सूँ अः धः दर्स्यः रेंदे-दर्रशनिवानेनाने सूराता र्रेट्स्यापट-दर्शनिवेदे र्रेया रेट्स वयावी । १५ तर्वे या क्षेरादर् ने या या श्रे र श्रे या र् न न र या वा वा या यानाधिताने। नर्देशामिने त्यायायायी क्षेत्रायि क्षेत्रायी स्थितायी स्थायायी स्थायी स्थायायी स्थायी स

यहिश्यसः श्रुट्यसे द्वार्त्त विश्व स्थान्य विश्व श्रित्त स्थान विश्व स्थान स्थान विश्व स्थान स्थान विश्व स्थान स्

यवि'यायापिश्या नडशास्तापिश्यापि खुत्यो न्यायायाय वित्राप्तायायाय वित्राप्तायायाय वित्राप्तायायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्तायाय वित्राप्ताय वित्रापताय वित्रापत्य

श्रेष्यामि स्थानि स्थान स्थान

यहिश्यसि वादावयाः क्षेत्रस्थाः विश्वस्थाः विश्वस्थाः क्षेत्रस्थाः विश्वस्थाः क्षेत्रस्थाः विश्वस्थाः विश्वस्य

न्गॅ्रियळॅग्यळॅन्यवे:धेरन्न्न्यर्थायेत्यन्ना रेत्रयें केव्यरेग् मम्बद्धान्यः सुर्वे । वाववः शुःषाध्यापदा विश्वायशा वार्षे वे वाश्यादे रदः गी'न्रायर्देस्य अ'त'कर'स'महिंग्य'रा'न उर्यापदे 'त्र'सून्'उत्स्ययः ग्वरःश्लेष्ट्री भ्रेगाः उतः हे वरः ग्वत्राध्याः वरः द्वरः भ्रेगः ह्वाः द्वरः द्वरः द्वरः द्वरः द्वरः द्वरः द्व ग्रवश्यान्ता कुराष्ट्रसाम्यायानस्य वित्ति से राज्याने वार्याम्यान्य नःभुःतुर्दे। न्दर्भो न्दर्भे स्थान न्दर्भ के से ते मून नद्या हे न्दर्भ तुन् सेन ने सूना व सेना स प्रे विश्व है ना स प्र प्र ना व स व्या स्थान सुन न स व्यादा अळव से प्यादा दे हित्तु वावया सम् स्त्रीत् । वियापा सुन्या वार्षे में श्रेव संग्रा श्रुश्र त्यवदा है : देवाश्र सर वावदा है। वदा वार्धिया वी : द्वीर व्यव स्वाक्तर्रा र्रमी या भी मार्वे न विश्वास स्थानुर्ये । नेश्वास र्मा मेन्द्र यह स्थान स्ट वार्रें के त्या देव ग्राम्य वाषा ग्राम्य म्याम के वर्षे वास्त्रीय मुनाया केर्दे। व्हिट्य इस्यान्वना ने से व्युट्य नर ग्रुपते से रानस्र न स्रमः गुःक्षे दे त्यत्र भूनश्चर्य ययुर्ग्य विष्ट्र त्य विष्ट्र विष्यु भूनश्चर्य विष्ट्र विष्ट्र नु:न्रम्भवर्थासु:वर्षिवार्थासास्री ने वे सुरावास्याववावी ग्रावास्यावार्था अ:सुर्अ:य:५८। नश्चन:यदे:यवि:यवि:र्,अ:नठअ:य:५य हेअ:य:सेर् रासेत्रारा द्वारात्रस्याविवाद्यासम्बद्धारावासुस्रास्यापाद्यस्यो सर्वर मर्द्र। सर्वर मार्थरादी निया ग्री के राम्या मार्थ में दिन क्रूरपर्कें प्रा हें राम हे या शुराय बुदाय दि।

## सम्रास्ते है।

मान्त्रमाने स्वर्धा मान्त्रमाने स्वर्ध मान्त्रमाने

ধ্যম্ম

 यर प्रविष्ण प्रति । श्रुप्त प्रति । यह स्राप्त प्रविष्ण प्रति । यह प्रति

वशार्वे न दुःगदिशायापवाळ दान सूर्वाया सूर्वा से मुन्या ने प्राप्त निष् नडुःग्रुअःमःयःननःमन्। नवरःश्चेत्रःग्चेत्रःसुरःनमःर्हेराःग्चेः हे अ'नक्षुन'रा'नठअ'रादे'यद'र्षेद'न दु'र्रे'न्गे'दर्द्द्र'न सु'नर' गु'नदे' धैरप्रा न्ने प्र्वायम्य सरम् न्या स्थाय स्था स्थाय स्याय स्थाय स्य ग्रम्भारम् ज्ञानवे भ्रम्पा मर्वे एक्ष्मानवे ग्रम्भारम् नरुन्यते भ्रिन्द्रा दे रू ने याया इयया नदे नर्या वया यह नदे भ्रिन <u> ५८। अर्देव परः अ.५५ पः इस्या५५५ परः ग्रुप्तिः ग्रुर्दे अर्देव परः </u> <u> ५५'स'क्सश्राष्ट्रीर'नविवादवुर'नर'गु'नवे भ्रीर'५८'। के'वर्देवे वर्गास</u> इसरान्यस्यापराग्चानवे भ्रिराद्या के रमस्य भ्रिष्टा वर्षा पाइस्य महिना धरा ग्रुप्ति श्रिराद्रा द्रिक्ष्रभाषर श्रुप्ता श्रुप्ते अदार्थे पाष्ट्रपाद्रा षरश्रासरावशुरावाञ्चाद्राद्राराक्षेत्रेत्रवराद्यात्याषाराद्यात्रासरास्याकुत्राचा धुव रेट र् नावय यस त्यूर या वेवाय है। धुय र्रेट वेट र वाट वन नवर श्रुव ग्रीय। हैं द सें रस पर परें द कवा य ग्रीय है य पर से कंट्य पर शुन्यायामहेवावयाभे स्ट्रिं स्थ्रीत् श्रिंदानियाम्यायदे न्यस्था श्री

नडुः सँ देवे देव दे। दर सँ देवा राजवे नसू नवे हे र से । वाहे राज वर्देर्ना श्रूमः विम् क्रिंशा नश्रूनः प्रवे हे या शुः वहुना प्रया श्री । नाश्रुया पा नन्गानेन्द्रान्यानवे हे अ शुनिहें त्राचे अवतः ह्या प्रमः श्रूदः नशः श्री । निवे यवित्रम्य वित्रम्य विष्या विष्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम्य वित्रम् र् नन मन्त्रार्षेर् प्रथार्थे । । नर् नम्ब विषय मन्त्रार्थेर्था शुः श्चेन प्रमः गुनदे भुर्दे । नमुर्यं गुर्द्व र्येश महित्यं स्था । द्या संप्या स्था र्श्वेट्राचर्यार्थे । वर्ष्ट्राचर्यम्बर्धाः कुत्राधे क्ष्याः वर्षे वर्षे वर्षाः वर्षे वर्षाः वर्षे वर्षाः वर्षे नरःग्रवश्यादरः अर्धेन याने नरः वहुगायवे भ्रीरार्दे । ग्रिक्षाय कुः यक्षत्राचा सर्वेट के या ग्री हे या द्वीया या खुया द्वारा हिंदा क्षा के द्वीता विकास के विकास के विकास के विकास <u> ५८.२मे.श्र</u>ेट्सी.क्ष्य.२८.सूट्स.श्रेट्र.२८.मश्रूट्र.४४.मी.४४.स्. यशयश्राद्यायीशव्यकात्रायाशुस्याशुस्य वित्रेत्रे सहिदायश वस्र उद्गान्न में कुं अश्वन द्रा । क्या श्चेन प्रत्य अग्त प्रति वित्र प्रमान देन । विश्व गश्रम् इस श्वेत प्रवस्ति है। के प्रवित कुत दुस देस में सम्बन्ध प्र न-१५-१२में भे ५ वाय सु १२ कुर मर वासुर या वि देवा हु स्टिन १ वि से नर्ज्ञेनाश्चे नश्चर्याश्चर्या । कु समुन् की त्वर्यान्याय। श्चेरान कु समुन् त्युर्या श्रेत्रामान्द्रकृत्यान्त्राः ह्याः ह्याः वित्राम्याः वित्रामा ह्याः वित्रामा ह्याः समुद्रादे से संस्था है दिया द्याया प्रतास्त्र प्रत्या द्याया प्रत्या । यद्या । म्यायविषायायायार्थेषायायमः भ्रीपर्वे ।

यहिमानाविदार्देवायाविदार्देवायावियाद्वा विद्वालयाहिमा व्यक्ष्यायाद्वा विद्वालयाहिमा व

य्यात्रात्र्यत्रात्र्यत्रः वित्याः चित्रः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्य वित्याः वित्याः वित्याः चित्रः वित्याः चित्रः वित्याः वित्य

महिश्रासम्भगन्ति। नर्मेन्यसम्हिरायम् अस्ति। स्वेन्द्रित्ता स्वेन्द्रित्ता अस्ति। स्वेन्

र्राची नक्षेत्र पर् चाना निर्मान निर्म निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मान निर्मा

यहिश्यान्य स्वराक्षेत्र श्री अन्य स्वराद्य स्वर स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य

 चुर्या अः स्वर्धात्र स्वर्धात्य स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र स्वर्य

 नितः रेसामाया मुनामायम् कराये वित्ते । सितः र्से रेमामितः स्वानितः है। इसाम स्वानितः स्वानित

गहिरामादी हरायामात्रियान्त्रम् ळ८.ग्रीश्रास्त्रास्त्र प्रचीरायपुर श्रिप्त श्रिप्त श्री विश्वासाया श्रीप्रश् मश्राह्म अन्याहित्य विश्वास्त्रीत्र प्राप्त विश्वास्त्री विश्वास्त्र विश्वास विष्वास विश्वास विश्वास विष्वास विश्वास विश्वास विष्व विश्वास विष्य विष्व विष्य व नश्रभूरश्रमा हेर्प्ता अवाश्यादे दुवा व हेर्प्ता व वा बवा श्रम् र्वेरामकेट्रिक्सरामधेर्दी । १५.य.वेर्यामराने ५८.५५.य. वावराधर न बुर दें। । नर्जे र सर ग्रु नदे खुर कुरुर क र सदे हैं कुरुर सर हिन नरा मुयामात्रास्याम्यान्याचेत्रत्यच्याः वित्राच्याः वित्राचः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्राचः वित्राचः वित्राच्याः वित्राचयः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्र रायाधराष्ट्ररावा सुराया सेरारे वसायराव सुरारे । विश्वेतायरा सुराय भ्रेशमन्दरतुर्भेर्भेगश्चीः स्वेर्भेगशुस्रमेवे प्रस्तिन्तुर्भासेर्क्षान् ग्रथात्रथात्री नदेश्यळ्ययाञ्चरत्रत्ते राजने नार्श्वेरानायायी ग्राहेरानदेश भे अर्देन प्रायापदान दुना नेना कुम रा शु ही दान न सूर्य भेरा है। सळससादिंद्राचासदेवायाचे छेपासादेवासास्यास्याचे स्वाप्तास्य समदःहेन् हेश्यापाण्यतः कन् क्षेत्रारेविः नगनः नुः तुरुषः या वे 'नगे क्षेत्रः गीरुषः

यवान्दरः श्रेषु वार्येवायायाये वार्यवायाययाय स्वाप्त्र स्वाप्त्र व्याप्त्र विष्याययाय शुः बेदः यः द्वाः यः वे यः यया या यः यः वे द्दः वर्यः ययः ययः यः स्रो दः द्यः श्रुमासदे देवामास नम्यानदी । सर्वे निर्मान स्वापन स सर्वे नडन् ग्रम्से से से नाव्य गहेशसाहस्य मान में निवे र्श्वेदःग्रीश्वान्त्रेद्वःपरः ग्रुःवः रदःग्रीः विःवन्दः व्ययः विदेशः ददः। श्रुशः पदः गिहेशन्दर्तुन्सेन्न्दर्सिन्नेन्यो गिर्स्याम्स्यास्रे स्रुर्स्य स्राप्त्र मिर् तुरुषान्दर। रदावी क्षेत्राचर तेदाया सुरुष्य स्थान न्दर र्श्वेर्ययर होत्रयाद्र प्रतिविवर्त्य स्रोतः होत्र व्याद्र प्रया हुर्याय प्रतिविवर्तः नक्षेत्रः ग्रः इस्र श्रः १८५ : धरः ग्रु श्रः भः ५ वा ५६ : वे इस्र स्ट वे । वक्षेत्रः ग्रः गहिरान्य निर्मा क्रेराम प्रमान्य अविद्यो क्रेर्य ने प्रमान कर्य सम्मान नन्ता नेपाहेशनव्दायन्तरम्योगहेशसम्बद्धारम्ब्र्स्स নুষ্যম্মান্ত্রিষ্যান্ত্রের ক্তর্নু ক্রিমান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র ग्राम्यव रहेव र् श्रे म्य श्रें या से हो दे प्रवादि म्यामियाय स्यय श्रें। र्राय्याम्बर्धिस्यावेराम्ब्रुयाची निष्ट्रेत् चा स्रेत् चेर्मा विसार्र है। रेग्रायरम्न्वत्रुर्क्ष्रिरनर्त्वेर्त्रक्षेत्रवर्त्यन्त्याववर्त्यन्त्र वरुद्रायद्रावरुद्रायद्रा विदेशागावरुद्रायद्रा विदेशागायावरुद्रा धरःश्चेरितःश्चेर्यःसे से रदः या निष्या या द्वार्ये विष्या रदा विष्या या दि । गिहेशागासानवर्पायायसामरावश्चरार्रे वेता क्रेंत्रसेरारे। रेसाह्यर यद्वान्त्यानी क्षान्तः स्वेन्त्रं स्विन्तः स्वेन्त्रं स्वान्त्रं स्वान्तः स्वेन्तः स्वेन्तः स्विन्तः स्वेन्तः स्वेन्तः

मशुक्षः यावी मायाने शे से मायसः यहं दाया श्वें वा से श्वें स्थान स्थान

य्युट् नर्ते । । स्थाप्य प्रमुद्ध । स्थाप्य । स्थाप्य प्रमुद्ध । स्थाप्य । स्थाप्य प्रमुद्ध । स्थाप्य । स्थाप्य । स्थाप्य । स्थाप्य । स्य । स्थाप्य । स्य । स्थाप्य । स्य । स्थाप्य । स्य

चल्ने संदर्ध हो न्या स्वार्थ स्वार्थ

महिस्रासंसे । विमान्नेन्द्रान्त्र स्त्रान्ति । क्रिक्र न्यान्त्र स्त्र स्त्र

ब्रॅंबर्सर्दे । नक्षेत्र ग्रन्थेत ग्रेन् प्रह्मा यत्र भ्रमा य प्रदर्भेत ज्ञान प्रमान प्रदर्भेत । नक्षेत्र ग्रन्थ ग्रेन् प्रदर्भ प्रदर् वर्देन कवारा साम्ने राज में सार्वे । पात वार्या मी इसारा म्हार श्वारा से वारा नशर्मेयायदान्त्रीरार्स्याश्चिरादाणरार्श्वेयार्यद्य । प्यवायवानी इयायायया <u> शुःशेः रु</u>दः नः न दुना नः पदः श्वें सः सें भ्वेः रें हीं दः नः पशः शुः रुदः नः पः सें सः यदे भ्रिन्दी । नर्गेन्यन् भ्रेन्यन् यो प्रयाप्य वर्गेन्यन् भ्रान्य । श्चर्र्, श्चेर्, स्ट्रिं म्राम्य म्राम्य स्ट्रिं के वाय ग्रीय के वाय श्चे ८८। वर्रेस्रमाग्रीमावर्रेसमासुन्ध्रानुराङ्ग्रानुराक्षेत्रानुद्वा । वावनः ग्री:सन्नुरुप्त तर्रुष्पः न तर्रेष्ठ्र न् नुरुष्ठेष्ठ नुरुष्ठितः स्त्र स क्षेत्र उर्धाय श्रेम । क्षेत्र द्वा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वा र्देन्द्रश्र्यारीकी ।देखान्यस्यान्द्रवान्द्रयान्यस्यान्यस्य नक्षेत्र मदे दें त्र्त्र तुर् से द्राया के या नदे या राज्या वी या से दे या न या यी । क्रायरम्परायह्रप्त क्रियारीये । प्रश्लेष्य प्रमान्य वा स्रोति क्रियायम् वी इस्राय सेवि द्वर में राष्ट्रि में या दु रेवा या दे रहसाय सेस्र राविया वसा धुःर्रवार्र्भवात्रःश्र्र्यार्थित्।विष्ठियाः यात्रश्रेत्रः यदेः धुरः खुरः विषाः श्रेष्टर्याः धरःश्चेरित्रे विवस्य स्टित्यः से स्टिस्स स्टिस स श्रेंबारेंदे।

गशुस्रायान्द्रसामानिवेत्रस्य मुन्ति । प्रयम्भि स्वर्मा स्वरं स्वर्मा स्वर्मा स्वरं स्व

यशसु: सुरः व हित् धिवाव। हेवायर होताय हेवायर हावराव दुवायः यान्दियाम्बिराद्युरावयात्रात्राञ्चनायायेन्दि। । यत्त्रायायेविनननाये न्ना ही:अपन्निरायअपिहेस्। न्रायेन्यारान्युमायदेखस्य स्वस्यस्यः दे यश्याविवर्त्ति वाचा दिवाश्यायात्व श्चर्या से दिवास श्चित्र सम्बदे ध्यान्न: न्द्रायमा द्रिमा वावि से द्राद्या सूत्रा सदी देवा मा प्रायम्य परि । इति क्षे नाश्यानार दुर नाहेना हु न्दर से र से क्षं र स क्षे न न इससा द्रम यसःस्वास्त्रस्य स्वास्य क्षेत्र हो न पहुँ न पाया पार त क्षुन पा के न ने वित्ते हो न का सामा का है ना का मश्राद्रिशाम्बि से से दुर्ग द्वारा स्थापि देश देश में मार्थ स्थापि । सार्थ स्थापि । सार्थ स्थापि । सार्थ स्थाप निवत्रः प्रविष्यः नः त्यादः विषाः मी सः निष्यः दे प्रवोः श्चेरः मी प्रदेशः सं व्यसः क्रम्यान्तर्रिःस्रुम्यान्तरे नम्यान्य उत्तर्त्ती सान्य दुनान्य प्यान्य सून्य सेन्द्री वर्रे वे वर् ने अविषय न रं अवास्त्र प्राचे में न अवास्त्र में विषय नश्यानर्दे। । वर्रार्ट्ययानराग्चानदेर्देवकेराग्चेश्वानस्यायायाया श्चन्यासेन्द्री विनेत्रेन्त्रीयायवे हिन्तुन्यसेन्न्यास्त्रायवे देवाया रान्ययान्त्री । वना हो नासु ते ते त्ययायायया से सामान्य हे नान्त्रा नेयामान्या ययाधेवासेवाधेनामहेयात्रामान्यापान्याधान्यास्य बेर्न्ट्रि । वर्रे दे पुरायायावियाना इंबा ग्री शासूराना बेर्न्य सूबा परे र्देग्रथास्त्रेयान्द्रि विस्त्रास्त्रेत्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान् यिष्ठेशः । यात्रायः विद्याः सः दे । योष्ठेशः श्रेष्ठिः द्यदः द्वा । यात्रेशः ।

गशुस्रायात्रभूयानुन्ते। विदेशसत्त्रत्यानेत् सूराक्षेणाहेत्याहे नरसे गुःह्रे। यदायगामी इसारा बेदारा झरानवे भ्रेरार्से । दर्गेदाराया ग्रवश्यम् अः ग्रुट्यं । कुः सुराग्रारावायवायाः यो द्वायाः कुः वायव्यायदेः श्रेंगाःळग्रान्गामीरावहेंदासवेःवहेग्राराधेंदासवेःकुःग्लुदादेराद्योः र्श्वरावी शाक्षेत्र स्वरायन स्वरायन स्वरायन विश्वास स्वरायन स्वराय स्वराय स्वरायन स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वराय स्वरा बेर्ष्यः अस्वायरः लेश्यः निवर्त्वा निव्यन्त्रः निव्यन् वीत्रः वित्रः लर.जेश.चबुव.री.पम्.चेर्रा कि.जुर.स.स्यांश.की.ब्रिय.तालर.जेश. नवित्रः न्त्रमायमः ह्या । निषे क्षेप्रः यो या नर्ये पः क्षेत्रया या या प्राप्तः विया निवन्तुः में द्वार्यं । दे द्वार्ये । दे द्वार्ये । दे द्वार्ये से द्वार्यं से प्राप्त स धेर:र्रे । विं:बेंदे:बळदायेवाबायर:बें:बेंरावहवा:बर:ग्रुवार्वराद्यार्वार् र्श्वेर में वर रु नवमा व रहर श र्शे द त्य मर्वेद र य के व रें र त्यु र नवे र्शे र

## याचितायेताची सयाया

त्रात्र स्वात्र स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्र स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात

स्थान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री । स्थान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री स्थान्त्री म्यान्त्री म्यान्त्री स्थान्त्री स्थान्त्

 मलेयाम्बर्यस्य निस्ति हो मालेया स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार् यःन्यादेर्देर्भेषादःवेद्यादेद्रथ्यस्य यःन्यावेयःग्रःवःयःम्यःग्रदेष ग्रहःसः हः वेशः ग्रः नं दे दादः गाःषः ग्रहेरः वेशः नश्रा दे । प्यदा ग्रशेरः रह्या वाशेराग्री:संजित्स। ररियाग्री:संजित्सं स्टिंग स्टिंग स्टिंग र्रे। । ৠ्रिम्यार्ग ग्री:संन्वित्सा बह्या ग्री:संन्वित्सा स्यार्ग से त्र त्र प्राप्त हिया नुरासुर्वम्र रे विरानन्। यः विरार्से राम दे नसुन मायकवानदे के। यःनिगाःश्वा गार्कः प्रवृतः प्रविः कः धिरु प्रायः द्वीद्यः श्वी । श्रेययः प्रादः पीराः नमुरुष्त्र सम्राध्य प्रमुद्र लेखा धेर्या सुवारुष्य से से स्राधीर से द्राप्य स् क्षराया मुःशेस्रा भुःशेस्राधिरायमुदस्यायम्रायद्वपायायायस्यायसः वशुरा भे भेद प्रथानिया हु न बुर न न गुरु द प्या प्रथा पर प्रश्न र द शुर र भ वेन अदे वर्ते न न में वर्गुराया वर्गे नामावदाग्रीयान तुरान तुरान तुराय स्थाय स्थाय स्थाय हो । श्रेशन तुर्याणाविदाग्रीशन तुर्य नर्यु लेशस्यान मुश्य प्राप्य स्था धरावशुरारसावेव। अवेक्षुराश्चिषाव ब्राह्मान स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त व समामन्त्र वर्षेत्रः र्स्

यक्षित्राचा वर्षः क्षेत्राचा व्यक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्या व्यवक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्यवक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्षया व्यवक्

नरुन्यर्दे । न्दर्भे त्याया श्री व्याप्त त्या है स्थाय व्यापत है स्थाय विषय है स्थाय है स्था स्थाय है स्

प्रिंसिंस्यान्तर्वर्वास्य विद्यान्त्रं क्षेत्रः विद्यान्त्रं क्षेत्रः विद्यान्त्रं क्षेत्रः विद्यान्त्रं विद

व केर प्रमुर वे व प्रेम हेव में प्रमूर हु से ने राप र्र पर्मे प्र रेम रा यदे ह्र अ ते रू र वर्षे क्रिंट यदे विषक्त हो र यर है है र यर वा से प्रेव यथा है यानहेत्रपितः सूरानरावशुरा त्रावर्षिते । वर्षितः वर्षाः भूसायाने सूरानवगाण्या वेता नन्गार्से अन्तन्तर्वे त्यान वता सूरा वी हिरा हु खु सु नु हि न या ता है। र्रायमिक्रियानमार्सिः धेवामीः वयान् मेर्यायनमार्सिः साधिवाने। यदः *ક્ષેત્ર:ક્ષુદ:દેઃશ્રુઢ:પવે:વવા:*૪:કોત્ર:પવે:ત્રજ્ઞાન:ત્રેવ:તેત્રેવ:તેત્રેત્ર:સેત્ર:સેત્ર: धेरःर्रे । वकुर्वस्य वर्षाः येष्य वर्षेर्यः वर्षेर्यः वर्षे स्य नसद्भागम् सार्यस्थित् पानित्रहें। विग्रस्थे साम्रह्मानसारी द्र्यासाया र्शेग्राश्राच बुद न देवे नद्या से जाद धेव ले द्वा हिंद न प्राप्त से ग्राया से विद्यायाद्यायीयाद्यायायेयायाद्वित्यायार्थेयायाद्यायीयाच बुदा नवे भ्रिम्भे प्रमान प्रमान का निष्ठ विष्ठ विद्याया सेत्राया प्राप्त विद्या से दिन सेत्राय से ति से स्या में साम हो साम हो है । से स्या से साम हो साम हो स रायानमुर्यासरावशुरारी विदेशायादी विदेरायार्श्वियायादी हराया नन्गार्से न्दरन्वरुषाय न्दरन्वन्यार्थे स्रोत्रायाधीत स्रुवात् हो ज्ञाना या होत्राया याते नमुरातावि हे सामायरासूराम इसामराम्वा से महामार्थे प्र व रेव वर कर व समामर वशुमा नेव वर सा कर व क्रिया में र वशूम में। म्राश्यायाती म्राय्यान्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या ब्रूट्या ग्राट्यो रेव बट्य हे लेखा ह्या ग्रेरेव बट वे ग्राट र् नम्याये ग्रवशन्दरम्प्रात्राची के नमुश्रायदे नुश्राम्च शाह्य हे दे से द्वारा व हे दे । ग्रवशःरुशःग्रव्वरःश्चीःस्वः घरःश्चेः वहेर्दे।

गहेशमारोयान कुरान भूनायाहिरायया न्रामें सुरासेन दे। मु'नर'अ'नश्रश्रश्यायार्थेर'वर्गुर'वे'त्र केंशर्गेशग्री'ग्निर'नमुश्राधरे वर्षा के रामें या गुराना कृत्या मुन्यर या नयस्य या स्ट्रास्य प्राप्ता कृताना बेर्ने। बार्चित्रायेत्यम् सेस्राम् रित्रिय्यत्यम् धेत्रप्रे रित्र म् अंअअ अंद प्रस्पर वी धिव प्र दर से विवा वह प्र दर धिद वा दुवा अ मदे से सस्य में सर्वे पासर पर्ने वि में स्वाहर सर्वे लेस पावत पर में नर वुरुष्ते सुरुरुष्त्र स्थित स्थत स्थित स्थि नर्गेशक्षान्त्रा भ्रीतायह्यान्यात्यात्यार्गास्त्रयात्रयायेतायाः भ्रीनायदे भ्रीता र्रे । मुःशेस्रशसेन्यग्रुसर्यन्ते त्यस्याव्वन्त्रीसःग्रन्तस्यायायासूनः नियार्थे। वित्रादे नम्यान्यानेयायाय प्राची के वित्राद्य स्त्री के वित्राद्य स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री वर्षायेवाराष्ट्रानुर्वे क्रिक्यायमान्यायाक्षेदाहेर्यागुवावर्षायक्ष्रम्याने ब्रैं र न इस पर द्वा प न ब्रेंस्स र प्या य स नुर न दे हैं व सुय नी स र चुदे से त्य से वास पार्टेस मुद्द सु चु त्यस दर्से वास दस पार्य वा पित यःक्षुःतुःवःहेश्यःयः सेन्दो वमुश्यः श्रेष्टिन्दिन्ववाद्यः सेन्यि धिनः से । श्वेरःहे प्रराष्ट्रवादि सेस्रा ग्रीयाद हेया ग्रुया से वियापा वे श्वेरा पा स्रा 

गहेशमन् भूत्र प्रमुन्य स्वाप्त स्वाप्त

देशन्यादे त्येते द्वेत् द्वेत् द्वेत् द्वा द्वा स्वयाय विश्वे स्वयाय स्वयाय विश्वे स्वयाय स्वयाय विश्वे स्वयाय स्

गहेर वेश ग्रुषा दे भ्रुग् गुरम् अप द श्रिय में भ्रे दे पर दे ग्री अप निष्ण में र्थेन् गुर नन्ना रे देव हेन्य या यो दाय यो दे सुन् ग्री या र्थेन्य युन नवे प्यतः त्यवा सः स्टर्ग वित्र स्था स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वि वशुरावा रदानी ह्यानमुखाव हेरावशुरावे वा रदानी ह्यारेव घटा ळ्टानाबियायाबराश्चेत्रायाबवार्यात्याव्यार्यदेधिरार्ग्तार्थेययाण्या नम्भान प्यार श्रें अ रिदे । रह मी ह्याय पर्चे न मावन ग्री र पर्ने के याया नम्भानायाराभेनायार्थे । नन्नायोराग्चायार्थायायार्थेनायरान्नायाः <u> ५८:ज्ञयःनवे:नश्रयःग्रंशःग्रीशःश्रयःवःवेरःवग्रुरःवे:व। ४८:ग्रीशःन५गः</u> वीर्स्य व्यवस्य स्वाय नयदाराप्ता रेप्यायार्थेयायाः क्रियाचेदाराप्ताप्तायार्थेयायाययार्थेसः नन्गार्भे न्दरन्ययानरा हो न्यायारा देवा बदा स्वरास्थ्या से विष्ठा विष्ठे न्या हा नदे नर्भस्य म्यान्य वा स्थान स्यान स्थान स याचेरावशुरावेषा गर्वेराया शुन्येयस्थाया सेरायर स्रेराहे प्राथ्य यदे सेस्य ग्रीय दे द्वाय कु य वेद प पहर व सेवाय वुय द हेय वुय ययःयदेःश्केरिः वः तुरुष्वयः येषः ययः ययः वर्षुरः वः यः तुरुषः यरः वरः नर्रेश्वरानर्ज्ञेन हुं चेत् ग्रम्थर ग्री श्रुर्मान से साम्या श्रेंबारीते।

र्श्वे राजायार्श्वे अपरे प्राप्त र्श्वे राजायारे अप्राथ्य अपरे राजायारे अप्राथ्य अपरे राजायारे अप्राथ्य अपरे र र्रमी ग्रावर्शक विष्यराष्ट्रम्य प्रमान्य विष्य विषय विषय विषय र्श्वेर्प्तते श्वेर्प्त हेर्पे वेषा इसाय देसाम दसमावस्य मार्थ र्श्वेन्यराधी होन्यवे वरार्श्वेर्या धीतार्वे । श्विराववे श्वेर्या वर्षा वर्षा याहेशा ग्रुका पाठिया विंत्राधीता त्राविता यावता ग्री ह्रा स्टायी का हिसा या नन्गार्से अर्देन सुस्राम प्येन प्यामें सामान से निर्मा से निर्मे स्वराम स <u> ५८:व५वाःसॅ स्रोद्धे स्राक्षां स्राक्षेत्रायिः श्री स्रोत्या स्राप्ते विकासारा स्राप्ते स्राप्ते स्राप्त</u> निर्वासने श्रूरिन विषेत्र हैं। श्रुरिन वार्षिया वार्षित वार्षित वार्षित विष्टिन नशाद्यनानयानेन सेस्रशास्त्रनेतेनानेन्यानम्सामान्यस्त्रम् वहवारान्दावावर्यान्दानुस्य वहवारात्यार्थेवार्यान् वेदावार्येयार्था उदार्शे शिया महेदारा दे श्री रामा प्राप्त र दिया मित्र प्राप्त वि । वा प्राप्त प्राप्त प्राप्त । र्श्वेसार्यरावगुरारसावोत्वा गुःस्रराधार्यायर्गेषायावे गुःषारेषाया सेवा मशार्श्वे रामवे श्वे रामधीत है।

याश्वास्य सम्मानि स्वानि स्वा

चान्त्रान्त्रश्र्वेश्वर्म्यश्राम्यात्रभ्रम् । । व्यून्त्रम्याः व्यव्यान्त्रभ्रम् । व्यून्त्रम्याः व्यव्यान्त्रभ्रम् । व्यून्त्रम्याः व्यव्यान्त्रभ्रम् । व्यून्त्रम्याः व्यून्त्रम्याः व्यून्यः व्यून्त्रम् । व्यून्त्रम्यः व्यून्त्रम् । व्यून्त्रम्यः व्यून्तः व्यूनः व्यून्तः व्यू

मुनानिश्चार्त्त सुनानि। यात्र सिन्धार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थाः यात्र सिन्धार्यः स्थाः स

स्तिन्त्राम् व्यानस्त्रिम् स्तिन्त्र स्तिन्ति स

र्'नगःक्:नःसेर्'सदे'धुष'र्'सःस्रेद्राद्यान्नरःर्'च्रिश्सरःसःस्युरःस्रेः नर-त्-नम्भारा-भेद-दे-विश-त्रा गया-हे-महेर-या-भेगशारा-रह-वी-वावर्यावर्यावर्यास्थः बेवः ग्राटः देवे । वा ग्रे । वा खा खेवार्यायास्था खूटः वटः ग्रुटः व देवे के नमुराया वेया नुर्दे । के से कित हु म्या देर में द्या द्या है। मर यदे दूर र् देंद्र श ग्रद हे श्रेर र् श्रूर नर स ग्रुर द रे प्यर न मुश्यर शे वश्चराते। श्वाराये हें सेरायये हेरार्से। वायाते स्वारायाय से विवार्षेत रायशम्विमार्वित्वविमायीशमायाने सर्वेदात्यपदावस्था उदारीशसर्वेदा नार्वित्वः धेव र्वे वे अः श्री । याव अव अः श्री अः यदे रे वे स्परः दर्या अः श्री अः यः दे रहा प्यत्र हो हुमाना महरा हरा है रामा है रा धर-नेश-धर-गुरे-नेश-५८। देन-ध्रुव-६। यावश्व वश्याववश-शु-श्रेन-धर-होत्रहेश्राह्यानही वावस्यान्य ह्रास्प्रिंत्यते वस्याववर्त् श्चेत्यर होत्रमञ्जे निरेत्रम् ग्रायाने निर्देत्रम्य निर्मान होत्रम्य देर-दे-स-र्रेयाग्री-रे-प्रायाक्षर-प्रवेग्ग्रव्याद्याद्यार्यान्यात्या ब्रेवःसरः ब्रेटःसः वे मावस्य वस्य मावसः माववः रु: श्रेटः सरः ब्रेटः सः प्टः। मायः हे न्नवे मुर् हैं द न देर सर्रेय रें या स्था संवे मान्य न्य स्था संवे मान्य शुः द्वेतः प्रमः द्वेदः प्रादेश वात्र श्वात्र श्वात्र श्वात्र प्रादेशः विश्वा नुनायार्भेग्रायासुरावरानेनायासुनुके विशासे । यसपावसेनुनये कें रदाया गुना हैं अर्दे द विश्व र से द वें अ है। अदग्र स्था ग्वर स्था व्या र्श्वेरारादे के सबर बुग पेत पदे हिर दर्श सहैं दर्श से द्वो पक्र द्वी देश्वत्यदेविःसवरः विवायसेव स्थायेवः संस्थित् हिं। विस्तायः स्थाये स्थायः स्थाये स्थायः स्थाये स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थाय

त्तै त्याव केवा दारे। द्वो क्षें रादे ते त्या या पारे विवा क्षे रावर श्वा वा सु या त्व या त्

यदे ह्र अपन्य वया त्र अपन्तु न्य विद्या स्वीत के दिया स्वीति स्वारी स्वा <u> अक्षय्र मुन्त्र वाया अव्ययम् या देव देव देव वियम् वियम् विया दिया देव व</u> चमुर्भायदे । अक्षर्यभागविषात्वरायद्यायरायाद्रात्म्यायायी । व। नम् निर्देश्य में अर्थायावि विनासदे वित्य शुर्गित्य सदे सळस्य मायाधिताहे। इयाग्रीभी सम्बद्धान्यानु ने उसाग्रीयावन्यामा उसाधितामदे। मुर्रे वित्रायने हिर्वम्यायर वर्ष्यूररे लेवा से वर्ष्यूर है। इस गठिगाः हुःवर्त्रेवाः नःवानुसानुसानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान् स्वानुसानुसान् स्वानुसान् स्वानुसान स् क्षुन्तुःबेन्ता नेन्ते माहेशहो मार्ययान महासी मान्य मेर् नर्मेश्यान्याः हेयाः यान्याः सुराक्षेयायाः श्रीयाद्येयायाः नेविः यस्त्र देते । मुर्चित्रम्थास्य वया तर्राय राष्ट्राय स्थान व्याप्त स्थान चेश्रासन्दर्भ क्रिंदाक्षे याडेया संदेशय देया यावदन्दर्भ क्रिंसेयाश्रास स्थान यदे नर् अळ्यम प्रा विर मी इर क्या य स्वाम प्रे न्या स्वाम कर प्रा वि श्रेंगाः कपार्या ग्रीः खुर्या याचे याः धीतः प्रश्रान्य स्वरः कर्या चे याः धीतः द्रश्राः बी द्रा श्रीमाः कम्रायाने हिनासाया श्रीम्राया निन्दान प्रमान हमा हिन्दान हम्राया नरः कर हिर धेव के । अया अँग्राय दे हेर र् हु या अँग्राय निरंग याते मिन्दारा मिन्दार हिन्द्र स्थाने वे मिन्द्र स्थान सक्सम्यायम् अत्रादिन्यान् । याद्रम्यान् साद्रम्यान् साद्रम्यान् । याद्रम्यान् साद्रम्यान् । याद्रम्यान् साद्रम महिश्यसम्बन्धर्याः निश्चरम्भेत्रः भ्रेत्रः मुद्दान्यः नियः भ्रेत्रः स्त्रेत्रः स्त्रेत्रः स्त्रेत्रः स्त्रेत्यः स्त्रेत्

गश्यायाने विद्यान्य हो निष्ण हो ने दे हो हो निष्ण हो निष

न्यः र्वे यायाधीयाया इत्राप्ता विष्या से यायायायी द्वारा का धीय दे विष्या से विषय से विषय से विष्या से विष्या से विष्या से विष्या से विष्या से विषय से र्ने नाम नावय नर्गे मार्य श्री का क्राय प्रश्री मार्या निव न्तु न श्री मार्या निव न्तु न श्री मार्या निव न्तु न व्यादर्शे नायादे पुतार्के यानायी वाति । वियय प्राप्त वियय प्राप्त वियय प्राप्त वियय प्राप्त वियय वियय वियय विय नरंशन्ता यान्यवरायरायर्कें वर्ते । भी नम् नायायरान् पेन्ययानरा वी के नम्भायाधीय वे वा शेषावाय हे नम् ग्रुश्य स्थानम् व नम् ने ग्रुवा यत्रतम्भाराद्री । पार्थरः धृपार्थः द्याः पीर्थः यमुः वः क्षेः देः श्रूदः यद्यः यमुर्थः यः धेवर्के । पायाहे ग्रुष्ट्रस्यादे प्रस्ति ग्रुष्ट्रस्य ग्र धेव है। गुःर्श्वेराम्य ह्याम्बद्धायाय सर्वेद है। वयायाय देश्यक्यरा गवराधेरासदे भ्रेम्भे । ५५ वर्षे निष्या या हे सूमानमुखासाधेरा वे ता रे द्वाराष्ट्र तुवे द्व वर्षे निष्याराष्ट्र से देवारा हे निर्मेण न त नम्रारा धेवर्ते । हो अर्थेट्यर्शेट्रप्ये दुर्प्ये दुर्प्य सुर्प्य सुर्प्य सुर्प्य सिर् यशनगरिः नमुः नम् अया पारे शरी नन्या से न्दर्दे में है निवेद पेंद्र दे'मिहेश'द्द'नद्वा'र्से'द्द'ट्टे'र्ने'सेद'द्वाह्यु'से'सूद'नरःशुर्र'पद्गत्रम्भ'र्य धेवर्दे। विश्वरःश्वाशःग्रेशःवित्रःयःश्वाशःयःवम्।वःवारःवीःक्टेःवम्।शः यः धेवः वे व व ययरः स्वायः द्वाः वीयः व हिरः वः सेवायः यः वहेवः यः वे। वः त्रे नवसम्बन्धित्वसम्बन्धित्राते सूर्यात्र नमुर्यासम्बन्धित्र हे । मुत्रसासरः য়৾৽ড়৾৾ঀ৾৽য়৽য়য়৽য়৾৾ৡয়৽ঢ়৾য়ৢয়৽য়য়ৢৼ৽য়৽য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়ৢয়৽য়য়ৢয়ৼয়৽ঀৼ৽ वर् है। क्वें श्रें या वेया परे ही र में । या हे र पति व र पावव व व पर पे या यर हुर्दे। अया नश्ची नाया श्रेमिश यश नम् व मार मी के नमुश्राया धेवा वे

वा शुःचलेव प्रचर च खूव रेगा मावस पर प्रदा वर श्व से हेर या कें स में स व्राचन्त्र वरात्रव्यात्राच्या वार्वेदावार्शवायायाय्या यायासार्या यावसायराष्ट्राच्यायार्या विरार्वेषाः शुन्त्रायर्थेषाः सा न्वाचीरास्यास्त्रम्स्रीसूरावरागुरायान्यम्यायाधेन्यी नेविहेरा ॻॖऀॺॱॾॺॱॸ॓ॱॿॣॖॖॖॖॣॸॺॱय़ॱढ़॔ॺॱढ़॓ॱॸग़ॖॺॱय़ॱॺॖढ़ऻॕॎऻऻॶॗॱहेॱढ़ॗॸॱॸग़ॖॺॱय़ॸॱ नवगरे न गुनम् न हे भ्रम्भ र न प्यापार्थ के न म कु प्रम्य न न न गैर्यायमुद्रायप्टार्थाः सूटायदे स्टें यमुर्यायाधेद दें। । सुत्यूटा स्टेद रें या सुद वननःसंदेः र्सुनाशः नदः सञ्ज्ञतः सः हेन् ग्रीशः नमुः नवदः से स्तूरः नरः ग्रुरः सः नः नमुरुप्य धोवर्ते । कुःसूरकेवर्ये देवे बद्गार्य म्यान्य स्थाने वर्चरार् व्या से स्वार विकास के स्वार विकास के स्वार के स वःहेः सूरः वमुरुषः याधेवः वे वा वयाया थेः सूरः वा दे वयाया थे। यात्री यार्स्याग्री त्रम्यारे राष्ट्रीत यात्रात्र मुर्याया धेत्र त्री । कुतायश्चार्स्स्या ब्रियायायाही स्ट्रेर प्रमुयायाधीय वित्वा क्रुवाययाय क्रियायाया स्ट्रियायाया वर्तेत्रमायात्रे नमु नवे नमस्य स्यानु रहुं नामायमाय स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्व

श्चॅर-रराग्रेशक्रियशाग्री:सबदावार्चियायसेवायद्यी विराग्रीकें दे कुर्सेर सदे के महिंदानवसाद में वासदे के त्यों मारा वर्षे । मादा द्वा मानव ही यश्राभी अवतर्पायर्थे । हेते के दार्पा स्टामी प्रश्रामी अवत्मुनाय देते केन्-नुर्देश । गुन-माह्यन् मन्द्रेन् स्वान् मुन्यमे विद्या मुन्यमे स्वान् मान्या स्वान् मान्या स्वान् मान्या स क्षेप्ते प्रक्षेप्तर क्षेप्त वित्र कुष्मित्र पर्वो मानुकारा एक स्तुर परि परि परि स ग्वित मु: व्यथः मु: अवदः मुनः दः प्यदः च मुश्रः यः प्येतः त्रयः वे त्रा ग्वितः यः गुनःसःस्रभःगविदःर्ःसुरःनरःशुरःसदःनमुभःसर्दे । नश्रभःसःगरःगिरः नेवा रमने सुनायर स्वाम्बन स्वीस्तायर सुनारेर वर्त्र स्थार्थे । दे गिरु श दे 'नमु निर्दे हैं 'धेव दें। । विदेवे 'देव बर दे 'दर मे 'ख्रुम मिरे क 'दर ग्वित ग्री सुर नदे ळ ग्रेश समुत भ हे र महे दे र र मी ख़्या ग्रर ग्रवित ग्रीः अर्चे नवस्य नविवर्ग्ये चे प्यरं स्टर्गे अर्थनाव न के नर्से ग्रास्त्री देंद्र विष्ट्री सर्स्यामी हे अरमदे स्ट्रिमा सरम्मूर विराजन्त्र मुक्रेंस इससायान्यस्त्राईनायदेन्देदेकेन्द्रायसः क्रुसार्वे नराहेन्यायादे सुद *ज़*ॺॱॿॕ॔॔॔ॸॱढ़ॱॻग़ॖॺॱय़ॱऄढ़ॱॻॖऀॱग़ॖढ़ॱय़ॕॺॱॸग़ॖॺॱय़ॱढ़॔ॺॱॻॖऀॱक़॓॔ॱढ़ॱॸग़ॖॺॱय़ॱ अधिव हे क्वें अप्राप्त प्रदेश है र में । प्राप्त क्वें र में अप्यापित प्राप्त । विभायार्भेग्रायाद्यादियासद्दाहेग्।यायार्भेग्रायार्भेग्रायार्भेग्रायार्भेग्रायार्भेग्रायार्भेग्राय दशनमुःतःयःदेःसवदःयदःद्धंदःग्रेःसद्धंसश्रेष्ट्रं रःतःदःनमुशःसःधेदःदे॥ द्रवोःश्चॅरःवोशःवालवाशःग्रेशःसःर्देयःग्रेःहशःवर्द्धवाःधरःवर्देदःधःदःवायः हे स्वेतः व्यून्दे वानवायाने स्वयायान्य स्वयाया व्यून्य स्वयाया स्वयाया स्वयाया स्वयाया स्वयाया स्वयाया स्वयाया

ग्वन्ययात्राच्यो दार्वेराचन्यायार्रयार्थयाय्यान्ययायाः श्री श्रीराचान्यायाः नमुरुप्य धेवर्ते। दिवाया बुर्या भवार्य कुष्य व उसारे वे र्से र व केर है। यहिरामानस्रमानुष्या किया किया सम्मान्यान्यानदे मस्रमानुः ८८। वसूव ग्रुव विष्युव पर्दे । विष्युय वसुव पर्दे । विष्युय वसुव विषय । गे इसम्बन्धे स.स्मानवयः न्वे स.मे स्वराद्या वावतः शुःर्ने नाम नावयान्ने माशुः ह्यायन्यायायाने नामान् नामायादे सा ह्येव खेव ही हे या पर हुट पर देवाया या थे। हुदी विषय पाव वा दर्वीया ॻऀॱॾॣॺॱॸ्वोॱऄॣॕॸॱवीॱख़ॺऻॱढ़ॺॱख़ॕॸॱय़ॺॱॿॖॎ॓ॸॱॸ॓ॱऄऀॱॺऻॺॱॼऀॱॺऻढ़ॺॱॶॱय़ॖऀढ़ॱ यत्रह्रानेदेन्त्रिः विष्यायान्यीया श्रेति विष्या स्तिन्या सिन्या सिन्या यगान्याह्यात्वरयापाने हिन्गीयाह्याने वे क्रून हिन्यया विग्वयापने श्चेत्राधरात्रायाधेतावेदाद्यो श्चेंदायो अग्यदादि अपरदायो श्चेंदादि त्यका र्ने निया श्रे व निराद्या रार्ने श्रुया परि नयया प्रयाह्या ने नसूव पर स्त्रित्। कुषार्धेशन्वे ह्वेन्यार्वे वासासावडन्यम्यावदानायानम् सेससाग्रीसा गवरमीः ने गयागवयानमें यादर्यायाम्याम्यायायाचे । प्राने र्श्वेरायार्ने वास्रासी वार्रे दासरा कुयार्से स्वीत्रासी सामान्या निर्मानी इशः विंग्वसः श्रेवः शेः द्वे शः प्रवे स्टिंग्सः श्रेवाशः वाववः यः वश्नुरः वशः यद्वः नर्भः नुर्दे । द्वोः श्रूरः वी या या स्वरः नर्गि रः नुः र्ये वा या शुः वा व्वरः मी या र्ने नाम नावय नर्गे भाग्रे ह्या न दुवा है र्ने नाम ग्री साय भारत्य नर ग्रीन याक्षीत्वम्यम् मुन्नदे स्रिम् क्षेत्रम्यम् सम् क्षेत्रम्यम् स्रिम् प्रमान्यम् स्रिम् स्वन् स्वन् स्वन् स्वन् स

ररानी र्रेट्र न्वावन ग्रीयाह्या पहुना यान श्रुरान ये न श्रुराय ने र्रेट्र यानवनामरा नुर्दे । निर्युरायान सेंद्रियया या वर्ते । निर्देश स्थान सेंद्राया नश्चरः अनेवे वन ने दिनो श्चेरियावन द्यायी अन्तश्चर्या सर होते । नश्चरः अ देश'नावद'दना'र्वे'नास'नावय'दर्गेरा'ग्रे'ह्ररा'दनो'र्ह्सेर'नी'र्ह्सेर'र्न्'यह्ना' रानर्ज्ञियास्य राज्ञेत्। वर्ज्जेया राज्ञेत्र राज्ञेत्य राज्ञेत्र राज्ञेत्य राज्ञेत्र राज्ञेते राज्ञेत्र राज्ञेत्र राज्ञेत्र राज्ञेत्र राज्ञेत्र रा क्षेत्रपश्चरः अप्ते अप्तवो श्चिरः द्वारायः वर्दे । प्रश्चरः अप्रे द्वारे । स्रम् ग्रुप्त नशुर्धा से प्रमुन्य देवी हैं रामरा वी सामर हिन्य से प्रसूच सामर वर्त्रे नदे छे ने न्यायानवय नर्ते या ग्री ह्या नव्य ग्रीयाय वह न सम् ग्री नदे भ्रेर्प्तरमी र्श्वेर्प्तमाया सक्त समान्य स्मान्य स्मान्य । विष्य सम्मान्य स शुः श्रेव पाव पावव श्रेय श्रद्भार प्रवेद प्राय श्रिय श्राय श्रिय हो स्टिश प्राय प्रवेद । तःर्ने ग्रायापावयान्ने याग्चे ह्या दुराबन् योनान्यावेयाने प्रमान्ने । व्हिना मश्राद्यो क्रिंद्राची यार्हेर तुराया शेराया श्रेयाश्राम तुवा वाही ख्रूर तुवा है वनशःग्वन ग्रीशर्देरः नः शेष्युन नः रदः ग्रीशरेग नशर्देरः नः हेदः दः चुर्वे । दर्गेवः अर्क्वेगः मशुअः यः श्रेंग्रयः यः यः यः स्वाः यदः देः द्राः यः वर्षः कॅ सूर्यान् देशाया से सार हराने निया या सुत्यान हिना धीरा है। विस्थाने निया वी के द : त्र वर्षे अ : प्रवे : इ अ : देवे : विं जा अ जा व द : व र : व : व वे : वे र : विं अ जा द : तःसःसःयःसर्केन्यः होन्यये हिसने ते क्षेत्रःन्येत्नन्यवस्याधेत्। ळ्ट्यासन्दर्भक्यासधीत्रवेषाश्चित्रायास्यदे नसूत्रायासम्हित्सर्भ्य नःधेवर्दे। । नर्गेवरसर्वेगामे ह्रा ग्रीर्नेमासमावनः नरः ग्रुनिरेश्वेरः नर्गेवः

मक्र्याः सम्मान्या मान्या मान् अपावटाव केंग्नाया श्रेवाया अपेता विषया षर-रुद्र-ववे-दर्गेर-द्र- वराय-श्रॅग्रय-राद्गेव-सर्क्र्या-ग्रद्धा-राद्य-रुद्दा-रा यश्रभुवर्धरम्मद्भरके के नामर् भ्रम्भवर्षा । द्राने श्रिट्यो भर्के नामः यावयः नर्वो अः मदे : इअः न्दः न उअः ने : वर्वे : नर्वे । नुदे : क्रेन् : ग्री अः विः अकुरप्रगुर्यात्रेत्रापि । क्षेत्रायावया भेप्ताया विष्या भेपति । स्था है। कृतुःबेखा विषायाववयदर्वीयायदे अवायदे ह्या वेष्ट्रवायायदा वी खेः न-नर्देर-नर्भ-ग्राट-वि-द्रियान्द्र-धर-नश्चुर-घ-द्रा वि-स-नश्चुर-प्यट-नन्ग्राश्चेत्रसदेः श्चे त्यायान्य करान्ता वन्नमास्य स्थानि स्यापि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स्थानि स् वी सुनर्भासुत्र क्षर्र सर्वे द्वा ही सान उदाया प्यार के वासामान्य से दिवी सार्वे । न्द्रं अर्थे ने र्रा की अर्थ अर्थेट न वा वि न श्रुर् अर्थ श्रुर् र यह न स्थान हर् र्ह्में दे से प्रक्रम्य प्रयास्य स्टर्मे या नस्य नर होते।

विस्र १८८ विस्र १८ वर्षे वास्तर विस्ति । इत्र हे सा सु १५ वर्षे वासर देशन्तर्दा हेर्न्यग्रस्थार्श्रवाशन्यश्वर्षेत्र्यस्वेशन्तर्द्रा विस्र १८८ वें सामाया से वासाय स्थान हैं ५ सम्देश मान्या विस्तर विस्तर स्थान नेते खूर न ने र त्या अंग अप स सुर अप र न न व र त सुर न ने र नश्चेग्।राःश्चेग्रायग्।रेंद्।ग्री:यश्राग्रीश्रायश्चानु।विदानश्चेद्।द्रश्रशःग्री। र्हें अ'ग्रट्र ग्रिट्र शुर्वे अ'वे अ'थेव'हे। यग्रान्वेदिः बस्द्रन् स्ट्रान्वेर श्रीर र्रे । भूर न न हें द न त्या अपा अपा अपा वे अपा भू तु खुया सर सर नी रे अपा थे। क्षेत्रान्ते सःर्रेत्यः वर्देन नवस्य क्षु नर होन संक्षेत्र ही । नावतः ही में रायः र्शेन्यायासुरावासे वित्राचरात्राचिराविरास्त्रितास्यायासुन्देरात्रासेत्या वैं। विद्वार्ये विद्या भी अस्त शुष्य विद्वा के अवे अप्य अविश्वा राख्नुरावात्वर्याराने द्वो क्रेंयाया वात्र रायरा हुर्वे । द्वो क्रेंया है स्ट्रिया त्रःबे'क्। नगे'ऄॣॕअ'नेअ'ॾ्अ'ने'र्नन'तृ'तुरःनवे'धेव'धर'र्नेगअ'क'नगे' वर्त्रायानस्त्रायम् हुर्वे । देवे नद्यामें साहुम् दाहे सूमहा लेव। ह्या वर्ष्ययादरेष्याञ्चरञ्चेर्यानेषाठेयायाष्ट्रयावञ्चातरेष्यावरः गर्धेग्राश्चित्रायाव्याच्याक्ष्या श्रुव्या श्रुव्या । व्याचित्रायम् व्येवायवे स्वयः धरःवशुरःवः इसःधरः वश्चे दः धवेः भ्रवसः वसः वशुरः वर्दे।

यविरायत्र मञ्जा श्रीयायत्र प्रश्नियाय्य । विष्याय्य प्रश्नियाय्य । विषया । वि

य्या श्रुप्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त

यश्यामाभी सूत्रामाय वृत्तान निर्वे या निर्वे

निवास स्वास्थान स्वास्थान

नश्चुणः नर्गे श्राद्धः स्वर्धः विद्धाः विद्धाः विद्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः

मिश्रम्भावी मिश्रम्भावस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्त्रः वित्तन्त्रः स्वित्तन्तः स्वित्ता स्वान्त्रः स्वित्ता स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्

यश्यामालु निर्म्म स्थान स्थान

विदः विश्वः व्यः विश्वाः मानिः द्रदः। वरः हः गाःषः श्रेषाश्वः धरिः विश्वः पाशुद्रशः श्री। यःभागाचिवाःसँनिः परादर्वेत् तुः नक्तुन् दुवैः देवः बरावीः सेराधेवः दे। यःनिःगाःशः रितः नमुः नः देशः सयः सरः वशुरःश्चेः यारः निने नमुः नः देः देः सयः यर्से दशुर्र्र्र्स्य स्रुस्य व इस दशेट्र् स्य प्राण्य हेट्र म्रुट्स संदे हैं। ग्रहः भाष्ट्राचि करे द्रो धीव प्रथादे दे प्रवे क प्रमुख व प्रथा प्रम् प्रशूप स्था ग्रहःसः हःदी ग्रेशेन्स्स्या न्द्यः स्नुन्यः यशः ग्रुशः सदे वेन् स्त्री व् तेनाः यथा ग्रह्मान्द्रे विद्यायम्त्रे द्वायम्य व्यायम् यानर्रिटानु स्वर्रा वेशान्दा वावि तेया यथा यह याहि हो। याहि हो। न्नमान्त्री अर्देन रहन रहन पीन न ने निर्माण का नुसामा पीन में निर्मादन इसर्तृगायमा नृत्रीयारेमात्रामात्री यासेम्यस्य प्राप्त स्थान उदानु गुरुष्य दे हरा हैं जियादा। सर्देव क्षव उदा वेश गुर्व दे शर्म प्रमुद् यदे ह्याया श्रुयायदे वियार्थे । व्याके निया महाया विष्ठे निया ध्रिया वि यिष्ठेशायाम् साम्यादेया यायरासान्याम्य दुन्यायाम् साम्यादेय यायरायान्यान्यासुयाद्वास्यादियायाम्हायाद्वयायिवादी । यदी यावया र्भगारमी न्नरर्ग्नुभभेषा नक्ष्रनाम प्रकल्पिके समाङ्ग्रस्न ग्राम <u> वःग्राह्मःसः हः देवे क्वें या या या या या त्या या त्या विष्या र या विष्या या विष्या या विष्या विषय विषय विषय</u> नहेव वर्षासान्त्र माञ्चामक्रामा हामवी किये निर्धास माक्रामा त्र्वेयामः ईस्यापित् म्याविष्यः । या व्यविष्यः में स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्व

यान्त्रीयान्त्रान्ते। ने न्यान्ते। कन्याय्ये श्री स्वाय्याये स्वाये स्वाय्याये स्वाय्याये स्वाय्याये स्वाय्याये स्वाय्याये स्वाय्ये स्वाये स्वय्याये स्वय्ये स्वयं स्वय्याये स्वयं स्

होत्रायायम् कत्योवरायस्येग्रायाः । सुरातुः हेर्ड्याया होत्रायसङ्गर्यायः ने कुल में त्या ह्रें त में के त में या न हुट त्या ने ता ति भूट के या ही की हिंद वे मुव अर्दे । विश्व पर्दे विश्व श्रें वाश वाशुर्य परि विश्व स्थे व ग्रुसर्स्यायान्द्र्यार्थान्यार्थान्यार्थान्या कुर्ग्या कुर्ग्या कुर्ग्या बर-८८-श्रु-रत् ८५.व...व्यावियाः इत्यानम् अत्यास्य स्यान्य स्वर्ते । <u> पराविष्ठेगामेश विदेश्वकुरळग्रेगाया गुःश्रेने उसाग्रेश रेत्रा स्ट्रा</u> नरमिक्षेर्वे नियान्ता क्षेत्रायन्तु। नयानयासेनायान्त्रेयाने क्षाय नन्द्रान्द्रा नेशर्मा हेर्पान्द्रा देर्श्यर्गी त्राद्रा कुरि कुण्यर मुःलिक्रमुःश्रान्तिका पूर्वा प नमुन्रकःग्रेगिः प्रेन्ने। नमुन्रकःग्रेगः प्रदःकन्नम् अत्राध्याः वेशः श्रीम् शामश्रीरश्रामदे भ्री सार्वा हेता स्वारा स्वारा सार्वा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स य वेशन्त्र देवे ते भार्या येश दे नश्कर स्ट्राय श्रम से से से प्रायम गश्रम्भारान्मा वेशिषाक्षेत्राचिष्ट्रम्मवसास्य देत्रम्भवसास्य स्वास्त्राच्या हाने भूराम्बुर्यास्त्रा श्राना श्राना श्राना श्राना स्वास्त्र स्वा 

नेश्व श्रे में त्यादे १३ स्था क्रिया व्यादे १३ स्था मार्थ में त्या व्यादे १५ स्था मार्थ भी स्था मार्थ में त्या स्था मार्थ में त्या स्था मार्थ में त्या स्था मार्थ भी स्था मार्थ भी स्था मार्थ में स्था मार्थ मार्थ भी स्यादे १५ स्था मार्थ में स्था मार्थ में स्था मार्थ मार्थ में स्था मार्थ मार्थ मार्थ में स्था मार्थ मार्

नःहेर्-ग्रीशःरेव् वरःग्रान्नः धरः से व्याधारे व्यारेव वरः सेर् धराने नमुश्रान्ययायम्भीवयुम्यस्याश्रुयान्। में हे मेन में के वार्शन्य रामिन के'न'हेर्'ग्रेश'रेद'बर'परे'र्स्य सें'वेस'ग्राद्य'सर'से'त्रार्था'देरेद'बर' र्या ग्री अवर भ्रित भारे द प्येत है। के अरे दि ग्री अर ही नर पदे न अर्थ दे भ्रित कुर-न-नमुर्यान् शुर-नर-भेरवशुर-रयाश्रुयान् नेन-मुक्र-निःमेन्। देव बर ग्राप्त सर के किंगा स ग्राप्त धेव स दे वे देव पठ प्राप्त किंद्र स्था हु अ'गर्हेग्रथ'रा'हेट्'सेव'रम्थ'रे'नमुश'द'र्स्चेस'रेंदस'हेश'तुश'सु'दशुर' र्रे । यरयाक्त्रयाक्षीः भ्रामानुद्रान्ते निर्देदान्य निर्माया दे निर्माया वेरावशूरावेषा रेवा श्रमान्यासराधी त्यारायमुपारे वा सर्या मुखा ग्रीः भ्रागात्रः वे गावयः त् स्मेरः सदेः सेवः सें रहेतः धेवः सम्म दे न मुम्यः वः समासरावर्षेरार्स् भि.श्रम्भायोरालर.येरायश्चर्यीयावस्थाउराया समायरावण्यारासमानेवा मर्केरायदेर्देवकिरात्राम्यकेषान्यार्थे। मि रोसरापॅर्, नु: बेद गुर रे: विवास रिये वा या नसूर्य है रिये ही ना वा दे है या या बेर्ने नमुन्नदेख्याक्षेत्रपदेष्ट्रिम्मे । वितृतेगाख्या यर्मेषायाचीर्ना बेर्पश्चेरितं प्रियं केर्पत्रित्र केर्पत्र प्रत्य क्षा विष्य क्षेत्र क यर दशूर र्रे । क्रुव यः श्रें वाश्वाय विवा है व तुः वाय वे व वेवा य देवे ग्रवशःभ्रम्यशःम् म्यदेः प्रदेशः र्यः धेवः प्रशः पेदेः ग्रवशः भ्रम्यशः ग्रीः देवः घरः नक्षित्र अर्दे । श्चिर मान्य मन्य निवर । अर मान्य प्राप्त हरा ।

यहिस्रायन्त्रायदिः भ्रम्यादि । यहुन् । यहुन्

वया देशन्तर्वात्रहेत्यास्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र त्रित्वायात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् वया देशन्तर्वात्रहेत्यास्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

गशुरायाहेशाशुसूनायदेः सूनरायागशुरा स्रायिता र्ये

र्श्वेर्रायदेः अः क्षेत्राया सेवायः देवाया वार्वेर् द्रायवयः वर्षे । द्रायं देव में अप्यः र्रोग्रयः प्रमृत्रयः पे देशः यरः गान्तः दुः हीतः यः हेन् प्रवितः दुः पश्चेः नः सेन्यमः हे नमः र्सेन्द्रायस्य स्टि र्सेन्यन विवादः र्सेस सेन्य विवादः री। नक्रुव्यये हिंगा यदे द्वार मे शास्त्र स्वर से विद्यूर या वदे विवर्ष प्राप्त यान्तरसूर्यान्दर। दर्रेयारी क्षरानि । म् अं अअ ग्री अ ग्राय र र स्वा अ ५ ८ र सूत्र ५ वा गी अ ह् अ १ ८ तुय ५ ५ व द्वा त वशुरार्ने । १२६ँ अर्थः क्षेयायर शुरावि श्रीर श्री वा पर्वे प्येवा पर्वे प्येव श्री । वर्देदे।वित्रसार्चे नित्रे सेट्रि विद्यामी रासा गुरुषा पर पाव्यामी देव हैट र्न्नमुन्नः परार्देशमानिवे स्याया भ्रेष्यया यवे श्रेष्ट्रित्रवर्षे । इसारे मान्य ग्री धिव पाया क्रु अळव प्रवाद विवा वी या वर्षा वी धिव वें वर्षा में या या न बुर दें। । नन्ना थ बिद्रा धेद दें सूर्य पदे हेंना प्रया ग्राम्य स्था रिते श्रे र निर्देश । इस प्रमाय विवा वार्य से वार व बर में नि से स्र स्र स्र स् वर्देन्यायायम् श्रुं सार्वे ।

८८। वात्रशावात्रात्रात्रवार्विवारार्वे राष्ट्रियार्वे राष्ट्रियावे वार्यायार्थे राष्ट्रियावे वार्याया केट्राधेवाययार्श्वे राववेरश्वे रावाधेवर्ते। । <u>ग्रा</u>ट्यारे यार्वे राटे ग्रुवायावा नमुर्यायाधीवार्ते। विस्थायाधियाः तुर्याद्याद्याद्याद्यायाः <u> भ्रेर्-नद्याक्षेद्रःक्ष्यंश्याव्यत्रः द्याद्याद्याः याद्याद्याः स्ट्रेर्न्यः मेर्ट्</u> क्षिय्याक्ष्याक्षेत्रच्छिः याद्यात्यात्रक्षेत्रायाद्या क्षिय्याच्छीः याद्वेदाक्ष्ययास्यः अन्यायानश्चित्रयाधरार्देरान्नेत्राचेत्रयादेत्राह्मे ।देरानेत्राह्मेत्रया गरःवर्थः ब्रुरः वे वा देरः बेरः यादेवः श्रूयः यात्रेदः वे दे द्वाः कें स्थायादः दुः वस्रश्चर् क्रीश्चर्र सें रावब्दाव ने राद्वर हैं। अनुवाव प्रे की द्वराव विवाप्तः धरः वर्देरः वर्देवा अः अं विकाप्तरः वरः श्रेवा अः यः धरः देरः हो प्रायः ने निर्वासे । वर्षासे अर्वे र वेदा वेश्वास निर्वेशासर हैं र न पर दें ग्रेन्यने न्द्रिक्ष विषय स्त्रिक्षय प्रम्य स्त्रिक्ष स्तर् ८८.यो रेशका.स. स्थका. यश्चिता.स. से में ४. या. त्री सामा स्था निष्टि । यश्चिता.स. यानस्यान्य वित्राहित्राहे। यद्या में या सी स्वेशायम विवाह यस स्वराय प्रा वयान्नियदेशस्त्रस्य सुसान् वन्यार्थे साम्राम्य । स्राम्यास्त्रम् । याष्ठी सार्वे निर्देशकार्य राष्ट्रिया में या में वयः हः नवे सर्दे त्र शुस्र न् : नन् ना से सास्र साया ना या हे : श्रें न : न् र खू त हे ना । हुन्वेच्याश्वरदेवे के नमुश्रायाधेव वे । पावश्वरावश्वेषायवे देपा हु यर्के ग्रथान् नित्र के नित्र स्वास्त्र के स

न्यान्त्राच्यां स्थान्त्रे न्यान्त्राच्याः स्थान्य स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र

बेर्'र्रि । क्रुव्य'र्से र्वा'वे स्थायार्वराचा प्रवेत क्री वसास्रावदाया सामवसा वर्चरात्राक्षरावरावर्ष्य्यरावर्ष्य्यरात्रीत्राचे न्यो क्षेरायळ्ययाची वरात्रा मुवायमा वर्सेस्यायायया मुद्दायते हातस्या मुराने वासामावया द्वीया सेसरासेट्र सदे हिर्से । विवास वावय द्वीरा सदे सक्सरायस सक्तरायावर र्'र्ज्याय र्याय स्थार है या रासे रे रें। । यावर या रें याया र्देयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्रेयान्या वर्षानवे वर्षानवि से दाया प्राप्त के साम से वर्षा निर्मे निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म निर्म वशुरार्रे । वि.यायायावयान्वीयाशुः सराधिताययाययात्रयायायन्याः धरायसमियानात्रसान्तिमासामावयानमिसासदे हसायन्यनाते यसान्तर र्रे त्र रायद्वयम् होद्याद्य यद्वे । स्र राद्य के सामु त्या रेषे वा रा से द्या निवन्त्रः नेरः निरुपाराया परः विष्वाया येतः नयः श्रुयात् । विष्टरः केयानुदेः <u> दर:र्:ह्रश:नड्ग:क्षे:यर्य:नर:ग्रेर:य:दे:क्वें:न:य:श्रेंगश:यदे:क्लरश:</u> गवित्र: ५: न दुर्गा व रू. १५५ व र न ५ १५५ व र न १५ व र न १५ १५ व र न १४ व र न १५ व र न १५ व र न १५ व र न १४ व र न १५ व र न १४ व र रोसरार्धिन्या ग्रावरात्रार्धिनिदेखें मु रोसरान्द्र न्याय सम्देशसम् त्रुगामा से दान स्थान देशा मानि दे सुदान से दाया क्षेत्रान दे है सामा पे दाने वि र्श्वेर्प्ततेयात्रमःभ्राच्यायाःम् स्रोधस्यादे स्रोदायादिते स्यात्रीते स्राप्तात्रीते स्राप्तात्रीत्रात्रात्रीत्र स्तिन्त्र-द्रिशः चालि ने स्थान्न स्थान्त्र स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान स्थान्त स्थान स्था

ख्रिन्न निर्मेन निर्म

वर्चनान्द्रा नदानात्रार्श्वेन्यान्तेन्तुः त्न्याने ह्याने निवा हुदानानः नमुर्यायाधीवर्ते। । क्रुवायाञ्चर् वेवार् सार्धेर्यं स्थावार वी के सेवाबर नक्वित्व तुःग्विश्वविद्यायदिनः हुन्यान्नर्धे वश्यायाये छुवाळन इश्याविवाधिव प्रश्रादेवे देव वद्याव हेर्वे वित्ते वे स्ट्रा हित्य प्रश्राव व व'यव'रे'रे'बेट'ब्रूटश'रावे'श्रुॅर'रा'त्र'द्रेर्श'गवे'त्रा'श'त्र'रें। ।गर' व्ययान्यवानरा तुः नवे वे रानन्या ह्या थे या हे या या तुः या हे राधे वा वे रा नन्गानेवे कः शें शें वानहेन पवे नम्शापवे श्रुं र न न र ने शें शावि श यासाळदात्रात्राञ्च देत्र । मुत्रार्ये द्वस्य साग्रदार्वे रासी पाठे पाया दुःसाधी दात्र र्शे रेवि भ्रयानवे क नमुराया शन्दाय देवे से से से मारेवा सान कु त्या नमु अन्तम् अन्तरेत् वर्ष्य क्ष्या वित्रे वर्षे अन्य सुर्वे । मुत्रे में नुः अन्दि त्य *नुवःइशःशॅःशॅरःवर्गेऽःपरःचुर्देःश्वयः*ऽःक्वेंग्रॅशःश्रेःयद्यवःयःऽःसःहेऽः धेव व रर रर वी अवाय में य रावे के व यमु श रा धेव ही जाव श व श श्चन्यायायायायी के नम्यायायायायी वार्ती । यात्री वार्याय प्रति स्वयाय रा वर्गुर्राचात्वं निर्देश्मिन्यात्वं वर्षा

निवा नक्ष्मन्त्रा स्ट्रा स्ट्

र्रेया हुन्नो श्चिर दे भी न हिन्द् शुरुन्। याद क्या श्रीया न श्वर न दे हिन्द् गवगायर गुदे भे नदे खें गुर्से के वि । दे खश्र न क्वें गाय भे नदे शूर नेविः भ्रायाना सुम्या नेवान की नवि । या निवान नि र्नित्रम् नित्र में प्यानित्र वा मीर के हिन्य संभित्र है। नि प्यानित्र वि र्देर्याडेमार्यते सुःत्र्र्रित्रायद्यायश्यो । देशाद्यारेद्यायराळ्टाद्यापरावमाः ने मिडेमा सु समा समा दशुम भी मेन बहा में में मार्क हो से मार्क हो से मार्क हो से साम हो साम न्नो पन्त नावन पार्शे श्रें र हेश पर पार शे प्रशुर है। अनर्ने श परे धिरःर्रे । शुश्रानकुः धरा द्योः वर्त्तः द्याः वे वे रे रे राया वे याः श्वरः वर्षा द्योः वर्त्रकेर्न्यश्रम्यान्ये ह्वास्त्री विद्यमें सेत्रस्र स्थानहें त्यद म्रेर्-र्से । पावर र्र्सिर यस रेत बर न उर् से त्यूरा वेस से । पादस यिष्ठेश यन्या से सन्दर्भे व स्वरे ह्या या हेया व साया हेया . तुः यम् या हे। स्टर गी र्हेर नमु न ५८ त्य विश्व स्थित । ५ मी श्वेर ने मार वश हेर पे व रा देरः नद्याः सॅ सेव त्यायादः दुः येव सादेरः नद्याः सॅ सेव व सम्रास्य त्यूरः र्रे। त्रिवःर्रे सदःर्रे केंवाशके में स्वरंपवर्षेत्र या सुरुषेत्र से से स्वरंपाया स्व ब्रेर्स्थालें वा ग्राट्स विदासर से ब्राट्स रहे या सामे या मुन से खूवा स इस्रशः श्रीशः नमुश्रः यादी द्वो श्लिदः देवे खुदः नः नश्लेदः यदे प्यदः व्यवाः सः प्येदः है। मुनर्सेन्द्राञ्चनर्डमाञ्चन्यमेद्रायदेश्चिम् द्रदर्सेम्ल्मसायाञ्चेर वदे श्रें र व हे य तु य श्रें । दिर्दे य शु य ती व व र वे से स्वर त्य स्वर ह य ग्री ळ न्यन्यायी र मु न्यर पर्दे न त्य मुन में इसस न्य भूत हैया पर्दे न पर्दे न

देशक्षः स्टान्द्रमालक्षः भ्रीः विद्याभाषः प्रदेशः स्टान्यः विद्याभाषः स्टिन्यः स्टान्यः स्टा

यश्यायदी न्वेश्वर्यात्रेहिंस्य् वित्रः वित्

र्रे दे दर्द्वेय वदे ह्रा वमु वर्षा वस्यायस्य । त्रुद्याय दे या वस्य या यने नमुर्याय के वर्षे । श्रिय में दे न्वर न्य न्य वर्षे न्य में *इश* मद्र से द्वार विष्टि से देवे से क्रिस्स स्थान स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से से स्थान से स्थान श्चॅराची शाचारा वया चाववर द्यी 'र्नेवर्', प्रमु प्रवेश । पाने प्राया प्राया विषय स्था वर्रे वर्गामे अवर्षेन में सूसर् पेर्म्स सुवहें दाय र्रावहें तर्म विन्द्रमानीयायार्थेन्यायाम्।सेययाग्रीयायेद्राद्रम्यार्थेन्यय्यूनार्थे ।या स्यायार्श्रेयात्रासा इत्येते सुका विदान्दा र्सेटा सुन्दा सान्दा से पान्दा वज्ञराजुदेःगुवःद्वादःरःवं वः श्रॅवारायायरः स्वाराद्वायोशः भ्रायरः वेद्रायापरार्श्वेयार्येवे ।द्रवेश्वेद्रावीयाङ्गायार्येव्ययार्थेय्ययार्थेय्य मश्राहानग्री विदानम् नरा हुदे स्रुधायाद्या विदाने विदाने नम् नरा हुदे स्रुधा दशर्वीस्रायत्देराचायासेवासायास्य ग्रीत्यूराचायार स्थित्रायेवे । व्य वर्देर्व्यामाने नम् नर्ग्यं वर्ष्यं सूमान्या स्थान हत्यानु तरी यया वरी सूर नुया हे नमुदे सूया दया स्या र नुया न र्श्वेसर्गर्वे । स.स.२८:स्.व.२८:ये.श्वेर.२८। सावव.म्.२८। श्वेंय.२५व. यावयः दर्गे अः रा र्वे या अ श्री या व अ व अ व द अ या प्या प्य स्थित । यह अ या ८८. पश्चेश्रास्य द्या ही र से श्चे व र्वे स्रुस ५ , पर्वे वा पर से समाय पर श्वेस र्यत्। । ध्रिनः नद्याः यो अः याववः द्यो । यद्वः श्रीः अर्केदः श्रेवः यः श्रीया अः सवेः देव:र्:र्ने:श्वॅरःने:वन:एःइशः ह्या हितःय:र्ने:श्वॅरःनेश:र्ने:वर्वःवः

नठनशक्ते वर्गेन्या पर क्रिंस में। न्ने वर्त्न क्रिंस संस्था निन्न ग्रीम् ग्रुप्ति शेस्र स्या भ्री स्वर्धि मेर्टी हिस्स् श्री स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित न बुद्दान या विद्या शुर्म बुद्दान मान्द्र के अपने ममुराया प्यदार्श्वे अपने वि बद-देव-दर-वज्ञश्राळद-दर-धे-दर-४-५-दर-विध्य-वायाश्रीवाशासदे-नर्भें नर्भें अरु न्वर नदे निवे से द राम् से सरा में रामें रामें रामें रामें रामें रामें रामें रामें रामें राम यार वया यावद श्री अ ञ्लाय त्वरका या या व्वरका या दे रही रवे अ यस स्टारहा ग्विन भी देव दे भी देवर ये। सुरुष प्राप्त प्रस्ति में सुरुष प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त हिन्सेवर्के । नन्यायी भ्रयान केन्यम् सामर्थय नर्थय सर्वे यान्य प्राप्त मान्या र्रे या नित्र ग्राम्य नित्र में दे हिन्य हे या से में नित्र मा स्टामी या साम्राम्य निरम्बन्यः परम्यः वर्षेयः वर्षेयः वर्षे स्त्रे । प्रमे ह्येरः ह्ये व वर्षाः वीयः अर्वेदिन् सर्वे अन्यर् श्रेदिन्यन्यायी वदाव दिशास्त्र अर्थे विद्यायया अर्वेवित्रास्य स्थाने के निष्ठिया है। यक्का व्यापनिष्ठिया निष्ठा विकार स्थाने स्थाने विकार स्थाने नन्गानी अः अर्गे दः नुः दे । अः र्वे अः र्थे नः ग्रीः र्वे दः ग्रीः र्थे दः दे । श्रू अः सः न्रनः श्रेः नेयामञ्चेत्रामराचेत्रामञ्चे वर्ताष्ट्रमाञ्चेत्रायान्यापराहेया <u> चुर्राक्षेत्रने 'प्यास्त्रका ग्री खुर्या क्षेत्र 'प्रवेश क्षेत्र 'स्री । स्राचित्र प्राचेत्र प्रवेश क्षेत्र '</u> ५८। मुःशेसशःहेर्धेर्भिर्धेर। सस्यासराधरः से वशुरायः र्सेसार्धेरः लर.धु.पर्योत्र.सू.षुश्राचाश्ररशा चम्याच्युः कुर.री.पर्यो.च.लर.हेश.येश.शी. वशुरार्से ।वमु नवे के दादार्वो नदे वसावर्वे नदे सूर्ये पादार्वे सार्वेदारा वेशन्त्रानायमे मन्द्रामा सेन है। देवे विद्रायम् स्यान्त्री मार्थि सेन सेन

यद्विश्वासानक्ष्मना चुनि । स्वाप्त्राह्मित्या स्वाध्वासा स्वाप्त्राच्या स्वाध्या । तृन बुद न से द द स वि या ये व या या या र से र से द न हवा पर चु से सुद न र ह्या । ने सूर हु अव रर्ट से पर्कें न के राजवित हो के ना नी सूर्य या रासे न यर विद्युर र्रे । इस यर विद्या यर यथा स्था यथा स्था विद वसूय वर्षे नुर्दे। । नगे र्सेन्यो अन्ते सुन्दरस्या रेन्द्राया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व नुर्दे । द्रमे र्श्वेर मे अ द्रन्य अपन्य अपने माई मा अमा प्रदर्भ र नुरु है र ॻॖऀॺॱक़ॕॺॱॻॊ॔ॺॱॻॖऀॱख़ॱॺ॓ॱक़ॗॸॱॸॕॱॗऻक़ॕॺॱग़ॖढ़ॱय़ॱॺॺॱढ़ॸऀॱॸॸॹॱॻऀॱॾॗऀढ़ॱ नन्गार्गे सूर्यापदे सेयया ग्रीयाह्या येत्राया हेया या से निर्वा यदःज्ञशङ्गादेदःचःमुःवन्यारुदःग्रीःक्रेंयामुदःपरःयाग्रयायायाः इश्रास्ट्रिं वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे स्थान्य स्थाने मुर्भावक्रम्प्रम् सुर्वक्रम्प्रवर्षम् प्रम्पान्य विष्वश्चर्यम् । र्नेगान्द्राधरानुशाने प्रवरावरानुमें। । ने सूरानुशाग्रदार्श्वानी प्रवासी वरे । वर्षे वर्षा मी इशकें अ मुव धर ज्ञान्य धर शिर व धीव धर । नन्गाया होता हे या हे या हो स्वार्थित हो । व्यव से प्रान्त हो स्वार्थ गर्वेद्रायाचेद्रायविद्रायाच्याच्याचेत्रा

याब्रुस्रान्ध्रुर्स्से नित्रा याब्रुस्य स्थान् । याब्रुस्य स्थान्ध्रे । याब्रुस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्ध्य स्थान्य स्थान्य । याब्रुस्य स्थान्य स्थ

याधार हे श्राम से दार्श विषय में विषय

#### श्रेंगामार्डेन् प्रदेश्ययामा

मशुस्रासामान्त्र श्री श्रीमात्याम् निर्मार्श्वमान्त्र निर्मालमा निर्मालमा निर्मालमान्त्र स्थान्य निर्मालमा निर्मालमान्त्र स्थान्य निर्मालमान्त्र स्थान्य निर्मालमान्त्र स्थान्य निर्मालमान्त्र स्थान्य स्थान

गहिरामासूराम्स्यावनात्यानिर्या श्रीम्तिर्द्या गविरादेवात्री।

प्राथित्र स्थानित्री ध्रायार्थित् श्रीम्यानित्र म्यानित्र स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थान

तिः ठेग नगेः श्वें नः श्वेनः या न्या स्थानि । स्यानि । स्थानि । स

कें निविद्द्यान्य स्थान्य विश्वास्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

यम् विषया विषया मिले से दे विषया मिले से दे विषय में विष

मिल्दिन्द्रियः यात्रिक्षः यात्राक्ष्यः भ्रम्यक्षः भ्रम्यः यात्रिक्षः व्याः यात्राः विद्याः विद्याः यात्राः विद्याः वि

यान्त्रासेते पात्रयाञ्चात्रयाञ्चात्रयाञ्चा । वित्रावर्त्ते प्रत्यायाञ्चा । नगर्ना नगर्ना भे भेरानगर्ना स्थानिया स्थानिया त्रा याहेशा गुरुष्यु प्रक्रवा चिष्ये वे विष्यु दिन स्वता न्या में विषय । अर्क्षेत्राचाशुस्राद्वस्यान्यर वर्द्धेत्राचार्यस्यान्यस्या स्रीसेदानः इस्रयायदरः नर्यसामान्त्र प्राचिमा से प्राची स्थित मान्य प्राची है सामान्य सामित्र । र्रायों इसराय दें साम से राम से ता से का मारी के कि साम से से से साम मारी र्ने प्रेत्र के के मेन इसमाय हो राषेत्र र्ने प्रमेश के मार्क प्रेत्र प्रमाय के प्रमेश क्षरायात्रान्त्राम्याविदातुः कुत्यमा ह्यादि लेशा श्री । श्री त्या ह्यू त्याववातुः तर् नेशम्बर्धियानवद्वप्यद्यस्याम्बर्ध्यान्यस्य वेत्र केरिःद्वर्यः नेयायायार्वेरावरावयदावायायरावत्याया श्रेरावायादावीयावयदावा सम्रास्तर त्यूर वे त् र्वा र्वा र्वा र्वा र्वा स्व वा स महिरामा क्रिया मन्द्राचा विराण प्रमामी अळव हिन्द्र सेया नः कुरुष्यरः न विद्रायि । दिदारी व्यापाशुस्य ह्ये राजवे र न दिशे वाविवे र्यः नुद्ये। सन्नरः नुषाः यः र्वेषास्यः ययदः सर्वे। । न्राः स्वी वारः प्यरः सुरः यः वेशमः मुरुष्यर पळ दायही नार्रे दाया में प्राची मार्चे प्राची में प्राची मार्चे प्राची ८८.धेश.टे.८८.५वेष.२.८वेषा.स.श्रूषश्चरा. विश्व.ग्रीश.दसरश.स.व्रूर. नःयःश्रेषाश्रासन्दा सुश्राने न्दाराद्रोयानगातुश्रासन्दायःश्रेषाश्रामः वसरमारान्द्रा गम्पन् ग्रुप्तम् राये भी स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त म्यूप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ॻॱॸ॓ॱढ़ॆॸॱॺॱॸॸॱॺॏॴढ़ॸ॓ॱॷॸॱॻॖॏॴॱऄॺॱॸॏऄॗ॔ॱॸॱॠॴॴऄ॔। **ॗ**ॸॣॻ

नहनः क्षेत्र अस्ति स्वाया स्वाया में नाया स्वाया स्वीत स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया नश्चे वानाश्चित्रायाद्वा स्टानिव क्षयाया श्चेर्याय स्वाप्त निव निव विकास सम्बन्धिया स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व ८८। ८९४१५१७१४४५४५५५१ व्याचायास्याची स्वाया स्वायास्य स्वर् वर्ने नर्भामान्त्रा साम्राद्ध वासावह वासामाना विद्यापि स्पर्मा सेवा नगनिक्षेत्राहेर्न्नाकुत्रेते क्षुः वनसन्दा रेल्य्सन्दा रेल्य्सन्धेर्ना र्देर्पार्टा हेशसुर्द्वेरायवर्द्धयायाह्मस्यार्थे। विकेष्यरावसूर्यायेर नायर र् निर्देर नाय सैनास साय यह हो ह्या से द दें। से दह स्ट्र्स यायाप्यमञ्जेष्वमास्रेन्द्री। श्रिमानस्नायदेश्चिरान्स्यम्यारायान्या नुधिनः ळ'नर'वर्देग्रथ'रा'वा'षट'त्रे'न्या'सेट'र्दे। विके'नर'व्यूर'नवे र्सेग्रथ' देरस्य करमार्हेर न प्राप्ता देर रेट न प्री क्षेत्र मुन्ते हैं प्राप्त प्रमुक्त ने प्राप्त अःअर्वेदःवरःदशुरःवेअःग्रुःवःवःर्शेषाअःधवेःददेदःधअःगर्हेदःवःवःग्रेः व्याः सेन्द्री । प्रसन्धने हे सासुः प्रसुन सुनः सास्यः सहे सेन्द्रनः येदःदै।।

याहेश्यःयाविदेःस्वः न् श्रेन्ते याश्वः यस्यः श्रे श्रे स्वः याहेश्यः याविदेः स्वः विद्यः स्वः विद्यः स्वः याविदः याः याविदः याः स्वः याविदः याः याविदः याव

हिन्याश्वरानदी वायाने से नड्साने सावाडेवा या श्वेरान ह्या है र्रेश से दे विया पद्ध द पक्षे पर अर्धद पश्च द प्रायम व स्थम द स्थम द वक्रेन्यस्थर्द्धत्रव्यक्ष्वत्यव्यक्ष्यत्यस्थायस्थायः वर्ष्केन्यस्थायः वर्ष्केन्यस्थायः वर्ष्केन्यस्थायः वर्षके वःदेशःभीः श्रः शर्तिः वः यः श्रूदः य। श्रेः नश्चे द्वः त्वेः त्र्याः हुः नभूदः यद्याः ददः र्वेः न्त्राचे न्त्राची शास्त्रासदे द्वास्त्र स्त्राची न्द्रास्त्र । वे सम्रायवे क्रमायर रेगा हे ८ ५८ रेगा हे ८ स्मरायद सम्राय स्थान वेशमान्द्रायायायां वित्र दिन्ध्वन् विवायाना सेन्द्री व दुःस्य शिव्हा श्रुॅर्यायश्रुव्यविष्ट्रियाद्या वर्ष्ययातुः याडेयायवेष्ट्रियास्य विश्वास्य । वर्षेवे न्वेन्यायाया अळार्येवायार्थे रामार्थे याच्यायाया विष्याया स्थान दे। दे भूराव न दुः से रहारहा वी शासक्व न श्रुव से द्वीं शासराव सुरा है। न्ययात्यः स्यायायः में त्याविया द्वीया वियाया सुर्यायये द्वीया कुः दः रो त्राचा सम्राचर्षे स्राचा धेरा ने स्वाच्या वित्र से दान से वक्रे नवे हिरदेश नि से द्यार वश्य रे हेर वर्ष क्रिय स्ट वर्ष के स्ट स्ट की से ट वर वक्रे देश ग्री क्षे रावारे रे पेंदायश क्षे रावा अनुवाय वे भी रादा । वर्षा तुः भे 'दे 'भे 'नर' गुडेग्' पदे 'धेर' वस्य य 'ठट्' या श्रें र' न 'दे या भे 'पें ट्' पदे ' ध्रेरप्रवायानासेरार्ने विकेष्मराहेनामास्यायार्भेरपान्स्यायार्भेर सस्रास्त्र स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थाप यदे ग्रावस अन्य रहेन धेव यदे हिन होन य देव सेन य हैन धेव दें विया श्री

त्रासं र्वेशविष्य विष्य स्थाने विष्य स्थाने स्थाने

निहेशसङ्क्ष्रिं रानिश्चेष्यानि हो निहार के निहेश स्थानि हो त्यक्ष निहेश स्थानि हो त्यक्ष निहार के निह

याश्वासाध्याची श्रेयाना है। श्रेयश्वाव स्वित्य वित्ता स्वित्य स्वत्य स्वत्य

गश्यामानस्यान्द्रात्त्रेयानिः न्याः स्वात्त्रात्त्रेयानिः यथा वदायाः प्रत्येयानिः यथा वदायाः प्रत्येयानिः प्रया स्वात्त्रात्त्रेयानिः प्रत्याः स्वात्त्रात्त्रेयानिः प्रत्याः स्वात्त्राः स्वात्राः स्वात्त्राः स्वात्त्रः स्वत्त्रः स्वात्त्रः स्वात्त्रः

दक्षेत्रभावस्यादे। त्रायादे से स्वाधित्र स्वाधित्य स्वा

यश्यामान्त्रवार्त्ता याङ्गेत्यायत्ये प्रस्तान्त्रवा स्वार्त्ता स्वार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्ता याश्यामान्त्रवार्त्त्रवार्थ्य याश्यामान्त्रवार्त्त्रवार्थ्य याश्यामान्त्रवार्थ्य याश्यामान्य याश्यामान्त्रवार्थ्य याश्यामान्य याश्यामान्त्रवार्थ्य याश्यामान्त्रवार्थ्य याश्यामान्य याश्याय याश्या

नरः तुर्दे । शैंवाश्राया वेशः श्लेशायश्री सुशाग्रीशाविवा सेटा तुषा पुरा न्याची शाप से न देव हैया या बन स्वया देव हैया या शेया हो न देव हैया है श नुनायार्सेग्रामानमूर्वे । हे र्सुग्रामान्यानुमानम् वयानदे र्ते अं प्यर देवा यर प्रयर है। । मुद्र से श्वान में र निवे श्वेर र्, पुर हैं निवर नरः ह्या देर वेंद्र न त्या श्रें गुश्रासान हुना श्रे सा से गायर वसदा दे। । निवे पा मैंग्रास्रास्ट्रियानवे नक्ष्मा ग्रुन् द्वी द्वी क्षेट्राट्यान के सुवावी | द्वी । र्श्वेर-भेर-प-८-८-१ वासीयाय हे या गुर्या अर्थे वि । द्वी र्श्वेर-८या वा नेवे र्जेनश मुक्त । र्जेनश हे सूर मुन ने प्यान के राम्न माने । नेवे र्सूर शुरुख्याययाष्ट्रिराचाद्याञ्चराचरात्र्ये । यायाते दे दराध्य देयायायया <u> शुःम्रेवःसरः भेः तृषःयः वयःदरः श्लेषः म्रीः तृषःशुः तेः म्रीवःसरः भेः तृषःसः</u> श्रेव्यक्त में व्यक्ष मार्च वा व्यवापित र सुर र सुव र से वि स्व व र से व नवेद्रान्युःनाद्दाः हुमार्देशानव्याः पाद्दाः देवे व्यवः ही ही व्यवेदा हु। नाद्दा ने दिन्यास दिन्या नह्या पर नुदेश याया हे प्रयान ने बदान हो सा ही न्या शुःष्परःगव्याशुः होवः परः भेः त्यावा र्गेषायः नेयः नेवेः ववः नरः भ्रेष्यः होरः हे नशु नर हुर्दे । धु र्रे प्येद द र्र्स्स अहिर हे नशु नर हुर्दे । गर्से द प्येर सम्रायम् वर्षुम् नाम् सम् वर्षे न्यते भूनमान्य वर्षा वर्षुमानि

यहिर्यायस्य स्ट्रेम्य भी अत्य स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रेम्य स्ट्रेम्य

 स्वार्यके स्वार

यगानी मु हो द पाया श्रें ग्राया ये त्या पात त्या है । से व पु प प्राय के या नवित्रः र् नुर्दे। । गर्देव ग्री अ ने व र प्रति भ्री र र र ग्राय र स्वाय ग्री मय उगानुन्यायर ने अपनि वर्षे । अदायर नवाया अवाया विवायाया स्यानितः भ्रीमः तुः सिः स्वार्या स्थान्य स्थानितः स्यानितः स्थानितः स्थानित नविवादेराशुराम्याम्बद्धाः यार्वेदायराये । तशुरानराये म्यायारार्ये। र्शेर्-नह्मान्यरः ग्रुःक्षेः हैं नः ५८: भेटायः श्रीम्यायः द्वीयः नरः ग्रुदे । यदेम्यः धर होत् परि हिंग्रा हुर हु रायदेग्रा धर हा न है। न या यन दार धर हो। ह्या विवासगिर्ध्यायायायायायायाया महारागिर्ध्याप्यसार् वर्ष्ट्रीहराने शुं ने द्वाय सुरवर्षे नर से नुदे । भ्रुव न सुन से नाय सन्य न स्व गर्भे न सुन्तरे न सून पाया सुरानर से नुर्दे । सर्कें द पर्दे र सार र न सुर्दे वेशमान्त्रम् नुम्बर्द्धनायसम्भामायान्त्रम् नर्राभ्यम् । व्यन्यायसम् । भूनशःत्राद्यूटः च द्याः में।।।

#### ह्रव:रु:श्रु:नदे:सय:मा

यवे संगवित श्री देत पश्चित संगवित स्थान संग्व स

यम् अर्हेन स्ट्रिंग स्वाप्त स

स्वर्धियान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्षयान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्ष्यान्त्रिक्षयान्त्रिक्ष्यान्तिः

गल्दः र्नेत्रायाशुर्यायय। दरार्थः इसायग्रेद्राः भ्रम्याविदः यात्रायाहेशायय। दरार्थः इसायग्रेद्राः विद्यायाहेशायय। व्यापायहेशाययाहेशायय। वस्त्रायविद्यायय। वस्त्राय्याहेशायय। वस्त्राय्याहेशायय। वस्त्रायहायः विद्यायः विद्

महिरान्य क्षेत्र स्वानि स्वान

सिवित्रान्त अवसार्वे न्त्रावर्षे अवित्रान्ते स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स <u> ५८.र्घेथ.त्र भ्रम्भ ४.२८.१ क्रॅ.पड़ी.कुथ.सू.प्री.कुथ.सू.२वाय.सू.२८.१ क्रेस.२वाय.</u> र्वे त्यःश्रेवाश्राराद्वस्रशाद्दा धे द्वाशाम्दाराष्ट्री मास्राराद्वस्यशा <u>५८। न्यां भारतीया क्षेत्र विश्वास्त्र स्वार्थ क्षेत्र विश्वास्त्र स्वार्थ क्षेत्र विश्वास्त्र स्वार्थ क्षेत्र</u> र्शेन्य राप्त्र व्याप्त्र राप्त्र राप्त र्भेग्रयाद्या स्रथासुयार्थाधीर्म्यासामी मेरान्यास्रयास्या र्शेना-प्र-रे-श्रे-श्रेनाश-र्नोत्र-ध-दे-प्ना-नी-त्तु-हेप्-य-सर्वेद-य-य-श्रेन्थाय-श्चरायायाया वियान्या हेराया है अपूर्याया है अपूर्यायाया है अपूर्याया है अपूर्याया है अपूर्याया है अपूर्याया है अपूर्याया है अपूर्याया ह यार्स्यार्से होत् केत्यार्के स्वाप्त केत्या केत्या के त्याया के त्याया के त्याया के त्याया के त्याया के त्याया वर्गामा ना अधियाग्रवामा हो दारा देवा में वसा हे तुः सदा सुर् हो दें हो सा देवा है । दे खासमारादशुरावाने दे द्वार्यरावने मुन्यावमा सर्वेदावा र्शेग्रायायास्त्रानेशान्तेशान्ते श्रीमार्से । दित्तावस्याने दास्ते नेशाना देवाः अप्यायह्वाः प्रयाने 'द्वाः वीका यद्वाः अर्वेदः चः श्रेवायः श्रूयः दः ह्वः द् हे सूर वर्गूर वे वा देश अर्वेट न र्रेग्य र र में या अर्वेट न र्रेग्य र र नियासर्वेदारी त्यापदे दीर वियाग्यरया

योश्यामायोश्यामायो श्री स्थाने स्थान

महिश्रासार्टे मिंदे स्वाद्वी त्या महिश्रास्था यह त्या मिंदे स्वाद्वी स्वाद

याहेश्वराश्वरावात्त्र श्र्र्याचेत्र न्वरात्त्र न्वरात्त्र न्वराव्य विश्वरायात्र विश्वराय विश्वरय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वरय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वरय विश्वराय विश्वरय विश्वराय विश्वरय विश्वयय विश्वयय विश्वरय विश्वयय विश

य्व पर पर प्र भेरा न श्रुर हे श्रुरा व श्रूरा रेवि।

गशुस्रायानेते के सामहिताया महिसायस्य निर्म्सिन् भे से के सम्याया महिसायस्य निर्म्सिन् भे से के सम्याया महिसायस्य निर्म्सिन् भे से के सम्याया महिसायस्य निर्म्सिन् भे से सम्याया स्थाय निर्म्सिन् स्थाये स्थाय स्थ

महिश्रासं श्चें रावदे शेषा नार्ते म्या महित्र रावह श्वासं श्चे रावह श्वासं श्चे रावह श्वासं विश्वासं श्चे रावह राव श्चे रावह रावह श्वासं श्चे रावह रावह स्वासं रावह रावह स्वासं श्चे रावह रावह स्वासं श्चे रावह रावह स्वासं श्चे रावह रावह स्वासं रावह रावह स्वासं रावह रावह स्वासं श्चे रावह रावह स्वासं रावह स्वसं रावह स्वासं रावह स्वसं रावह स्वसं रावह स्वासं रावह स्वास

मित्रेश्वरान्त्र्यन्त्र्वा अर्वश्वर्यस्य अर्थः स्ट्रिश्वर्यः स्ट्र्यः स्ट्रिश्वर्यः स्ट्रिश्वर्यः स्ट्रिश्वर्यः स्ट्र्यः स्ट्रि

याहेश्वासालु निर्देश्वासालु निर्देश पाय्यात्य स्थात्य स्थात्य

श्चित्राया नर्मायाहेशयाश्चरहेश । श्चित्राया नर्मायाहेशयाश्चरहें।।

महिश्यसहै। श्रेःक्रेंश्चरम्य विष्यस्य विषयस्य विषयस्

माशुस्रायायतृत्याचे नाचे अस्त्रायाचे स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वयाय स्वायाय स्वयाय स्य

होत्र र्श्वेस रित्र् । ते त्वा ग्रम् क्षेत्र वी शत्र त्र त्ये त्व स्था सम् त्यूमः

निहेश्यः निहेशः निह

# स्याः सदः है।

यहिश्वानार्थे त्यान्ते । प्रत्ये ।

रेगा मुद्रे निर्मा क्या अपन्ति । अपने निर्मा क्या अपने ।

# द्यीत्र'रादे खूगा आ

 यावश्यत्यावश्याः व्यास्त्र प्रत्याः व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व

मिर्देशासामुन् सूरामितासिरा सिरामिता स्थापा स्थापा सिरामिता सिरामि ब्रैं र न रेग रेट न र या नर ल्याया में विलेश सम्बा सुन या दिन्यःक्षेरः वरे वार्श्वेरः वर्षे । याद्वेयः यात्व्रात्रेयः यात्वेयः याय्वे प्रायया प्राये सर्देर्न्स्युन्ते। ग्रान्युर्यात् सि.य.वर्चेत्रायते द्वो वर्त्ता ख्रूया सर वर्ण्य वेत्रा हिन्द्रस्तर्नो तर्त्रभ्यासरत्युरर्ने । सेससर्रिष्ठ्रत्रभ्युर वावश्वरावे व शियावश्वेवायाने रावन्वायया श्वरावाय राशी क्र्यायाया र्शेग्रथायदे मुन्यक्षेत्र सुरानाय सेन हैं। । ग्राम्सूरान प्रोप्तर्न सुगासर वर्ग्यू रावे वा निवार्श्वर रहा मिर्ग्यू । सिर्ग्य वे स्था श्रे के स्था के राये र्टा देवे.ये.ब्रे.स्.लुट्रा विष्ठेश.स.ये.सवास.इसश.ग्रेट्रा विश्वस.स.स. केत्रसं या गार्ने ग्राया वर्षे राखे देश अववाय वे देश । यही या द्यार से क्षेत्र यहे वि।

श्रामान्त्रनार्भा आश्चेत्रायि। वित्रायः यहान्त्रात् अर्थेन्त्री वित्रयः यहान्त्रात् व्याप्त्रीत् । वित्रयः यहान्त्रात् व्याप्त्रीत् । वित्रयः यहान्त्रात् वित्रयः यहान्त्रात् । वित्रयः यहान्त्रात् । वित्रयः यहान्त्रयः यहान्त्रयः वित्रयः यहान्त्रयः यहान्त्रयः यहान्त्रयः यहान्त्रयः वित्रयः यहान्त्रयः वित्रयः यहान्त्रयः यहान्त्रयः वित्रयः यहान्त्रयः यहान्यः यहान्त्रयः यहान्ययः यहा

वर्षासूरानानेवे अळव के नामाने वो ने हीं रामान वर्षे नामान वर्षा करा वर्जुर-व-५८। क्षेर-वर्दर-व-व-र्शिवाका-ध-ख्रुका-ग्री-वर्जुर-व-वर्दि । निने निन्दर्भ में विद्राह्म विद्राह्म निन्द्र विद्राहम निन्द्र विद्र विद्राहम निन्द्र विद्र विद्राहम निन्द्र विद्र वि व। वस्रशंखन्याप्तवःसर्वेन्यत्वस्यात्तेः व्याप्येन् हे व। वने वर्वेन्यत्वेन्यः त्रा रेगास्ययां की भ्रीरात्रा वात्र भ्रीतायां या वित्र वा षायवायवे श्रवाची भ्री साम्माने वायवे स्वाप्त क्षेत्र वा स्वाप्त वा स्वाप्त वा स्वाप्त वा स्वाप्त वा स्वाप्त वा द्याख्यद्यो वर्त्राञ्चया सरविद्याराय हो त्रया से दार्दे । इस या या दायी स वर्चेव व खूर्या सर वर्गुर वे व रगर में वार्य स्था सूर व वर्गुर सी। द्धयासेन पेन होन रसा ही शासूर ना ने सेन में । ने मा मा हे प्रान्त शासे ना न्या विटा तुर्याया श्रीवाशायशाधित श्री खर्यायशास्त्र । स्वर वै । वार यः रेवा प्रश्नः भे व । यव यवा वी क्षारा विवे प्रवर वे । वार मैशरेमाराशकोता रदामावदाशीयान्याराय्यवतिमामीश्रासा वदाशीर्येषा ग्रीयाग्रहारेगामयार्थे। भ्रिटेयाहे स्यान्याय नेता येयया उदार् नम् नी नदे सुरा ग्री त्यवा न ता राजा र्रो वारा प्रसारी । दे प्या प्या ने दे स्मा वी । इस्रायम्यावस्यविष्याद्वस्य स्थान्यस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त नित्रात्र अने द्वें अपिति निया मुद्दर्भ प्रति द्वे मा

 यदे मार्य अभूनय भी निर्ने निर्दे ही निर्मा देश मार्स ही हा निर्मा शुर्थ ही । व्यावदे वरे वरे का कुस्र श्रा ही हा वा न्या ग्राहा से हा पर व हाया वर्षा है या वर्षा द्यूट व प्यट द्वो १२ तुव भ्रूवा अर्दे । सूत्र अ सु अ से द अ म सु ह व द वो १२ तुव ख्याः अद्या । याहे सः यः या सुसः यसा ५८ : सें दः क्षू ५ : से । दे : सः वयाः हु। हुः यः वर्षे नवे न्वाया श्री नावया भ्रावया सुराय्या या निरायी या सिवा ना निराया षि.च.दग्रेय.तपु.चे.च.इ.चायायर.याचयायक्षेट.लुय.तयाञ्चेयारपूर्व । वि. नःवर्द्धेदःचवेःनस्रसःचस्यान्। दनःकुःन्। रनःकुःन्। रनःकुःन्। द्यूर्यायाने त्रास्त्रीत्राधेत्राधेत्राधेत्रास्त्रास्त्रीया विसासित्यामेत्राया नर्भेर्द्राच्यात्वाचावित्रवायम्बर्ध्याचात्रेत्र्या । यत्रवाची द्रयायाय्या मुंग्रायावयर्रेन्यारायास्ट्रार्यायायर मुंगर्ये । द्वेते मुंद्रायया निर्म्या यदे द्विनामा सु प्यत त्यना नी द्वारा ना हिंदा यमा द्वित त प्यत ह्विया प्राप्त वि यत्वापी क्रामा हे से प्राया के स्वाप्ता के सम्प्राय के प्राया के स्वाप्ता के स्वापत के स्वाप्ता के स् वे विष्यास्त्रस्य स्टेशस्य हिंदा विषय दे विषय है है त्या विषय है । धिर्ग्रेशर्रेवर्ग्यकेर्यायापरः श्रेंशरीवें । तियः श्रुवशःशुर्वेद्शायः वर्चेवन्तर्णरःश्वेंबार्येवे । कवाबार्यये बेबब्धरान्त्र्वरायं हेन्तराप्रवायाः मी इसारा मान्या नदे के ८ ५ एषत त्यमा मी इसारा ता त्यमा सार्श्रेम रामी रा रेगामने पर्वेत्रये श्रें रामसे स्वाम सेताम श्रें सामित्।

पश्चित्रायकेश्वत् श्चर् हो क्वाश्वर्शेश्वराध्याक्षेत्राय स्थान स्

गहिश्रासालु नवे अन्यान्य स्वाद्य न्या ने स्वाद्य न्या स्

विद्येत्र सदि निवालक स्थान स्

यश्रिसारायर्त्याचेराग्रीः स्नेनसारस्यायच्चरानायातिस्य प्यताया गी'सळव'हेर'ररा शेवानर्दे । र्रा सेर'ही सूर'हसावहेर'र्। ही र्रेवा शेश्रश्राह्म देवे द्वाराया ने विष्ट्रमाय स्वाय श्राह्म विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय विश्वाय नक्ष्र्वारादी इसायरानक्ष्रिं सायादा इसायरान्द्रम् स्यायरा नस्यायार्थे वास्यान्द्रा इसायराविवासायाद्रा गेटारुसाद्वाप्ट्रा यर्गे द्रा इत्तर्रा स्राप्तार्या स्र्युयावित्रर्भे स्राप्ता र्टा क्रियर्टा बटर्टा गहेर्यायार्टा स्थित्यक्षेयर्टा यग्यायः ५८। अगायप्रता ५४८ यप्ताप्ता ५४८ यदे वर्ष्य मेर्पा नक्ष:न्दा मदःयःन्दा श्रेन्यःन्वान्दा श्रेन्यदेवस्त्रःन्द्रः विःवःदिवेदावः न्रेशमिवर्षे । महिरारासेयानायामसुरायसा मविदेरसेयानदी स्था र्रें दी युन्नन्द्रा हीरायन्द्रा देखार्स्यान्द्रा स्थायद्रास्यायवान्द्रा वि'न्राविद्य'न्रा स्रव'वर'क्र्यं अंदर्भ हवे'न्रा विदे ग्रेशेन'न्रा गुर्भ'र'न्रा नुअनुन्दा नुअन्तरे नरन्दा नुअनुअन्दा केला बद्यान्दा हैं न ५८। भूरःत्यापरा भूरःत्याग्रीःवरः५८। भूरंगहवः५८। अदेः५्यानुः

न्ना हु पर्चे व व र्श्वेय से दें।

यानी द्रमान्या ममायहें दाना हमाय मानी द्रमान मिल्या मिल्य

मशुश्रामाश्चर से नृत्ती नृत्तुर नित्ते में से स्वाप्त मिन स्वाप्त स्व

### नेवा परे भुवा आ

न्द्रस्यामहेशयथा न्द्रश्रित्री नक्ष्मायदे मिले पद्रीया ध्रमायदे होत्रयार्थिके सुत्र सेत्रित् धिकाते। सुत्र सेत्रया महेकाक्या यहूर मी दे सेत्र धरक्षे वर्षुर वर्षे ध्रेरर्भे । प्रवेद धर्म तुर् से प्रद्वा धर्म । न्या वर्रोटानवे सूटा हो दाना है या ही हो दार में प्यटा सुदा से दार पित हैं। १३वा <u> चेद्रायायदाचेद्रायाचे तुद्रायेदायेदाचे । देवायदे भ्रेयायावदाचेवाया</u> शुः सेन् प्रदे तुन् सेन् प्रदः सून हेना यस न् प्रते प्रदे सून होन् या यम होन यसिने नुन्सेन्ने । नक्षमः यदे याने विदेवे देवा सायविषा स्वाना स्वाना स्वाना स्वाना स्वाना स्वाना स्वाना स्वाना नभ्रेत्रानग्राम्यम्यार्थायते न्वो त्त्त्राञ्चनायानिर्धार्थात्यायम् वेत्रायाय न्द्रासेन्द्रिन्द्रि । विस्यास्य स्वाधित्या द्वाप्य साम्यास्य स्वाधित्य स्व यदे सुर हो र त्यापर हो र पार्थ सुर से र हे र है। । हि साम से त्या के सा से त

यते म्बून्या मिन्न स्थान स्था

निहे नुः र्ले न्वान्वाना नुः से हिं वाका या वाववान स्थान स्

नियासम् नुर्दे । अळव्याहियामानु से दारी अळव्यान्या के या इया माने ॡॱतुॱहे८ॱयॱतेॱतु८ॱसे८ॱय·तहेत्रपितेॱॡ८ तः हेँग्रयः सर्नेतुर्ते छै। सळतः ठेगा-विश्वासितः सळवादिवासे नाति। । ने निविद्यान् सळवायि स्थाना से स्थानित यक्षत्रः न्याके न इसामाने ख़ातु हिनाया वे यक्षत्र हेना वे सातुन सेना ही। सळवर्देवरमेट्टी । सळवरमहिशरमंदेरसळवरम्हिगरवेशसेंदेरसळवर्देर विस्रशः भैंग्रारा भी स्नान्य विदेश से मानवि से साम कि स ने निर्ध्य के पानु न से निर्ध्य सम्बद्ध निर्ध्य के सम्बद्ध सम् ।गिर्देशमानुन्थेन्। हेन्यमें इस्राम् है। सक्ष्यक्षिन्दे न्द्रासेन्। हेन्यमें विशःश्चरात्र्त्रभेद्रात्रम्भारात्र्व्यात्र्र्त्रभ्यात्र् नक्ष्रन मदे नावे पदे दे देना स दिवा केंग नक्षेत्र नग्रा कें रा क्षेत्र म वाशुस्रायाध्ययातुन्सेनाने। येवासामाञ्चरायानवो वान्ना हेसामाञ्चराया भे द्रमे न द्रमामी देव ग्राव ने अपने अनु र्षे द्रप्त दे प्यव व्यम प्येव हैं। गशुसारी दे त्यसाम्बदान त्वारी त्या पुता दे त्य विमाना न से दान राजा निय नक्षेत्र प्रवेश्व मुः पेर्ट प्राय्य शान्त्र प्रात्ते क्षेत्र स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स है। ग्राटायाद्यो प्रत्ताञ्चया स्यास्य स्यादे प्राचित्र । ग्राटायाञ्चे सार्थे <u> ५८.क्षेट.वीट.२.५कीट.य.५५०.वीच.श्री ।श्र.२८.सुव.२०८.सू.वीट.</u> यद्रा वेद्राया वुर्वे व्या विद्राया के विद्राया विद्राय विद र्सेदे-८ यट. स्. यट. लट. सेट. ल. पि. श्रु. स्याया श्रु या यह ह्या या दुट. वट.

नक्षेत्र'म'स'तेर सिंप्ता क्षुयाम सिंभेस साउत्तु प्रमार माया प्रमाय सिंभे से समाउत्तु प्रमाय सिंभे सिं

गुरुषान्यः भूगायः प्राम्यः मुरुषान्यः मुरुषान्यः मुरुषान्यः प्राम्यः प्रमान्यः प्रमान्यः प्रमान्यः प्रमान्यः प विवाक्षिमान्द्रा नश्चेत्रानग्रमानश्चारामाश्चर्यात्रान्ते व्याप्यास्त्रे राष्ट्र <u>षदःस्र मुः सेदः सःददः वर्द्दो । देश्य माया हे मासुसारी दे द्वामी खुराया</u> नदे न कुस्र श्रास्त्रीं दान स्त्रा निष्ट्र न स्त्रा मान्य क्षा क्षा न दा स्वर स <u> नयःविरःशुरुःभवेःश्रेश्रश्राश्रश्यक्षत्रःहेनःन्ररःथृतःभवेःखुश्यःयःनेषाःभः</u> र्शेम् शास्त्र स्वाप्त यामहिषा श्रेन्द्रित्राच्या मल्द्राच्द्रित्राच्ची । प्राचानि ध्यासहनः धेर-र्-वार-ववान्वस्याया हैत-सेर्यायन्त्रिन-स्वाय-ग्रीय-ग्राव-त्रय नक्षुरशाही हेशायासुशासी सेवायान मानी सामुशायान हेता दशा नक्ष्मन्यायदे नडमार्स्य । क्रुं मळ्या रहाहे दाहें दार्से दार्य स्वयाया हुं। नन्ता सम्मान्द्रसेति क्रिं र त्युर्या पान्द्रा पान्द्रसान्द्रा स्रोत्र से स्र ग्रीसानक्षेत्रापितः सुरानाम्यसाग्री कुष्यक्षत् त्रुत् सेरानाधिताया विदायर इट वर र्षेट्र य इस्या है रूट रूट मी अन्य शुः हैं व है।

 व्यास्यास्त्रिः चराधेवासर्वे।

नश्चान्यामिक्ष्यात्रश्चा । त्रुः विश्वान्या गुतः श्चित्रः सेवाः यात्रः यहः विश्वान्याः व्यव्यान्याः विश्वान्याः विश्वान्यः विश्वान्यः

गल्र देव या ग्रुस यस्। दर से प्यव यमा मी सक्व हे द से। मर इश्वान नेवा सदे प्रवो पर्व भ्रवा सर प्रकृर वे वा प्रवो र्से र वी शाद्र र से प ग्री खुर्या ग्री रेवा या वदवा वी राह्ये दावा स्वरास्त्र वित्रास्त्र भूवर्या खुरुने निर्वे वर्ष है वर्ष निर्वे प्रकार के निर्वे वर्ष कर ने वर्ष के निर्वे वर्ष विदेश वशुरार्से । भ्रुन्ते खुर्या शुन्द्रवरार्से द्रदासी खूर्या स्था देवा या खुर्या सरसे वशुररम् असूस पदे देवा सामानसया नदे हिरादि हु साहे। देखा वर्देन कवाराख्या पर हो नवे ही र दें। इस ते गा हा वार नवा वास वेरा हा याषरादर्भिगाविराङ्कानादे प्राचि सुरानाम्बेरायायमान्यस्त्रायाङ्क्रीया राद्रायवायाया व्यायश्याराष्ट्रायार्थेवार्यायार्थेस्यार्थेर्या मशन्दिशमिविराधी सुरादे विशन्ता वि. तेमा हायार ने सूर वेरादे । यम् तु ने नि त्ये या न त्यम् तु ते प्यम् त्यम् तु तु र स्ते भून साय सँ मारा स यः रेगान प्यरः दर्देशः गविदे । तुर् सेर् ग्रे खुश्यः यः दर से य्वन हेगाः श्रे रः

नवे के सामान्ता या प्रान्ताया मुन्ते के सामान्ता स्वरास्त्र माने र्श्वेन्यन्ता यमायार्श्वायायायहेवायान्ता ध्रयात्रमा देतार्थान्त्रेवा यन्ता वर्षाके न त्रापित्य पुर्वा तुर्वे स्वति प्यान्ता वर्षे त्रा सुरवहेत यन्ता देवान्य श्रेटर् पर्हेवा हेट विद्युत्य प्रान्टर् क्षेट्र वय देवा हु स्वय हेट विद्युत्र नन्दा अवदन्त्रान् क्रें रान इस्रायायाय सार्वे ना हो न्या से दार्शे ना धरः ग्रु:वः ग्रुद्रः सेद्रः सेवासः ग्रीसः हेवाः सेवासः ग्रुसः धः वद्वाः वीरः ग्रेदः वःलरः ग्रे.चयाः अरे.र्रे विश्वः श्रेशः यरः रं.क्रेरः सदः यरः अरे. व्यः श्रेयायः यदे सुराया नेवा पाया है किवारा देवा सम्बन्धिन है। विस्था पार्सेवारा यसा <u>वःश्चन्यायःश्वें अर्थे श्वें वा श्वास्य स्वास्य प्रवासियः हे शान्याये वा श्वनः</u> यम्बे हेश तुरायराम्बद्धिय पाहेरा तुरा स्वीम मे । पहिराय नक्ष्मन ग्रुकी नमसम्बद्धिकारासे दार्गिन स्वत्या स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य तुन्सेन्याधन्तेषायम्से नुर्वे । न्ये क्वेन्सन्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्स अप्यन्यार्थेन्। देव्याप्यान्योप्यन्वानीः वित्यास्यानियायायायायायाः हेशना से दात हो त्या देवा ना या हेशना से दाद सहसा सहसा दे हैं वा सामा समा नदे भ्रेर वें न्या श्र श्रें श्रें श्रें । तुर सेर व्य रे न पर से मुदे ले श पदे

 नदे हिर हे अन्यस्य नदे हेट रुष्त त्र न हुण विषा में विष्तुन हुन विषा यदेःतुन्सेन्ने हिसायायानह्रुवायदे विद्यानश्रुम् खुयाहे सूमानस्रुवाया निवर्त्रात्रेम् स्वित्रायाचेत्रा हु। द्रात्री यया ग्रात्र होत् दे त्या पर शेशशान्ति। सदिः श्चेष्ट्र स्वर्धानश्चरान्य निर्मेश्चेरा वशामी प्रसायान्य वरायमें वर्षे स्थान वर्षायमें वर्षे स्त्र से निर्मायम् धुग्रशहे द्या या पात्र दे । बदाय वर्षे वर होते । द्यो क्षेर देश वर्षेया वरे <u> ५८.लट.२.च्या.तर.घेट्या विश्वाराः क्षटाया राष्ट्री रचीः क्षेट्राया स्वार</u> यद्यो येग्राया श्री त्रयया यद्दा थ्रव यया यद्या यो या यहिद स्यूर्या दर वज्ञवार्वे सूर्यायवे सूरावहे वसातुर सेरावावहुर यावाहे सामासेर है। लर.य.येर.श्रेर.श्रेश्वराट्या.तश्राट्या.श्रॅर.ज.यं.ज्य.श्र्याया.तर्.ज्रं. શ્રૈયાવહુ<u>ન માત્રાખદ કેયામાએન મેં પ્ર</u>ાયુયા શે મેવામલે નવો વન્તુ તાલુવા સા इस्रायरायवीरायदे भ्रम्यस्य स्थायवीरायद्वी।

महिश्रामात्वु निर्देश्चनश्चरात्वु हानावे । यद्येषा मान्नाव्य स्वरे में अहा निर्देश मान्य स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं निर्देश मान्य स्वरं स्वरं स्वरं निर्देश मान्य स्वरं स्

गशुस्रायादन्याचेन्।ग्रीःभूनसाद्यापनुदानादे। वसान्दासान्दा वेट च ता श्री वा श्री या स्थित प्रवासी स्था स्थित । मार सा प्राप्त स्था । य:दर:हेत:वेवाय:य:र्यवाय:यय:तुर:येद:य:दसुय:द:हेय:तुर्य:र्ये। । तुन्सेन्नेदेश्रुद्रायातुन्सेन्पिन्न्सासेन्गुन्तुन्म्नायासेन्सा नयावस्यादादेयान्याया । इतायार्थेवायायरावरेरायरावसेयावरे नुन्सेन्रम्भी अञ्चरन् अञ्चलित्रन्नो क्षेत्रं मी अक्षेत्र त है अनु अक्षेत्र नुन्सेन् ग्रीसन्नो र्सून्याम्य प्राचीस ग्रीस वस्या नन्ता सून्या वस्यान निष्य वहेन सम्वर्षेयान श्चिम्न निष्य स्वर्धित स्वर्या स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व बेन्ने। ।न्ने क्रॅन्बे पर्नेन्न विवन्न् नुन् बेन् ग्रीकान बुन्न प्राप्य प्रमा नः सेन्द्री । नगेः श्रॅनः से प्वर्नेनः नविवः नः स्थापष्ट्रनः स्थापारः से स्थानः बेद्रव्यूद्रप्राचेद्र्द्र्या । स्टर्मी स्टर्म्य स्तु मृत्य स्याप्य स्थूद्रप्राचेद्र र्ने । तुन् सेन पहुषाया सन्दिन सेन सेन सम्मिन सेन तुन्य हो । वाष्पराञ्चरावाको । शुकाग्री नेवायावर्वा ग्री । शुकाग्री नेवा धर:द्यो:दर्द्द्द्वः ख्र्या:अर्देश्या

#### दविया केंगा श्चापति ख्या आ

यक्ष्रिश्वास्थान्यते । श्चित्ताः स्वास्थान्यते । श्चित्ताः श्चित्तः श्चित्तः श्चित्तः श्चितः श्चितः श्चित्तः श्चितः श

विश्वभागते वात्त्र व्याप्त विश्वभागते व्याप्त विश्वभागते व्याप्त विश्वभागते व्याप्त विश्वभागते विश

र्भे । क्रु.व.श्रूपश्चर्यक्षेत्राचार्हेन्यसेन्यस्यविषायन्। न्यत्वेवायदेः देवासितः स्रीतिया स्रीयाया राष्ट्रिया याची स्रीत्राया स्रीताया स्रीताया स्रीताया स्रीताया स्रीताया स्रीताया स् श्रुदे सदि र्से नश्रुस रे निवादे येवाश सर रे निया वेवाश सर वादश सः येग्रथान्य मुन्यान्य विकायस्य वारान्त दे वारान्य स्वारा मञ्जेनमन्त्र शुःद्धरःर्विषाने न्दरने हुदे वेशम्बर्धयान न्दा न्यायन हे नर नश्चन पवे वर्त्रपान हो दाये हे नर गरें वा न दा हो सामानर तुन् सेन् ग्वर त्याने प्रमाने होन् याने हो ने वि प्रवाय वान्य कीन् न् विस्त्र वर वशुर्वार्वि वेशाग्रहाशुषाने नहाने ग्रुश्व शुष्टि वेषा नवाय नहा धीन र्'द्राचरत्वीरारमाष्ट्रियारहारा श्रीतास्त्रीयाश्रीयार्थायायारा र्देन्यायार्श्ववायायायदेवावयावेयार्षेद्यासुख्दे वाद्या सुर्वि रेवे हिन यान्यायान्यान्याची हिन्ने त्या हिन्ने स्थाने नर्हेन्यन्ता शुर्विर्नेष्वस्त्रिमार्छिन्न्यः भ्रमानेपन्ने छेन्। वशुरानेशार्श्वरायादमा हिंदायार्वेम् तुर्वादे होदायर शुरा हेंदा हिंदा ही देरःसमायः र्सः दमा कुमा केमा केस माने न न दर्। तुर्सेर ग्रीस न स्मासः यन्दर्वश्रवाश्वर्यश्चेत्रस्थेवाश्वर्वाः श्चेद्रस्थान हेन्। द्वीः श्चेद्रस्वीशः ने हेन भ्रिम् क्षुप्त नक्षुत्र यान्याय है क्षुम्य या धेत सम्बोध वा प्रेम हो । ध्याद्वराष्ट्र के के दे हो हो ह्या हिया या गुव है गा हे राया में रायर के दे न्नरार्धात्याचेरान्यान्नुयायदे न्नो श्लूरानीयानो यायरार्ने वानाववा छः र्बेट्-यान्यस्थराय्यार्थेट्याग्री:देशायदे:क्षेत्रागी:द्वरागीशागुद्व:देगा न्यायः विष्याः विष्याः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विषयः वि

महिम्तिः श्रीनाः प्रवत्ते स्वार्थः विष्ठाः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्व

गशुस्रायादिया हो न्वसायहुम्य हो हिंन् हे सहस्याया वह ने लेस स्वाया स्वाया हो ने स्वसाय स्वया हो ने स्वया स्वया स्वया हो ने स्वया स्वया स्वया हो ने स्वया स्वया स्वया हो स्वया स्वया

ह्मरामान्या तुर्धेर्धीराम्यायाह्मरामा हिर्डियान्यायाह्मरामा ह्मरामा हिन्दि निवायन हिन्दि निवास के साहिस निवामी सामन्वाया ह्यू सा मया हिन्दे यान्वाय बेरावाय सुहिन्य वित्रं नवित्वे संसुरा सुरा रेदि । शुः विः वे त्यः कुः न्दः वरुषः व न्दः शुनाः यः न्दः व व वि नः हिन्देन्याधिवर्ते विश्वसूर्यायन्यायः स्र्रेयार्येषे । तुन्सेन्हिन्यार्वेनः नु-न्यायियानि ने ने निर्मास्य मारे या है य वर्धेवायापान्यासूरावाने वार्षितावर्षेत्रसूर्ययार्धेतात्यावेयाचेरावायारा र्झें अस्ति । विन्शी ने अयाय न्या क्या क्या क्या क्या स्वा अया स्वा । न्यो र्श्वेदःस्यानहग्रस्य स्टर्निव विव श्री सःग्वस्य स्वर्धेव श्री केंगान हें दिस्य स র্বামমানমান্ত্রান্মার্মানাবারমানের ঐর শ্রীক্টিবার্নিমার্যান্ত্রমার অন্ ब्रॅंबर्सर्दे । व्यूना सन्देश सुर से भे न ने ग्रुवर हर वर्षे र कन सर से न स्वी ब्रेम नायाने क्याया येयया ग्रीया श्रूया या स्वाप्त में विश्विना या न्राष्ट्रवाराञ्चानायन्त्राचे । यहिनायान्यान्याञ्चानवेयन्। वर्वःस्वाःसर्वा

# नक्षेत्र नगुर नक्ष्मार्य परे ख्रमा आ

महिरापानक्षेत्रपाम्यम्यारायामहिरायया है दिन्दा

हेशसन्दरगुवः र्ह्यान स्रेव नग्र ने शसून ग्वन में दान विव हैं। किंगार्ने दाया पहिशायशा यदायमामी अळदाहिन दी मान हुशादा नश्चेदा बेर-र्देव-ग्राव-नेब-मदेन अञ्चलिर-मन्या नश्चेव-नग्र-नश्याब-मर्देव-नरे नःक्षश्रःशुःश्चेदःनरःग्चःनदेःवर्तनःयःग्वःकःवर्देदःळणशःददःख्वःपशः नन्गिकिन्द्रान्त्विमार्यागुन्तुः क्रिन्यानस्मार्यास्त्रे दास्यविद्रोते क्रिन् द्धयाविस्रयाद्वास्यायादविषायिते के साम्रीयात्रस्रेतायग्रम् ग्रुयादादे वि नश्चेत्रनग्राम् इस्राराण्ची सर्वेषानी विश्वाम हिन्दा भूगासमाद्याम हिन् बेदर्ने अर्वश्वाअर्थर्थाशुर्दे विविद्धे विवाहे अशुर्धे रदर्वि देवर्धी क्षेत्रान्ते निर्वान्ते द्राष्ट्री अ निस्वा अ स दे दिर वह नि अ दिन होता अर वश्चरःर्रे । तुर्धरश्चेशःश्चर्याराने हेर्रान्गे श्चेराग्नेशाधेरान्नुर्यादाणरा नस्मार्यायायीत्रति । विद्यमारान्द्रसुरायान्याकेदाद्राकेत्रायासुराना न्नो र्श्वेन त्यायिन प्रश्रम्भेन न्या मान्या निर्मेन न्या मान्या निर्मेन निर्म निर्मेन निर्मेन निर्मेन निर्मेन निर्मेन निर्मेन निर्मेन निर्मेन सकेंगार्गे विश्वाचेरतार्श्वेरायां हैरायां हैरायां विश्वास्त्रीया याद्रासाञ्चरावादाष्ट्रात्रेते द्वी से दास्या विस्राद्या स्वराया वस्ने व नग्रान्युरान्द्रित्रे निश्चेत्र नग्रान्य स्थरा ग्री सर्वे वा वी विश्वा ने न्या स्था र्वेद्। । नन्नान्दरविषान्यक्षेत्रामान्दरस्यक्षुर्नन्ने ह्यूराद्वेयक्षित्रस् ८८.र्षेत्र.स.स.य.यश्रेय.यग्र.चिश्व.य.ट्र.स्रेय.यग्र.स्थश.ग्री.सक्र्या.ग्री. वेशनिर्दिन्दिने श्रेन्यने देशे में न्या धेवायया हेश त्या विश्वेत

#### नगुरः नश्नाशः पदे द्वो त्र्व श्वा अदि।

# गहेत् हो ५ मदे खूगा आ

गहेशमणवित्रवर्देनमण्यस्त्रेत्रमण्यस्य मुरा वर्रेन्थे अन्यव्यव्याद्यात्र वार्ष्य मुद्रेश हैं देव दर्ग गल्दरेन दे। दर र्राया ग्लेट माने। ध्रयासक्र र्टिट न्याट बना हुना से स के रहें त से दर्शन वर्देर्क्षण्या श्रीयागुवावया वर्ष्वरया है। हैयाया श्रुवा ग्रुयायाया वहेवावया नक्ष्मनः पर्दे नडमः भी । कुः मळ्व नममान्त्रः प्रतः स्वानि परः वार्वे प्रा न्रावित्रः अन्त्रः पर्दे । यत्रः ययाः यः चित्रः या वित्या श्रुतः चः वे सक्तः ग्री-र्नेव-ग्रेन-त्र्यामा मस्त्रन-निव-नि-स्वनमा ख्यानक्षेत-नु-स्ना थे सबुव पर मावसाय। नन्या हेन त्यस कुन व न हिन व न हिन व न नि नन्गार्भे सुन्तुः क्षुन् होन् नने गहिषात्रः सून् सुन् सून् सून् सून् भून मदेर्न्न, शुन् नुरक्षे अश्वन मा अश्वन मन न श्वन मदेर श्वेन विश्वेन स् नःगश्रुमः होत्रपरः पर्देत्रपर्दे । श्रुरः नः रहः हमानश्रूमः प्रभावश्रेमः गश्रमः होन् पर्दे । सबर ह्या ने यहिक ही न होन होन होन होन होन

याब्दःर्देवःयः निवाः याक्ष्याः याक्ष्यः याक्ष्यः विश्वः याक्ष्यः विश्वः याक्ष्यः याक्यः याक्ष्यः याक्यः याक्ष्यः याक्ष्यः याक्ष्

म्यान्त्र स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान

हे निर्मारमा महिरासहसर् प्रस्ति नर नम् निरम्म माहिरास हिद्यत्यातुः र्वे अक्वे नर्व्यक्त्रार्वा नियानी यान्त्वा स्वा निविदात्याया ननःभःन्याःषःकुरःनुवसःसरःसँ । धरःनुरःनवेःश्चेतःभःन्याःश्चेतःवेरः नर्भेन्द्रस्थान्याः नश्ची स्वस्य प्रदे ने यदि स्याप्त स्तु सुरा स्वर्ते स्वर्ते विद्र हे अरशु वर्त्ते नर शुरु ठेवा ठे अ शेर वी र्षे व न वर पर वशुर वेर व अ नश्चरःनर्दे । नर्वःमःनेवेःर्यःशुःग्रयःनेरःधुरःर्वयःमरःशुरःवयःनश्चरः नर्दे। । सहयत्र से ते न इ प्येत है। या सा से ट से सु तु सें। सुना से सा है रू रैग्राय: ५८ दी। १५ यः कग्रय: श्रीय: यशुर्य: इय: वश्चिम: ये ५। १५ ५ वो: र्सेटः यन्त्रगुत्रातुः कुः स्राया स्राया स्राया । श्रून्य स्राया । श्रुन्य स्राया । श्रुन्य स्राया । श्रुन्य स्राया । वर्षेत्र अर्दे या यया ग्वत् तु से प्रमुत् ने प्या ह्वेत्या या ने में निम् तु या भेता गरायार्गे नरामुकारारेकाङ्ककारावे विद्येतायतारे ख्राका गरायावद्येता सर्वेशमने वार्में द्वारा है नार्वेश स्वत्य द्वार वो वर्त्व स्वा सर वर्षे रही। दें त पदीत मासारे वितासात रे ता ता ने त वह्यानायरायावधेवायवाहे। देवधेवायर्वेशानाद्वावधेवाद्धराभ्रोयावा गिहेशाग्री नराग्री प्रदेशां भी वार्य स्वरिष्टी राजरासदी । जरासारे विष्टु प्रदूर व्रेव : धर : द्रेव : क्षेर : स्र : क्षेर : क्ष न्या ग्विर प्रश्राग्रद में श्राय है दाय स्थाय में दाय दे ग्रुश य है दारी गहेशमण्यम् विवासम्बार्थित्र विवासम्बाद्धाः विवासम्य र्वे निर्मान्त्र विश्वेष्ठ विश्वेष्य विश्वेष्ठ विश्वेष्य

नः सूर्यने अप्तर्भाति है। रेरेश ग्रम् क्रिंत्र मार्गे म्या स्वरेष्ट्रेयाया ब्रॅंस'र्स'रे-भ्रेन्'यर होन'र्ने । सरयात्र नात्र या पर पात्र वा सार् र हे सु ना सुस गर्हेर-व-८८। कें मानहर-विधिक्षे हैर-य-विधे के शुं र-व-हेर्-व-रेश न्रेंशजिदे नेन्यां भेरा केता पर विद्येष्ठ ने न्या क्षेत्र न्या केता प्रशासिक स्थान वशुरार्से ।विश्वेषाग्चेरायार्सार्सार्सार्सार्मार्स्सार्मात्र्याः न्रेंशम्बिदे गुन्म हैंग्रायम् सेन्य सेन्त्र सेन्त्र ने न्त्रामी प्रवयानु स्र गडिगामकिन्युनमदेखिम्भे । नेसन्नेन्यायकेसानुसन्स्यार्थे ५८.२मे.७२४.क्रेया.स.ल८.घ.२२.स२.५व्यूट.ट्र. । श्रुव.व्येट.सद्र.स्रेयसः वर्देर्स्यत्वायायाद्रायायायायाये यद्यायायायाया ग्राट्सुत् ग्रुयायाये स्टा वीयानुयायान्दावन्ति । श्चन्नानुरानियानुयानियायायार्यायार्यायायाया न्नाने सुन्यर ग्रुप्त हेन्द्र यहा स्रो यने नर्से नद्र नर्सेन्य या न्या र्रे प्रेत्या सर्वे श्रेतः प्रम्प्त्रिया प्रायाय प्रम्या में हिन् प्रेत्र स्रेतः श्रेत्र प्रम्या स याने नियात्यान्यो र्श्वेन्यो याद्रीय सर्वे यासान्ता ग्रायात्या स्वन्यात्रायाः र्वे निर्म्यायान्य विष्ट्रम्पे । दे निष्ठे य ग्री नद्या में से दाया विद्याय विद्या ग्री क्रें र र ग्रम र दे हे य ग्रम कें विका कि न कि न विका कें ता कि न विका के न विका के न विका के न विका के न श्चिरःधेनान्दरःयनाःधेनान्दर। श्चेत्रःश्चेत्रास्यःस्वार्यःश्चित्रसः ८८। कृष्ट्रे.वाश्चायायदे यह ८८। व्यायाय स्ट्रिस्य व्यायाय स्ट्रिस्य व्यायाय स्ट्रिस्य व्यायाय स्ट्रिस्य व्यायाय 

क्षेत्राचीशः ग्रुशः राष्ट्रः यदः रेतः ग्रुवः वः दर्देशः ग्रिवः वशुरः दे।। गशुस्रामास्री सम्बद्धाने सक्ता है नित्री सून पक्षाना सामित्री स्रोता स्र वस्रभः उत्। द्रदः सञ्ज्ञ । सरः ज्ञानाश्राः स्रायः देवे। धुवाः वावश्रेव देवे द्रायः स्रीनाशः त्रुशःग्रद्धः अत्रुद्धः अत्रुद्दिः अत्रुद्धः अत्रुदः अत्रुद्धः अत्रुद्धः अत्रुद्धः अत्रुद्धः अत्रुद्धः अत्रुद्धः अत् सर्भे वर्षुर रस्य स्रुस्ता स्रुर वर्षेट स्याने बर वर्षा वर्षित स्थित <u>षरःश्रेः समुद्रः पष्टिरः पेदः स्यानेदेः पुष्यः यः दम्रेदः देनः संयायः गुर्याद्यः ।</u> र्देवः युवः वः दर्देशः वाविरः वयुरः र्दे । भ्रुशः धः वदवाः र्धेः श्रेवः धशः युदः श्रेदः याहेशार्से नायमानियासम्बन्धनानियाससम्बन्धानियासाम्यास्य सन्त्रायाधेत्रायशादे त्यावद्येत्रावस्त्रायात्रायशात्र्यात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्राया यविद्री । शूरः सत्रुवः सरः शूरः ग्राटः हुवः सेरः श्रुः वः यः श्रेवाशः सशः यत्रवशः यक्तिन्त्रस्त्रुत्रयक्षस्य प्रमेत्रः भेत्रः भेत्रः स्रान्तः स्रुत्रः स्रुत्रः स्रुत्रः स्रुत्रः स्रुत्रः स्रु न्रेंशमिवरावश्रूरार्रे । मियाने सुन् सेन्ने सुरायान्तरानाया से सामा वर्रे विं रेवि कुर अभेव वें विशायअ में के त्य रेवाश सर वश्चवाश स हेर गुर-सशुद्र-पानुस्राया-पोद-दें। । कुर-साननुद्र-में न्यस्य उन् पान्यन क्षेत्रायान्त्राचत्त्राधेनाययाने नियानी स्नायया शुः सूनाया के रावश्रूराने । वा त्वरासहेराग्रीसें रास्त्रास्यास्यास्यास्या देवा त्या त्या स्वराधिताया न्दा न्रामानेशात्रानिके निरामी ह्रामानिकान्य । व्दीमहिकाकी । वर्चेर्यानविवर्ष्यायुर्वाच्यायाहेश्यायुर्देश्यविवर्वे विश्वायप्रदा हेतुः ॻऻॶॖॺॱय़ॖॕॻऻॺॱॺख़॔ॺॺॱॶॱॻऻॸॕॖॸॱढ़ॺॱढ़ॸऀॱॻऻॶॺॱॺऀॱढ़ख़ॸॱय़ॱॸढ़ॎॏढ़ॱॸ॔ॖॱॶॱ

विश्वानिक्ष्याचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठियाचित्रं निष्ठित्रं निष्ठित् निष्ठित्रं निष्ठित्रं निष्ठित्रं निष्ठित्रं निष्ठित्रं निष्ठित्याचित्रं निष्ठित्रं निष्ठित्रं निष्ठित् नि

नवि'म'र्श्वे र'नदे'र्श्वे प्राचित्र हिस्सी हिस्सी निवास से से हिस्सी हिस्सी निवास से से से हिस्सी हिससी हिस्सी हिस्सी हिस्सी हिस्सी हिस्सी हिससी हिससी

गहिरामान्द्रा वश्चरानमान्द्रमान्द्रामान्द्रामान्द्रमान्द्रामान्द्रमान्द

गहिरास्र दराद्वा भूत श्रुत्र न हित् श्रुत्र प्रत्व न वि स्रीत न वे यो से त तर्या में लिश से त पर हो र त से सारे दि। । हिंद छी श देर त्वरा র্মিঅ:গ্রীঝর্নেরেরেরেরেরেরিল্রার্নিরেরেরেরিজ্বরিত্রেরেরেরেরেরেরের ग्रियाम् अपदर्भगानु स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त । कुरासदसानु र से र के मो से बिया हैं या लेगा हे या बेरावार्श्व या रेटिं। श्रिरा तुरा येरा है या लेगा हे या बेरावा हे या त्रुअःश्री भ्रिअः सन्दर्त्युद्रः सेद्रः त्रह्म त्रुअः सः दः द्वोः श्चिदः देदः देदः स्वरूषः क्रेन्स्र्नि हेरानेन्यापरहेरान्यार्थे । विद्वायवायमा हेरान्स्र्या र्यदेख्यापाठेमायया हुए सेना ने वे खुए मी धे मो वे राजावडा है। हेया तुर्यासुर्देवार्यायरसूर्य ह्री र्सूनर्देवरग्रीयरहेयरग्रयां वियासर्दर चुर्यार्थे । श्रुव् चेदायाल् प्रदे भूवयार्थे ।

नशुस्राचायम् छेन्। जेन्न न्याचे भूनस्य स्थाय स्

### प्रट.संदु.संग्रामा

विट.स.विट.कुर.म्री.विट.सर.को अटश.मेश.टेट.कूरा.म्री.कुट.री.

त्रभास्त्राच्छत्राध्याक्षेत्राच्या विद्यान्य विद्यान्य विद्या वि

केत्रायाञ्चापरावेशानन्त्र अरशः मुशाने द्वारामरान्यापरे ख्रापीताया इनियन्त्रवाराम्यात्र्यात्र्यात्राप्तराधेत्राप्याप्तराकेत्राधेत्राच्याः दे के अंख्या विद्यु के स्था निव्यु के स्था निव्यु के स्था के स्था के स्था निव्यु के स्था के स् यक्षेत्रामान्यात्राम्यात्राम्या वर्षेत्राम्या वर्षेत्राम्या वर्षेत्राम्या वर्षेत्राम्या वर्षेत्राम्या वर्षेत्राम्या यथा परः केव दे श्रुव परः ग्रुप्तरे के यः ग्री यः के प्रः पी स्र प्राप्ता यर नमून य भेन हो। रट में दि विट्र यर नमून य सामित से हे हैर वेश बेरा र्शेनानी खुनार ने प्यट से प्यत्र है। क्ट स्यट हु तु द्वी पर्त्त ही श्चिति के दारी मात्र अपने माद्र के वासे वा वा वि ते माराय वा दारी प्रदेश ही दिवा *क्षेत्र:*त्राब्ध्याःत्यया।पटः होत्रःयःयाद्धयाःत्यया।पटःयोः त्योः त्त्त्वःञ्चयाः यः मुश्रुद्रश्राचेते भ्रीत्र देवे श्राच १०५ । स्याप्य १०५ । विद्रा केत्रने श्रेत्रायम् ग्रुप्ति कें राशेशके या धेत्र यम् ग्रुप्त या प्रमाया वी।

याववरण्यत्। वित्राचिरक्षेत्रं वित्राचि वित्राचि वित्रं वित्राचित्रं वित्रं वित

सर्वे सूर्यर्र्य मेर मेर हिस्स्य स्व हुर म्ह स्वा मेर देव र् होर् प्रदेशम्बर्भने । पर प्राधिन त्या र्गेन् सर्वे मा मा सुसामार मी रेन् र् हैगासर हो र वयर मात्र अपने । प्रदाले व प्येव हो। इस यही र प्या । प्रदाले व वे श्वेव प्रमान्न प्रति के अप्रीय के प्राधिव प्रमान श्वास्य स्था स्था स्था । र्'लर्भरश्चिशःश्चे, केर्रं रे श्चेर्सियावश्चे । विरक्षेत्रः विरस्वेतः है। दूर हेब ज्या विराधार राष्ट्री विराधार में विश्वापर केव याञ्चावरावेशानन्त्रा अरशाक्तुशाने द्वाराम्यन्त्राधिराधिराधा नेवे नत्यायायावयाने ख्रावराधेन संवे छेरारी किया ग्री केरार् होरासवे ग्रम्भाने ख्राप्तर धेताते। यदे र गाई गायगाप्तर मी प्रोप्य ख्राखा साले सा वाशुरुरात्या सुरावी केंशान्या सुवात्यवा सेरावी द्वारा वार्या सेरावी स्थान धिरःर्रे । प्रमो प्रत्व ग्री के प्रत्य ग्री प्रदेशम् वर्ष प्रीय प्रवेशम् वर्ष वर्ष वर्ष वर्षे वर्ये वर्षे वर राञ्चनासरामहेनासदेखुरान्नेन्यमुन्याम नाह्यात्यनाम्बरानेन्यस् क्षेत्रचें लेखाम्ब्रुद्याया द्यो प्र्तृत्युं केत्रच्याम्य स्थाया वाशुस्रायसाध्वापिते सुरान्ते रामभ्रेतासर्वा वार्यस्यास्यास्या वेश बेरा गहेश रा हेर सर्धे त्य र्रेग्य रा नरु रा है। गवर ही केर र् ग्वित भी या भेरा हुन र वहुणाया नहीं या या है र र र र र से र र र र र में या हो र याद्याः भेर्त्राः भेर्त्रः न्याः वे स्थूरः न्यदे । प्याः न्याः न्याः ने स्थूरः ने

देशवान्ववर्देवर्र्ड्याण्डर्द्रशान्वेर्वर्ग्ना हुमारा द्वे श्चॅर्न्स्य अस्ति द्वर्ग्य अप्तर सद्या मुद्रमा स्वाप्ति । विर्मे स्वर्मा स ययर:रर:र्ग्याराचेर:र्:यह्मा:पवे:क्ष्रर:नवे:इस:राम्राराधेद:पवे:इस:रा ने केन न्या कर्म वियानमा नया स्या साम्ये साम से ने नाया साम से येट्टी विवर्ध्ययन्यान्स्रीयायात्रस्टायास्त्रम् र्वे क्रिंट्वेश्वक्रिंश्वर्थावर्ष्य विद्याप्त केर् क्रिंव्यश्वर्थाय क्रिंग्य वे क्रें न में मर हेर ग्रेश ग्रुश ग्रुश मन्दर प्रमान माने हैं स्वापित सामें नरत्युरर्से । वस्र ४ उद्दुरद्दात्य लेखा हे सूद्र नर्से न न लेब से होद रायाक्षेत्राक्षे नश्रमायाक्षे ह्वाश्रायदे द्विरार्से निर्देशिया राया दे त्या दे हेश धरावगुरारी विवाग्रराष्ट्रीयारीयात्र्यात्रीयात्रीयारीयात्रीयात्रीव्याया <u>५८। दगानी अप्येगा अर्थे विश्वाही स्नूट नर्से ना नवित्र से होटा या दे दें दा या </u> ५८.२.खेव.तर.बेट.व.तर.चक्ष.चाक्षेत्रामात्यालर.चावि.ह.क्ष.चव.क्ष्रट.चर. वशुरःर्रे।।

नः श्वाद्यात्र स्त्रेत्ते स्त्रेत्र भित्र स्त्री । यावि से स्त्रात्य स्त्र या स्त्र स्त्र

चिं न्यायम्य विदानि स्ट्रिं न्याय के स्

प्यत्यवात्यावित्यम् वित्यम् वित्यावित्यम् वित्यम् वित्यम्यम् वित्यम् वित्यम् वित्यम्य

याल्टार्ट्न वायानिकायमा अर्ट्र प्रमुद्दी याटा ग्रुका द्वी प्राप्त प्रमुद्दी याटा ग्रुका वायानिका वाया

यः इसः वाद्यान्यः वाद्याः वादः वीका वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः व निवा डे रा हे रा शु वावर वि वे वि वा वावरा हो द द व हवा व ख्वा सर यग्। न् मु: क्षे: न् मु: ह्वं व्यः क्षें ग्रायः सुरः नः वर्ष्ठेवः यः वें न्रायः वारः मीर्भायद्वायान्त्रेभाष्ट्राचिरावरीत्यामीर्भाष्ट्रीयभाष्ट्रिभाष्ट्रायावरः न न उत्यान वे द्वारा ने १ दे ने श्रम् ने १ ते वित्रा ने वित्रा निविष्य र पर स्टर्स यः भूरः नरः वशुरः रसः वे व। ववि सः द्याः सः दरः। ववि द्योः वर्त्रः यः सः ठेट र्र्झे अपिर्वायायाम् न्यात्र व्याप्तर्भे र वेदायते अवर द्वी पर्व व्याप्यर वर्गुरःर्रे । पारायापार्द्धपायपापिरायी प्रयोग्दर्भ खूपा सरावर्गुरावे स् नक्ष्मारादे वादि देवा अवार्ष्या अवारावर वी द्वो तर्तु अध्या अद्वार्थ प्रार्थ दे अ महिंग्य श्री । रह ह्या मानव निमानी हैं व र न ख्या व ख्या यर वर्गम ग्रेन्न्, वर्गामात्रम् मात्रम् वर्गामात्रम् वर्गमात्रम् वर्गमात्रम् ळ्ट्राह्राभूट्राचसून्यायसासूनायराचेट्राट्राचस्त्राच्यारार्ट्या

गहित्रार्या क्रिया में अपन्ति। याविः याद्या प्राप्ति । यादिः याद्या प्राप्ति । याद्या प्राप्ति । याद्या प्राप्ति । अपन्ता प्राप्ति । अपन्ता प्राप्ति । अपन्ता प्राप्ति । अपन्ता प्राप्ति । अपन्ति । अपनति । अपन्ति । अपनति । अपन

ग्रवसाराम्बदार् पर्देसासी के सारा हो नार्या होते ग्रवसार प्रदास होता वे से रुप्त के द्वार्य कुया में द्वारा सुदे याव राष्ट्र सुरा सुर से या राष्ट्र से या राष्ट्र से या राष्ट्र से य वर्गाम्बरायानहेवामाहेर्ने भेर्ने स्थानि मान्याने के वार्यम्यान न्यान्यायीकायार्वेन्यवे धेरान्ता नेत्रार्धेवायायारुन्यराग्राचार्या नरुरायायीत है। इिमास्तर्वराष्ट्री देया वर्देया मात्राची समय है। वर्षित्र ही। वरःरेवान कुः सुरारमा रमार्गेनानमा विवासानर वर्षेमान हैन ने नहा र्अः रुर्यः प्रेम् हे मान्यारे के मुर्यं से सुर्यं सुर्यं सुर्यं माने से रुर नवस्य हैं न्यान्दानहरूषायस्य नहस्यन् से मुद्दानम् वेशाम्सुद्रापदे वस्य वार रुर वी सुर्धित सम्भास नवा सावा सुसर्धे वार रुर वी मार्केवा सर सर्वित्या धरावस्याउदायसायद्यास्य होत्त्राच्छ्यावाद्यो पर्व सुयाः सरादशुरावेशामशुर्यायायायहेवावशामविःसार्मायायाशुर्याथ्वा न्में अ वे अ मा शुर्अ स । धर श्रूर हैं।।

महिश्रासक्ष्यां अक्ष्यं के नित्ते क्ष्यं स्थानि क्ष्यं स्थानि स्

मान्या भी स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्

# प्रट.क्रेव.ग्री.क्रेया.श्रा

 भ्रान्त्र्वित्रम्भाग्वत्रम्भानश्चरमान्त्रे हेश्रामाग्रह्माश्याप्य प्रदेश प्रदे

या। विदः देव की केंग्रा हिसाय प्यव कर नि कें ते हों नि केंग्र हों नि केंग्रा हिसाय प्यव कर नि केंग्र हों नि केंग्र होंग्र हों नि केंग्र होंग्र होंग्

महिश्वासंहि । मन्नासंन्यश्वाके महिश्वासंहित्या स्वाके स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्य

भ्रान्ताः विद्याः त्रिक्षेत्रः विद्याः विद्या

# गिवे से प्रश्निमा स्रा

यहिमान्नेन स्थान्य स्

च्याः पुत्री | न्युत्यः वार्षिः वृत्रः भ्रीः वार्षः युत्रः विष्यः व्याः विष्यः व्याः विष्यः व्याः विष्यः व्याः विष्यः व्याः विष्यः व्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः

त्त्रा ।

त्रा विकालक्ष्म न्या विकालिया विकालक्ष्म विकालक्षम विकालक्ष्म विकालक्ष्म विकालक्ष्म विकालक्ष्म विकालक्ष्म विकालक्ष्म विकालक्ष्म विकालक्षम विकालक्ष्म विकालक्षम विकालक

नालुर र्नेन त्यानाहे अत्यथा प्यत्यनानी अळव हे रही नार हु अव स्वात्यन कु त्या हि स्वाय्य स्वाय स्वाय्य स्वाय्य स्वाय स्वाय्य स्वाय स्वय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वय स्वाय स्वय स्वय स् स्यान्त्र्यान्त्री।

ब्रियान्त्र्यान्त्री।

ब्रियान्त्र्यान्त्रीन्त्रान्त्रीत्र्यान्त्रान्त्रीत्र्यान्त्रम्यान्त्रीत्र्यान्त्रम्यान्त्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्यम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यत्यम्यम्यत्यम्यस्यम्यत्यम्यस्

यश्चरात्ताःश्चर्यवद्दार्ट्यावाविरात्वीर्यव्येर्यवःश्चर्याःश्चर्यःश्चर्यःश्चर्यः व्यव्यःश्चर्यः व्यव्यः स्थाविर्यं व्यव्यः स्थाविष्यः स्याविष्यः स्थाविष्यः स्याविष्यः स्याविष्यः स्याविष्यः स्याविष्यः स्याविष्यः स्थाविष्यः स्याविष्यः स्य

रायाञ्चरानायदेनशायायायापानात्रासार्चानार्वेद्रशास्त्राह्मेन्यासारायगुरा र्रे विरामशुर्यायाययात्रापयायेत्रायाद्वापयायेत्रायात्रीययायात्रीया नःवरेनसःमःक्षुत्रःक्षेत्रःषुत्रावःत्रःसः र्वे नः व्याद्यान्यः स्याद्यान्यः विष् ययायाया गुरानवे भ्रिमार्से । विशार्से । नया सूमा ने महिशायया प्रमायग्रीमा नदे के अ ग्री अ १३ सरा ५८ सा १३ सरा न १ प्या १ स्था १ से १ से १ से १ वेशःश्री । यदःद्याः धर्यः श्रमः वे स्व अर्वेदः वेशः द्याशः याश्रमः ग्रीः यवि सेदः धरःह्व:रु:श्वाप्रशास्त्ररायदेवराव:दवो:यर्व श्वाप्रयरायग्वरःर्दे ।सूरः नम्नन्नः चुःने छेन् यार्वी नमः चुःन्वी सार्यसाने न सेवे वर्वी नामाना पर विराधवराववर्गार्श्यायाधिराधेराधेर् भी सूर्वयाष्ट्रस्याप्रस्य नशःश्रुशःवर्द्। विभाना नशःमरःवश्रुरःनशःश्रुरःवःनगेःवर्वः श्रुवाः सर्दे। नेशः भूरः वः भूरः होरः ने । भूरः नः माववः हो शः भूरः वः हेशः हुशः शें। । हेशः चुर्याचीर्यास्त्रम् रत्रेर्याच्यास्य स्त्रित्वेर्यास्त्री वित्राचित्रामान्द्रान्ते स्त्रुव्यावा श्चर्तिक श्वराद्या श्वर्षात्र विश्वर्षात्र विश्वर्य विश्वर्षात्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्षात्र विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वयत्र विश्वर्य विश्वयत्य विश्वयत्य विष्य विश्वयत्य विष्ययत्य विश्वयत्य विष्ययत्य विश्वयत्य विष्ययत्य विष्ययत्य विष्ययत षदःयगःगवदःरूटः नदेः नन् । नुरुषः द्रशः न्रेशः गविदेः सूँगः । प्रशः नन्द्रायं भेत्राया व्यान्या सुर्याया ध्रयार्श्वे साध्यास्य सास्याया स्थार ळ'दश'म्बुरश'रा'धेद'र्दे। । माय'हे निवेश'र्देश'ब्रेर'न'र्रा बरा बुर'बर' ग्री भ्री र किंया न सूत्र त हे या ग्रुया धेता या ने महिया ग्रीया सूरा न सूरा ग्रेत नुमाशुरश्यान्दर्वायायायाः विन्ता ने माहिशाह्य न्वराक्षे निर्मुरायने नशा यश्रम्भरत्ने नश्राभी भूताया वित्ता व

यहिरामाह्य मदेश्यळवाहेन्या देयायामा वर्षा स्रमायसामा यर अर्घर देवा राजे देवा रेवा रायर अर्घर रेवा राजे वा विकास सराद्युरर्रे । सूरासर्वेटर्वेसर्वेग्राग्रुसर्पेट्राय्ट्राह्ट्रायंद्रे सूर्यात्रीरावदेगाविराधेरायां केतर्ते । देशका अर्वेरावादरार्वेशया वहेरा नवित्र-तु-तिर्भानश्चर-हे-सर्वेद-र्दे-र्वेश-र्रो-विश्वाचेर-त्-त्नो त्त्त्र-सूना सरप्रकृरमें । पायाने पावि पावव प्रमाने मिन से प्राप्त वि से प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्र वर् ने यानश्चर हे श्चानश्चयायि देवारे हिराधिर र वे वा ग्वर शे ह्वा यर श्चानवे कु हे द से व त्या वर् ने या सुरान स्था हो द व देव से द ग्या ह्व र्अं वर्ष्यूरहे। यदेव ह्व वे वर्षे क्षर्र वे शर्र विश्व वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व नित्रायाम्बर्गित्रायाः हित्रा विकामास्त्रमा मविःसेन्यित्नो वर्त्तः स्वायास्यस्य स्यायर वर्षे ।

#### नगार्थं अधि ख्रमाः आ

यिष्ठेश्रायाययार्वेश्रायायाष्ट्रेश्रायश्री श्री देवाया सेटायावे याश्रीश वर् ग्विन्भी का भेन पार्टा अध्वाप्त अभूर पर्दे । क्रु अकंत भेंग्राय वर्टा या र्श्वेर्रायं सेटाव्यार्श्वेरा निटायाव्यायात्र सामित्र स्वीता सी या स्वाराया यक्षव केट दिया स्व दे। । यह र सुवा देव की निर्देश विव दिया स्व स्व वर्गुर्रानाः भूगाः पराशुन्रायाः प्रवीः श्रूराः कुस्रसायाः प्राप्ताः विसार्से ग्रासा पिर्याञ्चरयात्रयात्वरायरात्री यारावयायरेयाययायात्र्यात्रयात्रेयावरा गुःनःर्देनःग्रययान्ययाग्वनःर्देनःभेःग्रययान्ययान्यस्यदेःस्याम्य श्चर्यायदेवश्वर्वायद्वर्ष्यायर्व्यक्ष्यायर्व्यक्ष्याय्या देःष्यर्ह्यंषेत्रःश्चेःषरः न्यायमाने सेन में । यदि राद्ये है। वि र्चे उया यी माने एके प्राय्य प्राय्य प्राय्य प्राय्य प्राय्य प्राय्य प्र र्देर्स्यवेट्ट्रि । नगेःश्वेट्स्यः अद्वायदेश्यदेग्यवेट्ट्रि । विः कट्यः यरः र्श्वेर्पायविष्णायवे के या महेत्राया सर्वेरारे विया गुर्गाय हिताया से सा शुरानरासर्वेटारेवियानेरानाष्ट्रानुर्वे । देयानानिसेटाने। यदेयायसा राञ्चनारमराश्चेरित्रे विशार्देव नाययार्धे यार्ची नरा हो दाराधिवाया नना उत्रा वे देव प्रायय में सेव पर बुर की या विराधी । पावव की का पर सम्बद्धाराये प्रमे १५५५ म्या सम्बद्धारा सम्व

न्योः श्चित्रः व्याः वित्रः व

र्श्वेट्स्यायात्रवात्रेट्स्ये क्षेत्रयायात्रेट्स्य भूर्त्तायदेवयात्र श्वेयारेदि। वदी त्यावि हेवा श्रें अ से र शे देवा शहे। दे त्या वहेव स श्रें अ से प्येव बेर-स्रिन् वर्ने मदे न्वीर्यास ख्वास न क्रेन् मदे प्यव या नावव प्रिन् ग्राम्भेत्रायायाञ्चर् रहेशाञ्चायायायवे द्वेरा देवार्गे प्रायावेद्रायश ब्रॅंअ-सॅर-पाशुरशः ग्री-प्रॅंश-सॅऑर ब्रॉंश-सॅर-प्राची द्रशः स्रिं। प्रेः षराविद्दान्त्रभराय्याची द्वरात्र्यं चुर्यात्रा है से देशे । सुरावाप्त्र चुरे र्शेग्रस्भूर्यायदेवराष्ट्राध्यार्थेवा । क्रेश्य श्रूर्दी देपविद ग्नेग्रायायाद्वार्येययाग्रीयाद्वार्युटानाद्वा द्वीयद्वर्यान्चेतः नुरायार्श्वेद्यार्थे प्रेत्राययादे यादिया ग्रीया भूत्राया प्रेत्या स्था । नन्गानी अपन्यस्थाने : सूर्या से 'बेर्या नुप्ता व्या से नार्या निवास सूर्या ग्रीरामाव्य प्राञ्च रायदेवयाय हेया ग्रुया स्त्री । मावि से दारा दरा नमा उस ग्रे:ल्:नर्दे।

# नर्भे गुराग्री सूराना

यद्वित्राक्षःश्वित्रः स्ट्रित्रः स्ट्रः स्ट्रित्रः स्ट्

महिरायायाविरायया नर्गे यार्ने नर्ने सुरामी सुरायायी। न्वायदेरावस्थाने वस्त्रायायान्वे यायार्थे नाते। यदे न्वा क्रेत्राव क्रें वाया यार्ह्मेश्वासन्दर्भ नर्ह्मेनाःस्वासस्दर्भासान्दरक्षेनाःस्वासास्वरान्दर्भ दे न्वायी देव प्रथय वर विष्वते छेट धेव प्रदेश हो केवा देव या विष हैंग्रायर होर्य क्रिंत हो शुत्र सेंट ना श्रें र नदे सक्त हेर्। नश्चन पर नुनिदे बुद सेंद्रा सबर बुग में बुद सेंद्र निद्र दिन है स सु समुद्र विश्वास्य निर्मित्र याविर विंग यार समुद्र द रे हो द रे रे रे रे रे रे नर्ज्ञेग'मदेखंय'यया बनया ग्रीयानर्ज्ञेग'मद्भीमिन्से स्थित्वेद् क्ष्रनु ने हे अ शु नक्ष्मन मंदे रहा निवा खु अ हमा मी हिमा हो नहा । शुःचदेःग्वरुभः भूवरु। द्रा गृहेरु।ग्रामः शुरारा दे हेरु। सु स शुः स शुना ग्रामः द सन्नुवन्त्राष्ट्रिस्याः शुवन्द्रचिवन्यान्द्रम्यादः र्ह्वे स्यान्द्रम्यः स्वान्यदेशः र्द्धवारीयाभेगिर्देश्वराहेयास्यान्त्र्वा गरा गैर्भास मुद्रादे निर्मे मारादे रहें वा वासाय मनर्भा ग्रीर्भास मुद्रा मारावा समुद्राद्रा र्दर्द्रा भी श्रे राजाद्दर्द्र अपाविदे सूदा न श्रे राजा अश्रुद्दा है सूर सब्दाना न्वेन वेन प्राप्त नित्र है साम्बन्ध सम्प्राप्त है सार्धे मारा है सार्थ मारा है सार्थ मारा से साम स्राप्त नुदे हे अ नक्षुन कुर नु न्या क्षेया भाषी वा भी वा साम हे या निक्ष न क्षुन गुर याद्या. र्. क्यू र. रादे. ब्री र. रार्डे या रादे. हे श. श्रा वर्जे . या राद्ये या राद्

वःहेशनश्चनःग्रदःश्चिरःववेःश्वदःववेः वेदःयःयेः धेवःयशःवदःवःददः। नर्ह्मिनायास्य स्वरास्त्रेयाये के हे साम्स्रुवाद्यादिस्याविदे सूरावाद्येदारा र्रे धिव प्रशासकुर्यापर सम्बन्ति। ते माना हे या शु वर्ते नान्दा वर्ता ना अर्द्ध्दर्भः मदिः देवा : धरः हुर्दे : बेर्थः द्वा । व्हेवा : धरः विद्वा : धरः विद्वा : धरः विद्वा : धरः विद्वा हेशःशुःनक्षुनःपरेः रदः निवेदः धदः गठिगः विंदि । निर्क्षेगः पः श्रे रः नरः गुरायायात्रे सुरावाणारार्श्वे रावरागुरायात्रे रार्दे । अवराव्यापरागुराया यात्री नियो पर्त्राञ्चया साले सान् प्रति सम्मान् मान्य स्वाप्तर स्वापत्र स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वापत्र स्वापत्य स्वापत्र स् नन्। अद्युत्रप्रन्त्रभूत्रप्रायान्त्रीं भाषाके व्यापित्रके वा नभूनायदे वावे वर्रे द्रवा नर्ज्जेवा साद्र वर्जेवा नर्ज्जेवा नर्ज्जेवा स्कृता सर्ज्ज साद्र मा नर्ज्जेवा यदे ग्राम्याद्दे स्रोत् या स्रुत्य प्राप्त दे स्रोत् त्र त्यू र वर्षे वर्षे वर्षे स्रोत धेव दें। विंत्र नक्ष्म पदे गावे पदे प्राणी भूत्र शुः सुद नदे ग्रद्भ शुः नभ्रेट्रा है है। विरहेगार्श्वे रायदेर्श्वे रायदेरहेशा हुशायाहेग विद्याया राश्चिते र्वेटर्भुंसर्यमिका देखेत्वरूर्णेनरर्भुंसर्यमिक्रमिक्र नम्ना नर्भेगारादाःस्रवदायाः सुरानाः से नर्भे नर्भे न देशा ने नाया नरःश्वें अरे र्नारे रे नु अर्था न दुःग्वेग न श्चे र् देश बेर् वि वि देश नर र्श्वेसन्दर्गाभेद्रमञ्ज्ञात्रभावत्त्वात्रभेद्रावेस् स्टाख्यायायात्रभ्रवास्यः गवि वर्दे द्या मी भ्रवश्र श्र वर्भे शुर श्री सूर व स्थान भ्री द्रा प्य वर्भे । गुर्ग्यी सूर्या इसस्य वर्द्विमा हेरासे महिराना स्राम्य मुरामा धेराया नव्ययान्युं यार्यम्यायार्यम्यायात्रम् न्याय्यायात्रम् ने स्त्राप्त्रम् ने स्त्रम्

थर। द्वेग्नम् न्वो यन्त्राक्ष्याः यानि से नि न्वा नर्ह्वेषाः प्रमानि स्वा वि स्व वि स् धेवन्यनेवे भ्रेन्न क्रिंग्य हे स्रेन् नेन्य स्ट्रिन्य स् वेशमाशुरमा नक्ष्मनामदेगावे पर्ने न्यामी स्नम्य शुन्र सें र हैं सामा दस व्रक्ष्यानुष्यानभ्रेत्राद्वा देवे नर्भे नाय्यानु रायायाचे रायायायात्वार्या श्री दिन्त्रनक्ष्रनःसदेःगिवे पद्भे द्या मी क्ष्रन्य शुन्न र क्ष्र्य प्रमुद्द नरः वया ने महिंद्र तरे भ्रांत येग्या गया है से महिंद्र त है या स क्रिस में द्रा प्रमान वेशम्बर्धरश्रम्ये ध्रिम्वे त्रा श्रुव्ये मेर्ने देवे वर्षे वरमे वर्षे वर्ये वर्षे वर निरनेदेनेदिन्यायायात्राम्यात्राम्यात्राम्यात् वर्देन्याम्युयायायार्देग्याया यश्सूर्भेर्र्यासुर्श्वर्य निर्व इसायग्रेर्गेया वर्हेर्यः गुरुयायानुयायान्ये महिंदान्दियान्विदेत्याधेन्यदे सुराद्यो वर्त्रःभ्रमाः सरावर्ष्यः र्रे विसावर्ष्यः मी देवे न निराधाः स्टूरानसाधीः मी युगानवमा यद्यस्य मुरामी र्स्ने स्री स्रिम्स स्री । दे स्र से व स्मर नरःश्वें स्राप्तस्ये तत्त्राम् स्याप्तर्मा निर्माण्या न नवे हो न स से हिन प्येत हो। न्या हो स मान्त्र हो हैं स स महिमा हु हा स स दे मुर्देशिवित्यासुमियायासे दिन्देश्वेयाम्यास्य स्वाया म्याने नरःश्रेंस्यनिद्यर्भन्या तृत्रम् पह्नायानेस्य निर्मान्यः भी त्रे त्रमास्य नसूत्र प्रस्त न व्यस्य हे निर्द्वी न न न मिला स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व यन्त्रामि दिवान्दर्भः रेवाप्यराधेवायर रेवायर तुरे वेशावव्यशावर्षे विश्वाश्वर्षः स्वा ।

ब्राह्मण्याः स्वा ।

व्राह्मण्याः स्वा ।

ब्राह्मण्याः स्व ।

व्राह्मण्याः स्वा ।

व्राह्मण्याः स्व ।

व्राह्

नेश्वात्त्रस्तान्त्रेत्राचेत्र्याते न्यात्राच् गर्हेर-नदे के धेव के । विक्रियानव्ययम् न के दिस्य विकास विक्रिया विकास व हेश ग्रुश धेव है। कैंवा येना नव्यय है न क्रिंश ग्रुट से वहिंद है श गुरुकित्र, इस्यायर प्रवित्र हेस्र द्रा सदे से बर मी हे मूरा येग्यायर नर्झे न द से महिंद द हे या हुया से विया दिन यह या हिंदा है या हुया शुःचन्त्र-प्रान्दा इत्यर्षा वर्षेषाचायाः श्रें सार्वेर-प्रश्नुतायशायदे हेशः तुरुष्युन्यये धेरःर्रे । श्रियः येरः नश्राप्यः वित्रायाः वितः है। हैगानसर्ज्यान्यस्यास्यस्यास्यस्यस्यस्यस्य सळवंकिन्यर्यस्वकि। नभून्यान्यस्वर्यान्यस्वर्यान्यस्वर्यान्यस्वर् नेदेर्दे लेश नक्ष्म प्रदेश विश्व हैश सेदे क्षम्य श्री नक्षेत्र क्षेत्र स्राध्य स्रोते । त्राग्री पह्राप्त श्रें अर्थे र देवा राज्य या वर्षा दे श्रेव कर श्रें अर्थे सळ्य. हेर. सर. यक्षेत्र. सह. ही र हो मेरी रेया राज्य सह. यो प्राप्त सह. अन्यान्ते निर्वाक्षेत्रा भी निर्वास मिन्या मिन्या मिन्या स्था से स्था सुर से स गर्हेट नश्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्थ के स्वर्ध स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स

यर के अ भ्रे न पे त पर ने अ प्र अ ने वे के ते भ्रें अ में र न शुर अ र्शे ने अ न्दा ख्राचीया ने पासूदान हेरावशूर वे वा न्वे क्वेट वीया हुट बन है र्यसः ५, ५ मो १५५ व स्थान हो । निष्ठे । निष्ठे में मुख्य न माहो ५ व । वस्र स्थान माहि । हेशः तुशः शुः वर्गुः स्री । द्रवीः श्चेरः वीशः चत्रश्रशः ने सर्श्वेर चार्ने वा वि दे । वार्ने रः वःयेग्रथा गयःहेः भैः गहिंदः वःहेशः सः श्रें अः संद्युः सः देशुः सः देशः ग्रें दशः निदा देवे देवा इसत्रेगा यथा यदा वा यो के या यो अपवस्था हे हिर नर्ह्मेषायात्राक्षे विदेश्यात्राहेश्यायार्ह्मेश्चार्यस्य विद्यात्राह्मेष्ट्रविद्यात्र्यात्र्य नर्भे न यस प्रत्यात्र स्व दिस्य मिलेर प्रमुर निये में मार बमा में साम भी साम भी साम भी साम भी साम भी साम भी साम वै। न्नो वन्त्र श्री अ नर्झे न व वह्ना म हेन धेन प्र अ र्झे र न धेन प्र र ध्रेर्वेशः श्रें अर्थे प्रेत्रं प्रेत्रं कु अळव ५८० वर्षे प्रेत्रं विद्यान वह्रमान्यावदे दे से महिंदानवे नद्या हेट ग्री सावह्या यानसा न्या सुदाना लेव दें वेश दर्ग नय स्मा नवस्य न दें दे दें या रें प्यर न स्मारी स्था वर्यायः है। स्वाः अदेः वित्राः शुः विविष्या रादेः स्वाः सः वः स्वेः प्यतः विश्वः प्यतः मदेः ध्रेरः र्रे । प्यरः ने 'नवा शे 'ववाय' नवे 'श्रुव होना वारः ववा 'नरः नवो 'वन्तर ग्री नव्ययान्य निष्ठा प्रियाप्य निष्ठा प्रमान्य क्ष्य । प्रमान क्ष्य । नव्ययः नर्सेदिः देव दे द्वो प्रत्व श्रीयः वादः ववा नर्सेयः दयः देयः क्षेत्रः मीर्याय क्रिया प्राप्ते प्राप्ते स्थित है सात्रा विषय सात्रे प्राप्ते प्राप्ते स्थान वर्देर-द्रमो वर्त्तर्ः अः शुर्र-धवे द्रमो श्चित्रक्ष्यः अः अद्धृत्यः यः श्चित्रः प्रथः

गडुग्रास्य स्व द्धं व क्लिंग सर हो द स धिव सर देवा सर हो दें वे स दर। इसर्तृगायम् गटावनामी क्षेत्रामी साम बसमा हे हिराम ह्रिया साम बेसा र्शेवार्यायाशुर्यायवे धेरावार्शेवायात्रे वर्ज्जेवायात्रेयाश्वरायात्रेयाशुरा यार-८८-१८५-१८ हो तार्था या अपने अपने अपने स्वाप्त प्रति । या अपने स्वाप्त स्वापति । या अपने स्वापति । या अपन नर्हेन्यन्वान्द्रव्हर्वे ।वाद्यायद्वान्द्रयः स्टायव्यव्यन्ति विक्रायः वर्षेत्रः रायायम् हे सूरायम् न क्रिंगामासूरामये हो नामें धिवामासूरा यहे न्वें अप्यानान वे वा वा वें व्यान ने वा वें के मान्यो वन्त्र व्याव वा वा विवास व यश्राचित्र'राश्रानर्ह्हेग्'रादे व्रवश्राचेत्र की नहीं नहीं ग्राप्त देश होत्र राश्रास्त्र प्र बर्द्रान्यते हो द्रान्य से से का सूर्य स्वर्थ के विषय । सूर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर् होत्रयार्थेरार्वे निवेशकेत्रधेवार्वे ।

र्श्वेर्रानिः हेर्राने विश्वास्था स्वित्र हिं। । पार्शिया निर्देश के पारे सुरानि हेर्रा स्वित्र स्वित्र स्वित्र धेवावा ने त्याक्षेत्राची क न्वरान् सार्थिन प्रकाने क्रम्य ग्राम् स्ट्राम्य प्रमान यदे हेर्य रें धेव व्या वे वा रहेत् हेंग यर हेर्य ये या रें या रें या रें क्रिंयायात्रयार्ट्रेवायाग्रीप्यराग्री क्रिंवागी भ्रद्गार्थ प्यायनुष्ठा कालयाद्वार रें ने दें न हो ने जा का का के ने के क्रॅंशरुम् सूरानामान्याचे ने नामान्याचे स्ट्रानी सूरानदे मेन्द्रा शुर्रा राष्ट्रे के वा यो अन्य के वा के ना क्रिया यादात्याञ्चद्रात्यायाचे या त्या सुदाया त्युदाय स्त्यु स्वति ञ्चदा ञ्चदा स्व मी। कःनुसारे रे त्यापर साधिव इत्यारे रे त्यापर सेव हैं। दे पर पार्शेव न्रहेर्नाहेश्यायायान्ने पर्वायन्त्रेर्प्या नेत्रावित्रहेश्या प्राप्ति । ब्रिंट्स-निवा-डेस-सदे-क्षेवा-वी-विंट्स-सु-क्षेवा-वाव्य-इसस्य-दर्स-निट्य देवे के सम्मान्य सुरम्य मुद्रम्य देव द्रायी व के के मानवा के सम्मान धेर्-र्रे ।दें त्य्यान्हें दाया इस्या ग्राट हें गाया गरेग हेट पेत दसा ने ता न्हेराक्षात्रानर्क्षेणायदेग्न्रस्थाययान्द्रिंग्याम्युयार्थे कें याउद्य र्द्धेना'रा'म'न्द्र-प्र'हेन'धेव'ग्री'नाडेना'सेव'हे। धर'न्द्र-प्यर'र्न्,नक्क्राय' र्डेबायदे धुरर्दे।

नेश्वन्तुर्यंत्रः वित्राचित्रः वित्राची वित्राची

यहूँ न्यायवारे से या श्रुन्यारे से स्वयुर्वे व्याया विषया श्री व्यव्या श्री विषया श्री या विषया य

गहेशमंदी नर्ह्मिगमंदेर्गमंगिः भूतशस्य सुरूर नरे रावश्रूर लेखा <u>न्होत्रः सुः तुः यः वह्नाः वेदः क्रें सः सरः होतः यदेः क्रें रः नः हेतः येदः स्थाः क्षेयः </u> रॅर-व्युर-र्रे ।वह्यायने र्राहे क्षुन्य धेव वे व ने पर र्राहे नहस्रयान्य हार् क्षेत्राचित्र क्षेत्र निर्मा निर्मेत्र निर्म कर् हैं अयर होर्यं रहा वव्ययः वर्षे दे में र रेवाद्यावहें र या विश्व मायासी महिंदानिय मानस्था उद्गाय हुमा मायी कर्ते। विस्त हिंसा सुक वर्चेत्रप्रवेर्नोः श्रॅर्व्यक्षुर्याया स्वास्य स्वास्य प्रवेशाय वर्षे वेशःश्रॅग्राशःग्रेशःश्रुरः नः न्दा नगवः र्ह्वे स्थः नदे नवे नवे स्क्रिंदः से द्वारः ह्वारः वर्त्रायसावर्षे विसार्सेग्रासाग्रीसाञ्चरायात्रे श्चेरायाचे दे श्चेराया धितायसा हेशः तुरुष्धेव मी श्रें अर्थे सेव हो देवे के सर्देव वेव दर श्रेया पवे नश्या यः १४१ कुर नदे भ्रेम विस्र सुद दिवेद पदे देव दी विस्र प्र स दूर पर होर्याधेवर्ते। १रेपवेवर्ता नगयक्तिं सेप्तरेप्तरेप्तरे क्रिंट्य होट्य इत यः अः तुरुष्यरः निर्देतः यरः तुः नः स्रेतः प्रेतः तुः तुः निर्देशे क्षेत्रः । सः सः तुरुष्यः यरः निर्देतः यरः तुः नः स्रोतः प्रेतः प्रेतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स्रोतः स

नःधेवःमश्रेशः ग्रुशःधेवः ग्रीः श्रेयः सेवः है। देवे के सर्देवः बेवः दरः श्रेयाः यदे नमस्य प्रास्त्र स्कूर नदे से म्रा से र इत सी रे में निर ने से र न है । सूर्यिः देश्वास्त्रिः विश्वास्त्रिः वर्षाः सूर्ये वर्षाः वर्षाः स्त्रास्त्रे द्राप्तः स्त्रास्त्रे स्त्रास्त्र ५८.५४.५८.व.च.५८.चूर्यायायाङ्ग्री.संद्री.संद्री.संदर्भात्रीट.च.लुव.चूर्या र्ह्में भे निर्मा निर्मा है निर्मा नि क्षेताः भूति कवाश्वाश्वाश्वाश्वाश्वाश्वी । देवे मुखारा वे देवे स्टाप्त विवा र्वे। ।ग्राम्याग्राम्याने व्याने प्याने के निर्माय क्रिक्त वित्र क्षा हे मुर्अप्यम् से फ़्र्य विदायर्गे मायम हो दार्य विश्व स्थि। यासुस्र यादी। सुद वर्चेत्रसदे द्रेने र्सेट्स्कूर्यस्य स्थान्य वर्गदर्से से वर्ने वदे द्रेने र्श्वेरःत्रेरःइवः अञ्चर्यादे व्यावे। वव्ययाने वर्श्वेरवायाया वर्श्वेषा राः धूर्यान क्रें विदान क्रें वा पर स्था गुर क्षे गुर्या गुर स्था पर स्था भी स्था भी स्था भी स्था भी स्था भी स त्रेम्मरा नर्भे निवेश ग्रुःन ग्रे ज्ञा पुरा ग्रुश ग्रुश प्रशास्य प्रशास विगाः हुः सः वदः ग्रीः चव्यसः हेः चर्झें चः पदः से । ग्रुः चरः ने सः धरः ग्रुरें वे सः ८८। वि.चरा वर्श्वे.चर.वर्ग्चेत्या द्वे.हे.वर्श्वे.चर.श्चे.वर्ग्ची वर्गादासूयाया नर्भे नर्भे नुदे । नर्भे न परक्षायायया भे परक्षाया नगदासूयाना भे वळग्राश्चर्रावेशःग्रह्म। न्त्रेवःत्रेन्द्रायःश्चर्याश्चरः नवेदेःनश्चनःपदेः गविदेः धुयः र् कुरः धदे ग्वारः बवा रे र् वा यः क्षेत्रा यह अः से स्नू दः धरा नव्ययान्द्रा गर्ययानवेदेख्याचीयासे नर्से नर्से गुःसे देयानर नर्झें नर्गे अर्धते हिन्दों । इसावहेन्त्। नगे र्सेन्नणहिन् ग्रेअन्वस्य यः प्रत्याश्च्यायः प्रत्या विष्यः योश्चरः यो व्याविष्यः याश्वरः याश्व

## न्चेन चेन परे ख्राया या

यत्यमायानि यवि या र्रे राम स्थानि स्था

यन्नाक्षेन् यात्र्वेन् खेरिन् चेन् चेन् चेन् यात्र्वेन् खेन्य यात्र्वे । यात्र्वेन् खेर्या यात्र्वेन् खेर्या यात्र्वेन् खेर्या वित्र क्षेत्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र कष्ते क्षेत्र क्

## नेदेःहेशःशुःस्रिम्यारादेःध्रमाःस्र

यहिश्वास्ति विश्वास्त्र हिंग्यास्त्र विश्वास्त्र हिंदिर्दा यहिर्देव विश्वास्त्र हिंदिर्यास्त्र हिंदिर्यास्त हिंदिर्यास्त्र हिंदिर्यास्त्र हिंदिर्यास्त हिंदिर्य हिंदिर्य हिंदिर्यास्त हिंदिर्य हिंदिर्य हिंदिर्यास्त हिंदिर्यास्त हिंदिर्य हिंदिर्य

सन्नतः सन्नित्तः वर्ष्ण्यः स्त्रित्तः वर्ष्ण्यः स्त्रित्तः स्त्रित्तः स्त्रित्तः स्त्रित्तः स्त्रितः स्त्रितः सन्ति । सन्नितः स्त्रितः सन्ति । सन्नितः सन्ति । सन्ति

## विसार्यन पर्वेन मदे स्वास्य

यहेश्वास्त्री । क्रि.सक्त्रीस्त्रेच्याः यहेश्वास्त्राचित्राः विश्वास्त्रीयः स्त्रेच्याः यहेश्वास्त्राचित्रः स्त्रेच्याः स्त्रेच्यः स्त्रेच्याः स्त्रेच्यः स्त्रेच्याः स्त्रेच्यः स्त्र

क्रिंयाचा अवरः व्याप्ते हिन्याम् सुयापदे अवदाययादन्यापदे । यात्रः र्देव वे। गर भे गोर्ने र व हिं स शुव पहीव परि र गो पर्व भूगा सर प्रशूर वेता नगे र्सेन्स्र स्रिन्स्य होन्स्येन्गे प्रमुक्ष या विवासये नश्यामा वर्त्रयान्द्रा वे स्ट्रिं न्या है स्वान्द्र वह वा साम दे न्या वी साम वी वर्वाने वर्वा वर्भेर वह तक हो कारे किर विवास से विस हवरे से व हेन्से महिंद्य न्वो प्रत्य स्वास्य प्रमा विषेता सुराय परिवास मा सक्त पर्न पर्मा मेरा हो र पर्मे डेगाने से तबन्ते। खरानसून नर्से शावस्था उन्तर्था नसून या उत्तर्था गुः वरःचल्रःग्रेःचल्रायायल्रायल्राये हिरालेशः वेरा वार्षेपायञ्चरा व्याग्यर वियासुन प्रवित पार्यों से पार्टे पायापान्य प्रवृत वेर वेर व या ग्राव्यान्यान्ययान् स्ट्राट्ट्रायत्यान् सारे सामान्यू माने सामान्यान्य । ब्रिस-सुत-वर्चित-पदे-द्रमो-वर्त्त-ख्रमा-सर्वे।

## नगदर्ह्याः से निर्माति स्त्रा स्त्रा

महिश्यमःश्वेद्द्रायः यश्च स्वाद्ध्यः यात्रिश्च श्वे द्वि द्वर्णः यात्रिश्च स्वाद्धः यात्रः यात्रः यात्रः यात्र द्वि स्वाद्धः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः यात्रः व्वरः यात्रः व्वरः यात्रः व्वरः यात्रः वि स्वरः यात्रः यात्यः यात्रः स्ति। वर्षः स्वर्थः स्वरं । वर्षः स्वरं स्वरं

लब्दायायायावित्यम् मिन्नायायावित्यम् मिन्नायायावित्यम् मिन्नाय्यस्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस्

नश्चनः संग्वितः गिर्धे अन्तः । द्र्योः श्चितः द्र्यायः स्थितः स्यातः स्थितः स्

वर्देरःश्रें वर्द्धा धुर्द्धा सार्वे अया विश्व वर्ष्ट्य वर्षे द्व

सद्धि । सान्ध्रान्त्र्वा स्त्रान्त्र्वा स्त्रान्त्र्वा स्त्रान्त्र्वा । क्ष्रान्त्रान्त्र्वा । स्त्रान्त्र्वा । स्त्रान्त्वा । स्त्रान्त्र्वा । स्त्रान्त्र्वा

र्याहेश्वराचे ध्रुवाः स्ट्रान्त्र होत्र होत्र स्ट्रान्त्र स्ट्र स्ट्रान्त्र स्ट्रान्त्र स्ट्रान्त्र स्ट्रान्त्र स्ट्रान्त्र स